जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 36 संख्याः 232 प्रभात अजमेर, बुधवार 1 अप्रैल, 2026 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

बार-बार पश्चिम एशिया में अपने सैन्य ठिकानों पर "पिन-पाइन्ट" बमबारी से अमेरिका खीजा

अपने यूरोपीय "मित्रों" पर ट्रंप ने खीज निकाली और उन्हें चेतावनी दी या तो वे लोग इस युद्ध में सीधे (डॉयरेक्ट) जुड़े वरना. . . . .

- ट्रंप ने कहा, यूरोपीय देश अपना "ऑयल" स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ के रास्ते लाने की व्यवस्था खुद करें, अमेरिका इस मामले में उनकी मदद के लिए आयेगा, जबकि यूरोपीय देशों ने भी खाड़ी युद्ध में अमेरिका की मदद नहीं की है या ये लोग अमेरिका से "ऑयल" खरीद सकते हैं। अमेरिका के पास बहुत "ऑयल" है।
- ट्रंप की यूरोपीय देशों से खीज के कई कारण है। उदाहरण के लिए इटली ने खाड़ी युद्ध में बमबारी कर लौट रहे अमेरिकी लड़ाकू विमानों को इटली की भूमि पर "लैण्ड" करने की इजाज़त नहीं दी, हालांकि युद्ध से पहले से ही इटली व अमेरिका के बीच इस बारे में पुराना अनुबंध व समझौता है।
- ट्रंप इस बात से भी परेशान हैं कि कोई न कोई ईरान की मदद कर रहा है, अमेरिकी सेना के ठिकानों व अन्य सैन्य गतिविधियों की जानकारी ईरान तक पहुँच रही है, जिससे इतनी "पिन-पाइन्ट" बमबारी हो रही है।
- अमेरिका के युद्ध संबंधी मामलों के मंत्री पीट हेगसेथ ने पेंटागन की प्रेस बीफिंग में गुस्से भरे शब्दों में कहा, अमेरिका को पूरी जानकारी है, रूस व चीन की इस युद्ध में क्या भूमिका है।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 मार्च। पश्चिम एशिया में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर बढ़ते ईरानी हमलों के सामने खुद को लगातार असहाय महसूस करते हुए, राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने एक बार फिर यूरोपीय देशों से ईरान के खिलाफ अभियानों में सीधे शामिल होने का आग्रह किया।

ट्रंप ने यूनाइटेड किंगडम और अन्य देशों से कहा कि वे होर्मुज़ से अपना तेल खुद जाकर लें। उन्होंने चेतावनी दी कि अमेरिका उन्हें पहले की तरह मदद नहीं करेगा। इसके विकल्प के तौर पर, उन्होंने सुझाव दिया कि वे अपनी तेल ज़रूरतें अमेरिका से पूरी करें, जहाँ पर्याप्त भंडार उपलब्ध है।

इटली ने ईरान में लड़ाकू अभियानों के लिए जा रहे अमेरिकी विमानों को अपने सैगोनेला एयरबेस पर उतरने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। यह अनुमति देने से उस समय इनकार किया गया, जब कुछ अमेरिकी विमान अपने घरेलू अड्डों से उड़ान भरकर ईरान क्षेत्र की ओर जा रहे थे। इटली ने यह कहते हुए अनुमति देने से इनकार किया कि संसद से परामर्श के लिए पर्याप्त समय नहीं था।

यह एक बड़ा घटनाक्रम है, क्योंकि पहले से मौजूद समझौते के तहत, अमेरिकी विमानों को परिचालन क्षेत्रों की ओर जाते समय इटली में उतरने की अनुमति थी। लेकिन इस बार इनकार के लिए कुछ विशेष कारण बताए गए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सोनिया गांधी स्वस्थ, गंगाराम अस्पताल से छुट्टी मिली

नई दिल्ली, 31 मार्च। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी को मंगलवार को सर गंगा राम अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। उन्हें 24 मार्च को बुखार होने के बाद सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सोनिया गांधी अब पूरी तरह स्वस्थ हैं। डॉक्टरों के अनुसार वे एक सिस्टमिक इन्फेक्शन के लिए एंटीबायोटिक्स दी गई।

सर गंगा राम अस्पताल के चेयरमैन डॉ. अजय स्वरूप के अनुसार

- गत 24 मार्च की रात को बुखार के कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

सोनिया गांधी को 24 मार्च की रात 10:22 बजे बुखार के चलते सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया था। डॉ. डीएस राणा, डॉ. एस. नंदी और डॉ. अरूप बसु की देखरेख में उन्हें एक सिस्टमिक इन्फेक्शन के लिए एंटीबायोटिक्स से इलाज दिया गया और उन्होंने इलाज पर अच्छी प्रतिक्रिया दी। अब वे ठीक हो चुकी हैं और आज सुबह उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है, ताकि घर पर उनका आगे का इलाज और फॉलो-अप हो सके।

'अमेरिका व्यर्थ ही ऐसे युद्ध में लिप्त हुआ है, जो वो कभी जीत ही नहीं सकता'

अमेरिका के टॉप इकोनॉमिस्ट जैफरी सैक्स के खाड़ी युद्ध के विचार बड़े चौंकाने वाले, पर सटीक हैं

- जैफरी सैक्स यह भी कहते हैं कि सबसे बड़ी विवाद की बात है, जिस तरह से "टैक बिलिनियर" (टैक्नोलॉजी उद्योगों के अरबपति) मालिक, सरकार के प्रशासन पर भावी हो रहे है।
- जैफरी सैक्स ने हाल ही में प्र.मंत्री मोदी व राष्ट्रपति ट्रंप के बीच हो रही टेलीफोनिक बातचीत में एलन मस्क के भागीदार होने की भी आलोचना की।
- उन्होंने कहा, इस अपवित्र दोस्ती में, "जवाबदेही" (एकाउन्टेबिलीटी) और प्रजातंत्रीय वैधानिकता की बलि चढ़ती है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 मार्च। शीर्ष अमेरिकी अर्थशास्त्री जेफ्री सैक्स का पश्चिम एशिया संघर्ष पर हस्तक्षेप अपनी भाषा के कारण नहीं, बल्कि अपने आरोपों की व्यापकता के कारण अधिक उल्लेखनीय है। यह भू-राजनीति, अमेरिकी शक्ति और स्वयं राज्य सत्ता के बदलते स्वरूप तक को कठघरे में खड़ा करता है।

वर्तमान संकट को "दुनिया भर के "लूज़र्स" (पराजितों) का युद्ध" बताते हुए, सैक्स मूलतः यह तर्क दे रहे हैं कि इस उभरते टकराव में कोई रणनीतिक विजेता नहीं है, सिर्फ दीर्घकालिक नुकसान के अलग-अलग स्तर हैं। उनका यह दृष्टिकोण क्षेत्रीय संघर्षों को शून्य-योग (ज़ीरो-सम) प्रतिस्पर्धा के रूप में देखने की पारंपरिक सोच को चुनौती देता है। इसके बजाय, वे इसके कई परिणाम देखते हैं, जैसे आर्थिक अव्यवस्था, ऊर्जा असुरक्षा, राजनीतिक अस्थिरता और अंतरराष्ट्रीय मानदंडों का लगातार क्षरण आदि। उनके अनुसार, जो देश सीधे तौर पर इसमें शामिल नहीं हैं, जैसे भारत, वे भी तेल की ऊँची कीमतों, बाधित व्यापार मार्गों और बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के कारण नुकसान उठाएँगे।

सऊदी अरब और यूएई जैसे खाड़ी देशों के लिए उनकी चेतावनी इसी व्यापक आकलन पर आधारित है। इन देशों ने पिछले दशक में खुद को स्थिरता, निवेश और तेल के बाद के आर्थिक परिवर्तन के केन्द्र के रूप में स्थापित करने की कोशिश की है, और ऐसे में एक पूर्ण क्षेत्रीय युद्ध में प्रवेश करना उनके लिए अत्यंत आत्म-विनाशकारी होगा। सैक्स द्वारा इस्तेमाल किया गया "तेज़ विनाश" शब्द तत्काल सैन्य हार की भविष्यवाणी से अधिक एक प्रणालीगत विघटन की चेतावनी है, जहाँ वित्तीय बाजार खत्म हो सकते हैं, बुनियादी ढाँचा निशाना बन सकता है और वर्षों में बनाए गए वैश्विक साझेदारी संबंध रातों-रात कमज़ोर पड़ सकते हैं।

लेकिन सैक्स यहीं नहीं रुकते, उन्होंने सबसे तीखी आलोचना का

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पाँच साल के अंतराल के बाद पहला बिज़नैस डैलिगेशन चीन दौरे पर

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री का एक प्रतिनिधिमंडल 29 मार्च से 4 अप्रैल तक चीन के दौरे पर है

- भारत और चीन के संबंध पूर्वी लद्दाख में हुए सैन्य टकराव के बाद काफी बिगड़ गए थे। वर्ष 2024 में ब्रिक्स समिट व 2025 में एससीओ समिट के दौरान प्र.मंत्री मोदी व चीन के प्रधानमंत्री शी जिनपिंग की वार्ता के बाद हालात सामान्य होने शुरु हुए थे।
- शंघाई के भारतीय महावाणिज्य दूतावास के काउन्सलेट जनरल प्रतीक माथुर ने प्रतिनिधिमंडल की चीन की प्रमुख कंपनियों और वित्तीय संस्थानों के साथ मीटिंग करवाई।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 मार्च। देश के उत्तरी हिमालयी पड़ोसी चीन के साथ संबंधों को सहज बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम उठाते हुए, भारतीय वाणिज्य मंडल का एक प्रतिनिधिमंडल इन दिनों चीन की यात्रा पर है, जहाँ वह चीन के अपने समकक्ष प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत कर रहा है। पिछले पाँच वर्षों के विराम के बाद यह इस तरह की पहली यात्रा है।

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) का एक प्रतिनिधिमंडल 29 मार्च से 4 अप्रैल तक शंघाई और चीन के जियांग्सू प्रांत के दौरे पर है, जो देश के सबसे बड़े औद्योगिक क्षेत्रों में शामिल हैं।

2020 में पूर्वी लद्दाख में हुए सैन्य गतिरोध के बाद पाँच वर्षों से अधिक समय तक चले ठहराव के उपरांत, पिछले वर्ष दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंध सामान्य होने के बाद, यह चीन जाने वाला पहला भारतीय व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूर्व टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस भाजपा में शामिल

नई दिल्ली, 31 मार्च। भारत के पूर्व टेनिस स्टार लिएंडर पेस मंगलवार को भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा मुख्यालय में केंद्रीय राज्य मंत्री सुकांता मजूमदार, केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू, सांसद अनिल बलूनी की मौजूदगी में लिएंडर पेस ने भाजपा की सदस्यता ली। पश्चिम बंगाल चुनाव से पहले भाजपा ने लिएंडर पेस को पार्टी में शामिल कराकर तृणमूल कांग्रेस को बड़ा झटका दे दिया है।

- केन्द्रीय मंत्री, भाजपा नेता सुकांता मजूमदार ने बताया कि पेस 19 वीं सदी के बांग्ला कवि व लेखक माइकल मधुसूदन दत्त के वंशज हैं।

इस मौके पर केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने लिएंडर पेस का स्वागत करते

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बीजू का अपमान "उडिया गौरव" का मुद्दा बन रहा है ओडिशा में

बीजू पटनायक पर भाजपा नेता निशिकांत दुबे की अपमानजनक टिप्पणी ने भाजपा को अटपटी स्थिति में डाला

- निशिकांत दुबे ने 27 मार्च को लोकसभा के बाहर कहा था कि 1962 के युद्ध में बीजू पटनायक ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू तथा अमेरिका व सीआईए के बीच कड़ी का काम किया था। दुबे के इस बयान पर भारी बवाल खड़ा हो गया।
- बीजू पटनायक को ओडिशा में राजनैतिक महानायक व उडिया गौरव का प्रतीक माना जाता है। बीजू जनता दल ने इस बयान पर भारी नाराज़गी व्यक्त की तथा आमतौर पर शांत रहने वाले नवीन पटनायक ने इस पर भारी गुस्सा जताया, यही नहीं ओडिशा की भाजपा सरकार ने भी दुबे के बयान को उनका निजी विचार बताया और उनके बयान की कड़ी आलोचना की।
- राजनैतिक विश्लेषकों का कहना है कि दुबे की टिप्पणी ओडिशा में "अंजैया इफैक्ट" ला सकती है। ज्ञातव्य है कि जब राजीव गांधी प्रधानमंत्री थे, तब उन्होंने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री टी. अंजैया का अपमान कर दिया था और उसके बाद हुए विधानसभा चुनाव में एनटी रामाराव ने इस अपमान को "तेलगु प्राइड" का मुद्दा बनाकर भारी जीत प्राप्त की थी।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 31 मार्च। तटीय राज्य ओडिशा में उड़िया गौरव को बहाल करने के मुद्दे पर सत्ता में आई पार्टी के लिए, भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने दिवंगत बीजू पटनायक के खिलाफ अपनी अपमानजनक टिप्पणियों के जरिए, पार्टी की राज्य इकाई को असहज स्थिति में डाल दिया है। बीजू पटनायक एक राजनीतिक महानायक और उड़िया गौरव के प्रतीक माने जाते हैं।

दुबे ने हाल ही में आरोप लगाया कि 1962 के चीन-भारत युद्ध के दौरान, बीजू पटनायक ने अमेरिकी सरकार, सीआईए और तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बीच एक कड़ी के रूप में काम किया था। यह बयान राज्यभर में व्यापक आक्रोश का कारण बना हुआ है, और उनकी पार्टी के भीतर और बाहर, दोनों जगह दुबे की कड़ी आलोचना हो रही है। गत 27 मार्च को लोकसभा के बाहर दुबे ने कहा था कि नेहरू ने 1962 का युद्ध अमेरिका के पैसे और सीआईए के सहयोग से लड़ा था। उन्होंने कहा, ओडिशा के तत्कालीन मुख्यमंत्री बीजू पटनायक अमेरिका सरकार, सीआईए और नेहरू के बीच की कड़ी थे।

मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने दुबे की टिप्पणियों से खुद को अलग कर लिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ईरान 1 अप्रेल से अमेरिकी कंपनियों पर निशाना लगायेगा

तेहरान,31 मार्च। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच ईरान ने अमेरिका को लेकर खुली चेतावनी दी है। ईरान की सैन्य इकाई इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने कहा कि अगर ईरानी नेताओं पर हमले जारी रहे, तो वह पश्चिम एशिया में अमेरिकी कंपनियों को निशाना बनाएगा। इस बयान से क्षेत्र में तनाव और बढ़ गया है और वैश्विक स्तर पर चिंता गहरा गई है।

- गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, एपल, इंटेल, आईबीएम, टेस्ला, बोइंग, डेल, एचपी, ओरेकल का नाम भी सूची में।

ईरान ने साफ कहा है कि 1 अप्रैल से तेहरान समय के अनुसार रात 8 बजे के बाद अमेरिकी कंपनियों के ठिकानों पर हमले शुरू किए जा सकते हैं। भारत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वकीलों को हटाना जेडीए अफसरों की मनमानी थी या राजनैतिक द्वेष?

जेडीए से हटाए गए सहायक अधिवक्ताओं को पुनर्स्थापित किया हाईकोर्ट ने

- 19 याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने कहा "एक वकील को नौकर की भांति नहीं समझा जा सकता, उन्हें पद से हटाने अथवा लगाने के लिए ठोस वजह व कारण होना चाहिए।"
- वरिष्ठ अधिवक्ता कमलाकर शर्मा ने अदालत को बताया कि "वर्ष 2014 में जेडीए ने आदेश निकाला था कि अधिवक्ता को तब ही हटाया जा सकता है, जब जोनल कमिश्नर उनके काम से नाखुश हो, पर उनके मुवक्किल प्रताप सिंह के काम से जोनल कमिश्नर खुश थे, फिर भी उन्हें हटाया गया।"
- वरिष्ठ अधिवक्ता आर.एन.माथुर ने भी कहा कि, उनके मुवक्किल राम सिंह के पास वर्ष 2012 में जेडीए द्वारा जारी संतोषप्रद कार्य का अनुभव पत्र है, परंतु पिछली कांग्रेस सरकार में राम सिंह को तत्कालीन यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल के आदेश पर हटाया गया था।"

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 31 मार्च। राजस्थान हाईकोर्ट में जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) द्वारा सहायक अधिवक्ता के पद पर नियुक्त कई वकीलों को बिना किसी कारण मनमाने तरीके से हटाये जाने के खिलाफ दायर 19 याचिकाओं पर सुनवाई हुई। अदालत ने याचिकाकर्ताओं के पक्ष में फैसला देते हुए उन्हें पूर्ववत पदों पर वापस लगाने तथा जेडीए को अधिवक्ताओं की नियुक्ति व हटाने के लिए गाइडलाइन बनाने के आदेश दिए हैं। इस गाइडलाइन में यह भी सुनिश्चित किया जाए कि सहायक अधिवक्ता और पैनल एडवोकेट की नियुक्ति में महिला, एससी-एएसटी वर्ग की भागीदारी भी हो।

हाईकोर्ट ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट अपने कई आदेशों में दोहरा चुका है कि अधिवक्ता न्यायिक प्रणाली में बहुत अहम भूमिका निभाते हैं, उनके कारण ही न्याय प्रणाली पर भरोसा बना रहता है। हाईकोर्ट ने इसी टिप्पणी को दोहराते हुए कहा कि एक वकील को नौकर की भांति नहीं समझा जा सकता, उन्हें पद से हटाने अथवा लगाने के लिए कोई ठोस वजह व कारण होना चाहिए।

राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश गणेशराम मीणा की एकलपीठ ने अपने आदेश में जेडीए को निर्देश दिए हैं कि अधिवक्ताओं की नियुक्ति व हटाने के लिए विस्तृत पॉलिसी व गाइडलाइन बनाएं।

इन 19 याचिकाओं में से अधिकतर वर्ष 2025 में दायर की गई हैं, जिनमें से याचिकाकर्ताओं को वर्ष 2009 से 2014 के बीच नियुक्त किया गया था। इन याचिकाओं में कुछ याचिकाएं वर्ष 2021 में भी दायर की गई थीं, जिससे स्पष्ट होता है कि भाजपा और कांग्रेस सरकार, दोनों ने जेडीए में नियुक्त सहायक अधिवक्ताओं को मनमाने ढंग से हटाया। यह सर्वविदित है कि जेडीए में लगे कई पैनल अधिवक्ताओं को भी कांग्रेस व भाजपा सरकार ने अपनी सरकार बदलने के साथ ही हटाया है। अधिवक्ताओं की नियुक्ति और हटाने के तरीके से स्पष्ट होता है कि राजनैतिक रसूख और सत्ताधारी पार्टी के नज़दीकी वकीलों को ही नियुक्तियां मिलती रही हैं।

अदालत ने सुनवाई के दौरान मुख्य तौर पर 2 याचिकाओं को आधार बनाते हुए फैसला सुनाया। इनमें पहली याचिका प्रताप सिंह द्वारा दायर की गई थी, जिन्हें वर्ष 2009 में सहायक अधिवक्ता के तौर पर नियुक्ति दी गई थी। इनका कार्यक्षेत्र परिभाषित किया गया था कि उन्हें पैनल एडवोकेट्स और जेडीए के अधिकारियों के बीच सेतु का काम करना था। उनकी तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता कमलाकर शर्मा और उनके सहायक अधिवक्ता योगेश कल्ला पैरवी के लिए पेश हुए थे। उन्होंने अदालत को बताया कि सहायक अधिवक्ताओं को पद से हटाने की कोई तिथि तय नहीं की गई थी, लेकिन यह जरूर कहा गया था कि अगर उनके कार्य से जेडीए असंतुष्ट रहता है तो उन्हें बिना नोटिस हटाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 में जेडीए ने एक आदेश निकाला था कि अगर जोनल कमिश्नर (उपायुक्त) आपके कार्य से खुश नहीं है तो उन्हें हटाया जा सकता है। इसके बावजूद 14

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नालंदा : शीतला मंदिर में भगदड़, 9 की मौत

पटना, 31 मार्च। बिहार में नालंदा जिले के शीतला माता मंदिर में भगदड़ में 9 लोगों की अबतक मौत हो गई है, जबकि 7 लोग घायल हुए हैं। नालंदा के

- नालंदा के पुलिस अधीक्षक ने बताया गर्मी और भीड़ के कारण हादसा हुआ। इसमें 9 की मौत हुई है तथा सात अन्य घायल हुए हैं। प्रमंत्री मोदी ने मृतकों के परिजनों को 2 लाख रुपए व घायलों को 50,000 रु. की सहायता राशि देने की घोषणा की है।

पुलिस अधीक्षक (एसपी) ने बताया कि गर्मी और भीड़ की वजह से घटना हुई है। हादसे की जांच के लिए गठित एसआईटी ने छानबीन शुरू कर दी है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

पराधीनता समाज के समस्त मौलिक नियमों के विरुद्ध है। –मान्तेस्क्यु

जनसुनवाई बन रही लोकतंत्र में उलटबांसी जैसी व्यवस्था

भारतीय लोकतंत्र का मूल आधार उसका संविधान है जिसके अनुसार सत्ता का वास्तविक स्त्रोत यहां के नागरिक होते हैं। संविधान के अनुसार जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनती है ताकि वे उनकी इच्छाओं, समस्याओं और आकांक्षाओं को शासन-व्यवस्था के जरिये उनके समाधान का प्रयास करें। किंतु वर्तमान समय में जिस प्रकार जन-सुनवाइयों की परंपरा विकसित हो गई है, वह कई बार लोकतंत्र की मूल भावना से उलट प्रतीत होती है। ऐसा लगता है जैसे लोकतंत्र में जनता मालिक न रहकर याचक बन गई है और जनप्रतिनिधि तथा अधिकारी सामंतों की भूमिका में आ गए हैं। यह स्थिति संविधान सम्मत लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक प्रकार का शीर्षासन है। परंपरागत सामंती व्यवस्था में राजा सर्वोच्च सत्ता होता था। तत्कालीन समाज में जनता के पास शासन में भागीदारी का कोई अधिकार नहीं था और न कोई स्वतंत्र न्याय व्यवस्था। राजा के बोल ही कानून होते थे। राजा ही न्याय करता था और वही उसकी पालना करवाता था। इसलिए प्रजा के लिए न्याय पाने का एकमात्र रास्ता राजा का रहम-ओ-करम होता था जिसके सामने उसे अपनी फ़रियाद पहुंचाना भी मुश्किल था। ऐसे राजाओं की दंतकथाएं भी बनी जिसमें फ़रियादी सीधे बादशाह के सामने दरबार में जा सकता था या उसे कभी भी पुकार सकता था। लेकिन आधुनिक लोकतंत्र का सिद्धांत इससे बिल्कुल भिन्न है। हमारे यहां एक ऐसा संविधान है जिसमें बराबरी के साथ जनता सर्वोच्च होती है। शासन उसके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित होता है और एक स्वतंत्र न्यायपालिका होती है। शासन किसी की मर्जी से नहीं बल्कि संवैधानिक तथा जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा बनाए गए कानूनों के प्रावधानों के अनुसार चलता है। इसीलिए लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जनता को केवल शिकायत करने वाला नहीं बल्कि निर्णय प्रक्रिया का भागीदार माना जाता है। संविधान नागरिकों को अनेक अधिकार देता है और राज्य की संस्थाओं को यह जिम्मेदारी देता है कि वे इन अधिकारों की रक्षा करें। इसलिए लोकतंत्र में जनता को अपने अधिकारों के लिए किसी दरबार में जाने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। मगर क्योंकि भारतीय जन-मानस अब भी सामंती सोच व परंपराओं से अपना पिंड नहीं छुड़ा पाया है इसलिए संविधान की प्रतिष्ठा किताबों में रह गई है। लोकतान्त्रिक विधि से चुने गए प्रतिनिधियों को सेवा का नहीं राजसी ताकत का अनुभव होता है। हम भारत के लोग जिन्होंने अपना संविधान अंगीकार किया उसके अनुरूप संवैधानिक सदनों में बैठने वाले विधि-निर्माता होते हैं मगर उन्होंने अपने को आम-जन का नियंता मान लिया है।

वास्तविकता यह है कि आज कई स्थानों पर जन सुनवाई कार्यक्रमों का स्वरूप किसी दरबार जैसा दिखाई देने लगा है। नेता मंच पर बैठे होते हैं, अधिकारी उनके साथ उपस्थित रहते हैं और जनता नीचे खड़ी होकर अपनी समस्याएं सुनाती है। यह दृश्य अनायास ही सामंती व्यवस्था की याद दिलाता है। लोकतंत्र में जहां प्रतिनिधि को जनता का सेवक होना चाहिए, वहां वह मालिक की तरह व्यवहार करता दिखाई देता है। दुर्भाग्य से यह आदत केवल जनप्रतिनिधियों तक सीमित नहीं रही है। प्रशासनिक अधिकारी भी अब नियमित रूप से जन सुनवाई आयोजित करने लगे हैं। जिलाधीश, कलेक्टर, उपखंड अधिकारी या अन्य प्रशासनिक अधिकारी सप्ताह में एक दिन जनता की समस्याएं सुनते हैं। सतही तौर पर यह व्यवस्था सकारात्मक लग सकती है क्योंकि इससे लोगों को अपनी शिकायतें सीधे अधिकारियों तक पहुंचाने का अवसर मिलता है। लेकिन इसके पीछे छिपा संदेश चिंताजनक है। यह मान लिया गया है कि सरकारी तंत्र इतना जटिल और दूरस्थ हो गया है कि आम नागरिक को अपनी समस्या के समाधान के लिए किसी विशेष सुनवाई के दिन की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। प्रशासनिक व्यवस्था का मूल उद्देश्य ही यह है कि नागरिकों की समस्याएं नियमित प्रक्रिया के माध्यम से हल हों। यदि लोगों को अपनी शिकायतों के लिए विशेष जन सुनवाई का सहारा लेना पड़ रहा है, तो इसका अर्थ है कि सामान्य प्रशासनिक तंत्र ठीक से काम नहीं कर रहा। ऐसे में जन सुनवाई समस्या का समाधान नहीं बल्कि उसकी स्वीकारोक्ति बन जाती है।स्थिति तब और अधिक विचित्र हो जाती है जब पुलिस अधिकारी भी जन सुनवाई करने लगते हैं। पुलिस का काम कानून-व्यवस्था बनाए रखना और अपराधों की जांच करना होता है। वह न्यायप्रणाली का हिस्सा होती है। यदि किसी व्यक्ति के साथ अपराध होता है तो उसे सीधे थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने का अधिकार है। लेकिन जब लोगों को न्याय पाने के लिए पुलिस अधीक्षक या अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की जन सुनवाई का इंतजार करना पड़े, तो यह न्याय प्रणाली की कमजोरी को दर्शाता है। यह संकेत देता है कि सामान्य स्तर पर शिकायतों को किस तरह निपटा जा रहा है। ऐसा सिर्फ लापरवाही, या अक्षमता के कारण नहीं होता। अन्याय बड़े कारण होते हैं, जिसे सब जानते हैं। संविधान ने जन-प्रतिनिधियों और अधिकारियों को अधिकार इसलिए दिए हैं ताकि वे जनता के हित में निर्बाध काम कर सकें। लेकिन जब यह संबंध उलट जाता है, तब सेवक मालिक बन जाता है और मालिक याचक की भूमिका में आ जाता है। इस समस्या का एक कारण राजनीतिक संस्कृति में आया परिवर्तन है। आज राजनीति में जनसेवा की भावना के स्थान पर शक्ति और प्रतिष्ठा की आकांक्षा अधिक दिखाई देती है। कई नेता जन-सुनवाई को जनता से संवाद का माध्यम नहीं बल्कि अपनी लोकप्रियता दिखाने के मंच के रूप में इस्तेमाल करते हैं। मीडिया कवरेज, फोटो और वीडियो के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि नेता जनता की समस्याएं सुन रहे हैं और तुरंत समाधान कर रहे हैं। लेकिन यह प्रक्रिया केवल प्रतीकात्मक होती है। इसके साथ ही प्रशासनिक तंत्र भी इस संस्कृति को बढ़ावा देने लगा है। अधिकारी जन-सुनवाई के माध्यम से यह दिखाना चाहते हैं कि वे जनता के प्रति संवेदनशील हैं। लेकिन यदि प्रशासनिक व्यवस्था वास्तव में प्रभावी हो, तो अधिकांश समस्याएं कार्यालयों में ही रोजाना हल हो जानी चाहिए। लोकतंत्र की स्वस्थ व्यवस्था में जनता और शासन के बीच संबंध अधिक समानता पर आधारित होना चाहिए। जनप्रतिनिधियों का काम केवल शिकायतें सुनना नहीं बल्कि ऐसी नीतियां बनाना है जिससे समस्याएं उत्पन्न ही न हों। यदि सड़क, पानी, बिजली, शिक्षा या स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए लोगों को बार-बार जन सुनवाई में जाना पड़े तो यह नीति-निर्माण की विफलता को ही दर्शाता है। इसी प्रकार प्रशासनिक अधिकारियों की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना होती है कि सरकारी योजनाएँ सही ढंग से लागू हों और नागरिकों को समय पर सेवाएं मिलें। अब तो डिजिटल-तकनीक और ई-गवर्नेंस के माध्यम से शिकायतों का समाधान अधिक पारदर्शी और प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। ऑनलाइन शिकायत पोर्टल, हेल्पलाइन और समयबद्ध सेवा कानून जैसे उपाय जनता को बार-बार अधिकारियों के सामने उपस्थित होने की आवश्यकता को कम कर सकते हैं। पुलिस व्यवस्था में बड़े सुधार की आवश्यकता है। यदि प्रत्येक थाने में शिकायतों को गंभीरता से लिया जाए और निष्पक्ष जांच हो, तो लोगों को उच्च अधिकारियों की जन सुनवाई में जाने की आवश्यकता क्यों पड़े? पुलिस और जनता के बीच विश्वास का संबंध बनाना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक है।

> **यह कहना उचित होगा कि जन सुनवाई का विचार पूरी तरह गलत नहीं है। यदि इसे जनता के साथ संवाद और समस्याओं के त्वरित समाधान के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाए, तो यह उपयोगी हो सकता है। लेकिन जब यह व्यवस्था सामंती दरबार की तरह दिखाई देने लगे और जनता को याचक की भूमिका में धकेल दिया जाय, तब यह लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत हो जाती है।**

यह भी महत्वपूर्ण है कि नागरिक स्वयं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों। लोकतंत्र केवल चुनाव तक सीमित नहीं है। नागरिकों को यह समझना होगा कि वे केवल वोट देने वाले नहीं बल्कि शासन के वास्तविक मालिक हैं। यदि प्रतिनिधि या अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का सही ढंग से पालन नहीं करते, तो जनता को लोकतांत्रिक माध्यमों से उन्हें जवाबदेह बनाना चाहिए। मीडिया और नागरिक समाज की भूमिका भी यहां महत्वपूर्ण हो जाती है। मीडिया को केवल जन सुनवाई के कार्यक्रमों की तस्वीरें दिखाने के बजाय यह सवाल उठाने चाहिए कि आखिर ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न होती है कि जनता को बार-बार अपनी समस्याएं लेकर नेताओं और अधिकारियों के सामने जाना पड़ रहा है। इसी प्रकार सामाजिक संगठनों को भी प्रशासनिक सुधार और पारदर्शिता की मांग उठानी चाहिए। यह कहना उचित होगा कि जन सुनवाई का विचार पूरी तरह गलत नहीं है। यदि इसे जनता के साथ संवाद और समस्याओं के त्वरित समाधान के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाए, तो यह उपयोगी हो सकता है। लेकिन जब यह व्यवस्था सामंती दरबार की तरह दिखाई देने लगे और जनता को याचक की भूमिका में धकेल दिया जाय, तब यह लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत हो जाती है। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि सत्ता का व्यवहार कैसा है! यदि सत्ता स्वयं को जनता का सेवक मानती है, और नागरिकों को सम्मान के साथ अधिकार प्रदान करती है, तो लोकतंत्र मजबूत होता है। लेकिन यदि सत्ता स्वयं को मालिक समझने लगे और जनता को अपनी समस्याएं लेकर उसके सामने उपस्थित होना पड़े, तो यह लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम लोकतंत्र की मूल भावना को पुनः याद करें। जनप्रतिनिधि और अधिकारी दोनों को यह समझना होगा कि वे जनता के मालिक नहीं बल्कि सेवक हैं। प्रशासनिक व्यवस्था को इतना प्रभावी और पारदर्शी बनाया जाना चाहिए कि नागरिकों को न्याय और सेवाएं प्राप्त करने के लिए किसी दरबार की आवश्यकता न पड़े। जब तक यह परिवर्तन नहीं होगा, तब तक जन सुनवाई जैसे कार्यक्रम लोकतंत्र की मजबूती के बजाय उसकी विडंबना को ही उजागर करते रहेंगे। लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ तभी साकार होगा जब जनता केवल सुनी ही नहीं जाएगी बल्कि शासन की दिशा तय करने में उसकी वास्तविक भागीदारी सुनिश्चित होगी। तभी लोकतंत्र का यह शीर्षासन सीधा खड़ा हो सकेगा और जनता वास्तव में अपने अधिकारों की स्वामी बन सकेगी।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

ईरान-अमेरिका टकराव : शक्ति, विचार और जनता के बीच निर्णायक संघर्ष

दोनों देशों के बीच बढ़ता तनाव आज की वैश्विक राजनीति का एक ऐसा केंद्र बन चुका है, जहां सैन्य शक्ति ही नहीं, बल्कि विचारधाराएं, पहचान और शासन की वैधता भी आमने-सामने खड़ी हैं

डॉ. नीरज रावत

ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बढ़ता तनाव आज की वैश्विक राजनीति का एक ऐसा केंद्र बन चुका है, जहां केवल सैन्य शक्ति ही नहीं, बल्कि विचारधाराएं, पहचान और शासन की वैधता भी आमने सामने खड़ी हैं। यह संघर्ष सीमाओं तक सीमित नहीं है। यह उस बड़े प्रश्न का हिस्सा है कि इक्कीसवीं सदी की दुनिया किस दिशा में आगे बढ़ेगी। क्या दुनिया नियंत्रण और भय के ढांचे को स्वीकार करेगी, या स्वतंत्रता और लोकतंत्र की ओर निर्णायक कदम बढ़ाएगी।

इस पूरे परिदृश्य में दुनिया की प्रतिक्रियाएं एक जैसी नहीं हैं। एक बड़ा वर्ग इसे इस्लामी एकजुटता के चश्मे से देखता है। उसके लिए ईरान का पश्चिम से टकराव एक प्रकार का सभ्यतागत प्रतिरोध है। शिया और सुन्नी मतभेदों के बावजूद यह भावना कई समाजों में दिखती है कि ईरान पश्चिमी प्रभाव के सामने झुकने से इनकार कर रहा है। यह दृष्टिकोण भावनात्मक रूप से प्रभावशाली जरूर है, लेकिन यह ईरान के भीतर की वास्तविकताओं को पूरी तरह सामने नहीं लाता।

ईरान की असली कहानी उसकी सीमाओं के भीतर लिखी जा रही है। वहां सत्ता का केंद्र केवल निर्वाचित सरकार नहीं है, बल्कि इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स यानी आईआरजीसी है, जिसने दशकों में एक समानांतर शक्ति संरचना खड़ी कर ली है। यह संगठन केवल सुरक्षा तंत्र नहीं रहा, बल्कि अर्थव्यवस्था, विदेश नीति और आंतरिक नियंत्रण तक इसका प्रभाव गहराई से फैला हुआ है। यही कारण है कि ईरान के भीतर असंतोष केवल आर्थिक कठिनाइयों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी व्यवस्था के खिलाफ प्रतिक्रिया है जो नागरिकों की स्वतंत्रता को सीमित करती है।

ईरान की युवा पीढ़ी इस असंतोष का सबसे मुखर चेहरा बनकर उभरी है। शिक्षा, इंटरनेट और वैश्विक संपर्क ने उनके भीतर तुलना की क्षमता पैदा की है। वे जानते हैं कि दुनिया के अन्य हिस्सों में नागरिकों को किस प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं, और इसी तुलना ने उनके भीतर बेचैनी को जन्म दिया है। महसा अमिनी की मृत्यु के बाद जो आंदोलन खड़ा हुआ, वह केवल एक घटना की प्रतिक्रिया नहीं था। वह वर्षों से जमा हो रहे गुस्से का विस्फोट था।

इन प्रदर्शनों की विशेषता यह थी कि उन्होंने भय की संस्कृति को खुली चुनौती दी। महिलाओं ने सार्वजनिक रूप से हिजाब कानूनों का विरोध किया। छात्रों ने विश्वविद्यालयों से सड़कों तक अपनी आवाज बुलंद की। कई शहरों में लगातार विरोध देखने को मिला। यह संकेत है कि ईरान के भीतर एक बड़ा वर्ग अब केवल सुधार नहीं, बल्कि संरचनात्मक परिवर्तन चाहता है। यह असंतोष किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं है। इसमें महिलाएं, युवा, पेशेवर वर्ग और यहां तक कि पारंपरिक समाज के कुछ हिस्से भी शामिल हो रहे हैं।

ईरानी प्रवासी समुदाय ने इस असंतोष को वैश्विक स्तर पर एक संगठित आवाज दी है। कनाडा, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले ईरानियों ने लगातार प्रदर्शन कर यह सुनिश्चित किया है कि दुनिया इस मुद्दे को केवल एक भू-राजनीतिक संघर्ष के रूप में न देखे, बल्कि इसे मानवाधिकार और स्वतंत्रता के प्रश्न के रूप में भी समझे। यह दबाव धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय नीति निर्माण को भी प्रभावित कर सकता है।

दूसरी ओर, क्षेत्रीय समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। इज़राइल के लिए ईरान एक प्रत्यक्ष सुरक्षा चुनौती बना हुआ है। इस संदर्भ में अब्राहम समझौते जैसे घटनाक्रम यह दिखाते हैं कि मध्य पूर्व की राजनीति अब पुराने ढांचों से बाहर निकल रही है। कई अरब देशों ने अपने रणनीतिक हितों को प्राथमिकता देते हुए नए गठजोड़ बनाए हैं। यह बदलाव संकेत देता है कि भावनात्मक मुद्दों की जगह व्यावहारिक सोच ने ले ली है।

अमेरिका के भीतर भी इस मुद्दे को लेकर स्पष्ट एकरूपता नहीं है। डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में जो आक्रामक नीति सामने आई, उसने यह दिखाया कि अमेरिका अपनी शक्ति का खुला प्रदर्शन करने से नहीं हिचकिचाता। कासिम सुलेमानी की हत्या इसी रणनीति का हिस्सा थी। लेकिन इसके साथ ही अमेरिका में एक मजबूत धारणा यह भी है कि लंबे युद्ध देश के हित में नहीं हैं। यही कारण है कि उसकी नीति में आक्रामकता और संयम दोनों साथ साथ दिखाई देते हैं। वैश्विक स्तर पर चीन और रूस इस संघर्ष को एक अवसर के रूप में देख रहे हैं। उनके लिए ईरान एक ऐसा साझेदार है जो अमेरिकी प्रभाव को संतुलित कर सकता है। ईरान-सऊदी अरब समझौता 2023 में चीन की भूमिका इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में कूटनीति के केंद्र बदल सकते हैं। दुनिया धीरे-धीरे एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रही है, जहां शक्ति का वितरण अधिक जटिल और प्रतिस्पर्धी होगा।

लेकिन इन सभी रणनीतिक और वैचारिक विमर्शों के बीच एक सच्चाई बार बार सामने आती है कि, किसी भी युद्ध का सबसे बड़ा बोझ आम नागरिक उठाते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है। इराक युद्ध और सीरियाई गृह युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि राजनीतिक निर्णयों की कीमत समाज की सामान्य जनता को चुकानी पड़ती है। घर उजड़ते हैं, अर्थव्यवस्था टूटती है और पीढ़ियां अस्थिरता में जीने को मजबूर होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं शांति की अपील करती हैं, लेकिन जब महाशक्तियां अपने हितों के अनुसार निर्णय लेती हैं, तो उनकी सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं। ऐसे में यह सवाल और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या वैश्विक व्यवस्था केवल शक्ति संतुलन पर आधारित रहेगी, या उसमें मानव मूल्यों के लिए भी जगह होगी।

इस पूरे परिदृश्य में सबसे निर्णायक तत्व ईरान के भीतर का असंतोष है। यदि यह असंतोष संगठित और व्यापक रूप लेता है, तो यह केवल शासन परिवर्तन तक सीमित नहीं रहेगा। यह पूरे क्षेत्र की राजनीति को बदल सकता है। लेकिन इसके विपरीत यह भी संभव है कि बाहरी दबाव के कारण राष्ट्रवाद का उभार हो और वही सत्ता को और अधिक मजबूत कर दे। यही इस संघर्ष की जटिलता है। बाहरी हस्तक्षेप और आंतरिक असंतोष का यह समीकरण भविष्य की दिशा तय करेगा।

भारत जैसे देशों के लिए यह समय केवल संतुलन बनाने का नहीं, बल्कि स्पष्टता दिखाने का भी है। राष्ट्रीय हित सर्वोपरि हैं, लेकिन उन्हें मानवाधिकार और स्वतंत्रता के मूल्यों से अलग नहीं किया जा सकता। ईरान के आम नागरिकों की आकांक्षाएं इस बात का संकेत हैं कि दुनिया के किसी भी हिस्से में लोग सम्मान और स्वतंत्रता के साथ जीना चाहते हैं। यह आकांक्षा सार्वभौमिक है। अंततः यह संघर्ष हमें एक बुनियादी प्रश्न के सामने खड़ा करता है। क्या हम ऐसी दुनिया को स्वीकार करेंगे जहां सत्ता का स्त्रोत भय और नियंत्रण हो, या हम ऐसी व्यवस्था की ओर बढ़ेंगे जहां नागरिकों की आवाज और अधिकार सर्वोपरि हों। किसी भी रूप में थिओक्रेसी (धर्म तंत्र) अंततः व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती है। यह समाज को स्थिरता के नाम पर ठहराव और नियंत्रण की ओर ले जाती है।

आज आवश्यकता केवल युद्ध को रोकने की नहीं है। आवश्यकता एक स्पष्ट वैश्विक दृष्टिकोण की है, जिसमें मानव कल्याण सर्वोच्च हो। लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकार केवल आदर्श नहीं हैं, बल्कि स्थायी शांति और प्रगति की आधारशिला हैं। जहां नागरिकों को बोलने का अधिकार होता है, वहां व्यवस्था स्वयं को सुधारने की क्षमता भी रखती है।

ईरान अमेरिका टकराव केवल दो देशों का विवाद नहीं है। यह उस दिशा का संकेत है जिसमें पूरी दुनिया आगे बढ़ रही है। इस मोड़ पर लिया गया हर निर्णय आने वाले समय की संरचना तय करेगा। यदि दुनिया ने केवल शक्ति और रणनीति को प्राथमिकता दी, तो परिणाम अस्थिरता और संघर्ष ही होगा। लेकिन यदि मानवता, स्वतंत्रता और लोकतंत्र को केंद्र में रखा गया, तो यह संकट एक नए संतुलन और बेहतर व्यवस्था की शुरुआत भी बन सकता है।

अंत में, यह याद रखना होगा कि किसी भी संघर्ष की वास्तविक कसौटी उसकी सैन्य जीत नहीं होती, बल्कि यह होती है कि उसने मानव जीवन की गरिमा को कितना सुरक्षित रखा। यदि इस पूरे विमर्श में आम लोगों की पीड़ा, उनकी स्वतंत्रता और उनके अधिकारों को केंद्र में नहीं रखा गया, तो कोई भी जीत अधूरी ही रहेगी। यही इस समय की सबसे बड़ी सच्चाई है और यही भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती भी।

–डॉ. नीरज रावत,
(अंतरराष्ट्रीय विषयों के जानकार)

नक्सलवाद का "लाल आतंक" खत्म : "मोदी 3.0" की सबसे बड़ी उपलब्धि

यह भारत के लोकतंत्र की सफलता, सुरक्षा बलों की वीरता आदि की संयुक्त विजय है

डॉ. योगेश शर्मा

राजनीतिक शक्ति बंदूक की नली से निकलती है। जरा सोचिए, कितना भीषण रहा होगा चीन के माओवाद का यह दर्शन, जो हिंसक सशस्त्र क्रांति को प्रस्तुत करता है और लोकतांत्रिक संस्कृति के ऊपर बंदूक संस्कृति की श्रेष्ठता स्थापित करना चाहता है। दूसरी तरफ भारत की स्वाभाविक लोकतांत्रिक, शांतिपूर्ण और आदर्शवादी संस्कृति है, जो कानून तथा संविधान और वोट के माध्यम से होने वाली शांतिपूर्ण क्रांति की पक्षधर है। परंतु दुर्भाग्यवश, माओवाद का यह खूनी दर्शन 1960 के दशक के अंतिम वर्षों में भारत-विरोधी कुछ निहित स्वार्थी तत्वों के प्रभाव में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी क्षेत्र से प्रारंभ हुआ और इसे 'नक्सलवाद' नाम मिला। नक्सलवाद को उस समय चीन की कम्युनिस्ट क्रांति से वैचारिक प्रेरणा मिली, और चीनी मीडिया ने इसे स्प्रिंग थंडर ओवर इंडिया (भारत में बसंत का तूफान) तक कहा था। नक्सलवाद का हिंसक मार्ग न केवल राज्य की संप्रभुता के लिए चुनौती बना, बल्कि समाज में अस्थिरता और भय का कारण भी बना।

1967 में प्रारंभ हुआ नक्सलवाद छह दशकों तक एक खूनी संघर्ष के रूप में भारत के लगभग 12 राज्यों में फैल गया। चारु मजूमदार, कानू सान्याल जैसे नेतृत्व से गुजरते हुए यह आंदोलन भारत में माओवादी, वामपंथी और चरमपंथी हिंसा का भयानक उदाहरण बन गया। पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और महाराष्ट्र तक इसका प्रभाव रेड कॉरिडोर के रूप में दिखाई देने लगा। रेड कॉरिडोर की अवधारणा के तहत इसने भारत के सशस्त्र बलों और आम नागरिकों दोनों को भारी नुकसान पहुँचाया।

1970 और 1980 के दशक में नक्सलवाद कई संगठनों में विभाजित हो गया, जिनमें पीपुल्स वार ग्रुप (पीडब्ल्यूजी) और माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर (एमसीसी) प्रमुख थे। वर्ष 2004 में इन दोनों संगठनों के विलय से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का गठन हुआ, जिसने नक्सल आंदोलन को एक संगठित और अधिक घातक रूप प्रदान किया। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2004 से 2014 के बीच नक्सली हिंसा की 16,000 से अधिक घटनाएँ दर्ज हुईं। इस दौरान लगभग 2,000 सुरक्षाकर्मी और 5,000 आम नागरिक मारे गए। छत्तीसगढ़ का बस्तर, दंतेवाड़ा, सुकमा और महाराष्ट्र का गडचिरोली जैसे क्षेत्र नक्सली हमलों के केंद्र बन गए। नक्सलवाद का प्रभाव इतना बढ़ गया कि पुलिस, केंद्रीय बल, अर्धसैनिक बल और राजनेताओं तक की हत्या की जाने लगी। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी नक्सलवाद को देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती बताया था।

नक्सलवाद को भूमिहीन, आदिवासियों और वंचित वर्ग का मसीहा बताने का एक ढोंग प्रस्तुत किया गया। जल, जमीन और जंगल की लड़ाई के नाम पर इसे वैध ठहराने का प्रयास किया गया। इसने स्वयं को भगवान बिरसा मुंडा और भगत सिंह जैसे महान क्रांतिकारियों से जोड़ने का वैचारिक दुस्साहस भी किया। नक्सलवाद ने जिस प्रकार से छह दशकों का खूनी सफर तय किया, वह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि यह आंदोलन कहीं से भी कृषक, भूमिहीन या सामाजिक न्याय के आंदोलन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

गुरिल्ला युद्ध की रणनीति, घात लगाकर किए गए हमले, मारे गए लोगों के मृत शरीरों के साथ अमानवीय व्यवहार और सशस्त्र क्रांति को वैध ठहराने का प्रयास-नक्सलवाद एक संगठित सशस्त्र हिंसक विचारधारा का प्रतीक बन गया। आश्चर्यजनक रूप से एक गंभीर विडंबना यह है कि कुछ बुद्धिजीवी, लेखक व सिनेमा जगत से जुड़े लोग समय-समय पर नक्सलियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते नजर आए।

2014 के बाद मोदी सरकार ने नक्सलवाद के विरुद्ध एक बहुआयामी रणनीति अपनाई -खुफिया ऑपरेशनों में तेजी, सुरक्षा बलों का आधुनिकीकरण, नोटबंदी के माध्यम से माओवादी फंडिंग पर प्रहार, नक्सली नेटवर्क को ध्वस्त करना, नक्सलियों का आत्मसमर्पण कराना एनआइए और इडी द्वारा संयुक्त कार्रवाई, ड्रोन, सैटेलाइट इमेजिंग, डिजिटल मैपिंग का उपयोग, स्पेशल फोर्स को आधुनिक हथियार उपलब्ध कराना। केंद्र सरकार ने 2017 में समाधान डॉक्ट्रिन (SAMADHAN -स्मार्ट लीडरशिप, एग्रेसिव स्ट्रैटेजी, मोटिवेशन एंड ट्रेनिंग, एक्शनएबल इंटेलिजेंस, डैशबोर्ड-बेस्ड केपीआईज़, हार्नेसिंग टेक्नोलॉजी, एक्शन प्लान फॉर ईच थिएटर, नो एक्सेस टू फाइनेंसिंग) को लागू किया, जिसने नक्सलवाद विरोधी रणनीति को अधिक व्यवस्थित और परिणामोन्मुख बनाया। इसके साथ ही नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे का विकास, आत्मसमर्पण और पुनर्वास नीति का प्रभावी क्रियान्वयन। रेड कॉरिडोर में 10,000 किमी से अधिक सड़क निर्माण 8,000 से अधिक मोबाइल टावर स्थापित, शिक्षा, रोजगार, आवास योजनाएँ, आधार, आयुष्मान भारत, पीएम आवास योजना, 250ξ एकलव्य विद्यालय,रेलवे और कौशल विकास। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन ने स्थानीय जनसंख्या का विश्वास अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरकार ने सामाजिक न्याय को केंद्र में रखते हुए कल्याणकारी योजनाओं, और सामाजिक सुरक्षा नीतियों के माध्यम से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन लाने का प्रयास किया।

इन पहलों ने वंचित वर्गों और आदिवासियों का विश्वास अर्जित किया, जिसके परिणामस्वरूप माओवादी कैडरों की ताकत कमजोर पड़ी और उनके द्वारा फैलाए गए वैचारिक भ्रम तथा झूठ का पर्दाफाश हुआ। इन सबने नक्सलवाद की सामाजिक-आर्थिक जड़ों को कमजोर किया। 2024 में जहाँ 126 जिले नक्सल प्रभावित थे, वहीं 2026 तक यह संख्या घटकर 10 से भी कम रह गई। पिछले वर्षों में कई बड़े नक्सली नेताओं का सफाया हुआ-बसवराज, माधवी हिड़मा, सहदेव सोरेन आदि।

2024 में गृहमंत्री अमित शाह ने घोषणा की थी कि 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद का पूर्णतः सफाया कर दिया जाएगा। संसद के बजट सत्र में 30 मार्च 2026 को लोकसभा में नियम 193 के तहत नक्सलवाद पर चर्चा हुई, जिसमें अमित शाह ने स्पष्ट रूप से कहा कि नक्सलवाद की मूल वजह विकास की मांग नहीं, बल्कि एक विकृत विचारधारा है। गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि देश लाल आतंक से मुक्त हो चुका है और जो हथियार उठाएगा उसे हिसाब चुकाना होगा। 31 मार्च 2026 की डेडलाइन के साथ भारत ने नक्सलवाद से मुक्त होने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया-यह मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल (3.0) की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

निस्संदेह, यह भारत के लोकतंत्र की सफलता, सुरक्षा बलों की वीरता, सरकार और आम नागरिकों के विश्वास की संयुक्त विजय है। इस ऐतिहासिक सफलता के लिए भारत की केंद्र सरकार, हमारे सुरक्षा बल और देश के जागरूक नागरिक-सभी स्थायी बधाई के पात्र हैं। केंद्र सरकार की मजबूत इच्छाशक्ति, सुरक्षा बलों के प्रयास और विकास आधारित नीति ने भारत को नक्सलवाद के आतंक से मुक्त कर दिया है।-यह लोकतंत्र, विकास, न्याय और समावेशन की प्रक्रिया की निर्णायक विजय और नए भारत की एक मजबूत तस्वीर है।

–डॉ. योगेश शर्मा,
(लेखक संवैधानिक अध्येता और अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ हैं)।

राशिफल

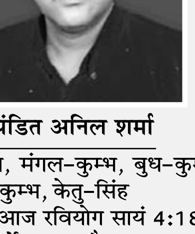

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 1 अप्रैल, 2026

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र सायं 4:18 तक, वृद्धि योग दिन 2:51 तक, वणिज करण प्रातः 7:07 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग सायं 4:18 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 4:18 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 7:07 से सायं 7:25 तक रहेगी। आज चान्द पूर्णिमा व्रत, मन्वादि है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:26 तक, शुभ 10:58 से 12:31 तक, चर 3:35 से 5:07 तक, लाभ 5:07 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:22, सूर्यास्त 6:40

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

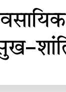

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मिथुन

परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-सुविधाओं में वृद्धि हो सकती है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यक्तिगत प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

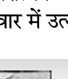

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

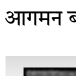

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

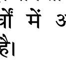

तुला

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। मानसिक तनाव हो सकता है। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

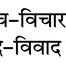

वृश्चिक

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं।

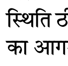

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

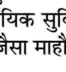

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

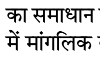

मीन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा, महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सार-समाचार

मासिक बैठक में भजनों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की छटा

अजमेर, (कासं)। श्री सर्वेश्वर मित्र मंडल अजमेर की मार्च माह की मासिक बैठक गौड़ ब्राह्मण सभा भवन, रेलवे सर्कुलर रोड पर आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता पूर्व पार्षद शैलेंद्र अग्रवाल ने की। कार्यक्रम की शुरुआत ईश वंदना से हुई। इसके बाद महासचिव प्रवीण अग्रवाल ने पिछली बैठक की कार्यवाही का वाचन कर अनुमोदन कराया। इस अवसर पर रमेशचंद गोयल, रामप्रकाश शर्मा और अरविंद कुमार अग्रवाल का जन्मदिन मनाते हुए माल्यार्पण एवं शुभकामना पत्र देकर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष शैलेंद्र अग्रवाल ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए दुर्गा अष्टमी, राम नवमी, गणगौर, महावीर जयंती और हनुमान जयंती की शुभकामनाएं दीं। सांस्कृतिक कार्यक्रम में जगदीश भंसाली ने ओम उच्चारण, हास्यासन और ताली वादन कराए तथा उनके लाभ बताए। इसके बाद डॉ. कृष्ण गोपाल गोयल, प्रवीण श्रीवास्तव, उमेश चंद गुप्ता, रामप्रकाश शर्मा, घनश्याम वर्मा, प्रमोद कुमार बंसल, नंद किशोर गर्ग, बालकिशन खंडेलवाल, प्रमोद मेहता और शैलेंद्र अग्रवाल सहित कई सदस्यों ने भजन, गीत, हास्य-व्यंग्य और ज्ञानवर्धक संस्मरण प्रस्तुत किए।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर कल निःशुल्क जांच शिविर

अजमेर, (कासं)। लायंस क्लब अजमेर पृथ्वीराज द्वारा विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 2 अप्रैल को प्रातः 7:30 बजे वैशाली नगर स्थित शहीद भगतसिंह उद्यान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया जाएगा। क्लब के डिस्ट्रिक्ट चीफ मीडिया कोऑर्डिनेटर राजेंद्र गांधी ने बताया कि शिविर में मधुमेह और रक्तचाप की निःशुल्क जांच की जाएगी। मनोज वृंदानी एवं उनकी टीम सेवाएं प्रदान करेगी। संयोजक आभा गांधी ने बताया कि शिविर का उद्देश्य आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना है।

सैनजी महाराज की दो दिवसीय 726वीं जयंती महोत्सव 13 अप्रैल से

अजमेर, (कासं)। श्री सैन जयंती महोत्सव समिति सैनजी महाराज की दो दिवसीय 726वीं जयंती 13 अप्रैल से मनाएगी। इस अवसर पर शहर के सभी सैन मंदिरों में झण्डारोहण एवं महिलाओं की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। समिति के अध्यक्ष त्रिलोकचंद चौहान ने बताया कि सैन मंदिर पुरानी मंडी में 13 अप्रैल की सुबह झण्डारोहण किया जाएगा। दोपहर को महिलाओं की मेहंदी और बालिकाओं की नृत्य एवं गायन प्रतियोगिता व शाम को सुंदरकाण्ड का पाठ होगा। उन्होंने बताया की 14 अप्रैल को शोभायात्रा निकाली जाएगी। जो श्री सैन मंदिर पुरानी मण्डी से सुबह आठ बजे आरम्भ होकर पुरानी मंडी नया बाजार, आगरा गेट, सब्जी मंडी चौराहा, पेट्रोल पम्प, पॉवर हाऊस, अग्रेसैन चौराहे से होती हुई कचहरी रोड रेलवे बिसिट जाकर समाप्त होगी।

'हर्षोल्लास के साथ भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया'

■ सभी श्री संघो ने अपनी अनुकूलता स्वरुप अपने अपने क्षेत्रो मे सामुहिक प्रभात फेरी का आयोजन किया व प्रवचन लाभ लिया

अजमेर, (कासं)। भगवान श्री महावीर स्वामी के 2625 वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर्व के उपलक्ष्य में श्री सकल श्वेताम्बर जैन समाज का सामूहिक आयोजन जिसमे मुख्य रूप से रक्त दान, बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता व सभी वर्ग के लिये प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन व भजन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमे लगभग 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया व अपनी प्रस्तुति दी। सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया। अध्यक्ष विनोद कुमार ढाबरिया, महामंत्री संदीप चपलोत व प्रकाश बाफना ने बताया कि इस कार्यक्रम को आपसी स्नेह, सद्भाव, समन्वय की भावना को साकार रूप प्रदान करने हेतु प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री सकल श्वेताम्बर समाज द्वारा महावीर जयंती पर एकता का परिचय दिया गया है। सभी श्री संघो ने अपनी अनुकूलता स्वरुप अपने अपने क्षेत्रो मे सामुहिक प्रभात फेरी का आयोजन किया व प्रवचन लाभ लिया।

इस कार्यक्रम में श्री सकल श्वेताम्बर जैन समाज व प्राज्ञ युवा मण्डल के सामुहिक तत्वावधान मे रक्त दान कार्यक्रम किया गया, जिसमें लगभग 100 यूनिट से अधिक रक्त दान हुआ, जिसमे महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय रही। भगवान महावीर के जीवन चरित्र पर चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम पूर्वांश, अवनी, द्वितीय रिषिता, आरोही एवं तृतीय रिध्धि, वैदिका रही। प्रश्नोत्तरी मे प्रथम मोक्षा, डॉ.अनिता सकलेचा, द्वितीय ईशिका, ममता चपलोत, तृतीय तपिश, अनिता कोठारी रही। निबंध प्रतियोगिता मे प्रथम काव्या, ममता, द्वितीय ईशिका, सुनीता खाबिया, शीतल गांधी, तृतीय निर्जरा, कोमल पोखरना, श्वेता सांखला रहे।

भजन प्रतियोगिता मे प्रथम काशवी, सुनील सांखला, द्वितीय अविशी, सुनीता खाबिया, तृतीय खुश, शीतल गांधी संयुक्त रूप से रहे।

प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल मे मुकेश सेठी, मनोज रांका, मुकेश चौधरी, भागचंद मांडोत, पुखराज काठेड, सम्पत नाहर ने विभिन्न आधार पर सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी का चयन किया। श्री सकल श्वेताम्बर जैन समाज के अध्यक्ष विनोद कुमार ढाबरिया व महामंत्री भागचंद मांडोत ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित कर समस्त श्री संघ के सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। इस पुनित अवसर पर श्री सकल श्वेताम्बर जैन समाज के गणमान्य सदस्य पारस मल रांका, रिखबचंद मांडोत, प्रकाश बाफना, विकास नाहर, मनोज रांका, गुमान मल बोहरा, अशोक चौधरी, राजु मेहता, सम्पत नाहर, अरुण पोखरणा, मनीष रांका, निहाल चौधरी, दौलत कोठारी, अनिल सुजन्ती, हंसराज नाबेडा व अन्य सकल जैन समाज के सदस्य उपस्थित रहे।

भारत विकास परिषद अजमेर के विस्तारित फिजियोथैरेपी सेंटर का लोकार्पण

अजमेर, (कासं)। भारत विकास परिषद मुख्य शाखा अजमेर द्वारा विशाल नगर पंचशील स्थित भारत विकास भवन में संचालित फिजियोथैरेपी सेंटर के विस्तारित रूप का लोकार्पण एवं शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। बीते एक वर्ष से यहां आधुनिक उपकरणों के माध्यम से मरीजों का निःशुल्क उपचार किया जा रहा है। बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए सेंटर का विस्तार किया गया, जिसमें लाखों रुपये की लागत से अत्याधुनिक मशीनें समाजसेवी रमेश अग्रवाल के सहयोग से स्थापित की गईं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में परिषद द्वारा सेवा, संस्कार और संस्कृति के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे प्रकल्प समाज और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय की ओर से हर संभव सहयोग का आश्वासन भी दिया।

विशिष्ट अतिथि रमेश अग्रवाल ने भविष्य में भी सेंटर को आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने का संकल्प व्यक्त किया। इस दौरान खरेकड़ी में संचालित स्वावलंबन स्वरोजगार सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का संपूर्ण व्यय वहन करने पर हनुमान दयाल बंसल का सम्मान किया गया। उन्होंने परिषद के सेवा कार्यों को स्वरोजगार के लिए उपयोगी बताया। संरक्षक सुरेश गोयल ने बताया कि सेंटर से अब तक अनेक शहरवासियों को लाभ मिल चुका है और नई मशीनों से सेवाएं और बेहतर होंगी। सेवा प्रकल्प प्रभारी अशोक पंसारी ने आधुनिक उपकरणों से मिलने वाले लाभों की जानकारी दी। शाखा अध्यक्ष कृष्ण गोपाल गोयल ने बताया कि वर्ष 2025-26 में शाखा को राजस्थान मध्य प्रांत की सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। कार्यक्रम में वर्ष 2026-27 की नई कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण भी हुआ। रीजनल समन्वयक पर्यावरण दिलीप पारीक, प्रांतीय उपाध्यक्ष राधेश्याम अग्रवाल, प्रांतीय महासचिव आनंद सिंह राठौड़ एवं प्रांतीय स्थायी प्रकल्प संयोजक सुरेश गोयल ने पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश जाजू ने सभी सदस्यों को साथ लेकर सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया।

विधायक कोठारी का हॉस्पिटल दौरा

भीलवाड़ा (निसं)। भीलवाड़ा विधायक अशोक कुमार कोठारी ने महात्मा गांधी अस्पताल परिसर में विद्युत व्यवस्था को सुचारू, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित बनाए जाने को लेकर एवीवीएनएल अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के अधिकारियों तथा एमजी हॉस्पिटल के पीएमओ डॉ. अरुण गौड को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

विधायक कोठारी ने अस्पताल परिसर में बिजली व्यवस्था को मजबूत करने, गर्मी को देखते हुए निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा मरीजों और चिकित्सकीय सेवाओं में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने देने पर विशेष जोर दिया।

सूचनार्थ

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राज्य स्तरीय पर्यावरण प्रभाव आकलन आर्थोरिटी राजस्थान सरकार के आदेश क्रमांक File no. RJ/25/SEAC2(06)/ MIN/ EC/1073/Cat. B1/2024-25 Jaipur, Dated-18/03/2026 के द्वारा मेसर्स युवराज सिंह पोसवाल, पता पोस्ट खिरनी, तहसील-मलारणा, डूंगर, खिरनी, जिला- सवाईमाधोपुर (राज.) को निकट ग्राम-जालिया॥, तहसील बिजयनगर, जिला ब्यावर (राज.) में स्थित प्लॉट नंबर 07, क्षेत्रफल 48.1556 हैक्टर, वास्ते खनिज रिवर बेड सेंड (बजरी) के लिए पर्यावरणीय स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। उपरोक्त स्वीकृति की प्रति SEIAA, एवं राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के कार्यालय पर जन साधारण के लिए उपलब्ध है।

मेसर्स युवराज सिंह पोसवाल

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

लोक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजीव शर्मा पुत्र प्रभाकर शर्मा निवासी शास्त्री नगर अजमेर राजस्व ग्राम लोहागल के खसरा नं. 917/927/1835 भू.सं. 1 जिसका क्षेत्रफल 140.97 वर्गगज भू.सं. जिसका क्षेत्रफल 125.08 वर्गगज भू.सं. 3 जिसका क्षेत्रफल 113.89 वर्गगज भू.सं. 4 जिसका क्षेत्रफल 204.81 वर्गगज भू.सं. 11 जिसका क्षेत्रफल 112.50 वर्गगज भू.सं. 12 जिसका क्षेत्रफल 138.94 वर्गगज भू. सं. 13 जिसका क्षेत्रफल 153.12 वर्गगज भू.सं. 14 जिसका क्षेत्रफल 182.68 वर्गगज भू.सं. 15 जिसका क्षेत्रफल 185 वर्गगज कुल 9 भूखण्डों की पत्रावली नियमन हेतु प्रक्रियाधीन है अतः किसी भी हितबद्धकारी को इस नियमन के संबंध में आपत्ति हो तो आम सूचना के 7 दिवस के भीतर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा नियमन कार्यवाही कर दी जायेगी।

- उपायुक्त, अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्री पीरू मोहम्मद पुत्र श्री उस्मान मंसूरी जाति मुसलमान निवासी राजनगर बिजयनगर जिला ब्यावर का प्लाट वाके ग्राम चौसला बिजयनगर तहसील बिजयनगर जिला ब्यावर मे स्थित भूमि खसरा नंबर 4018 मे विद्यमान प्लाट नंबर 01 है जो कि श्री पीरू मोहम्मद ने जरिये नोटेरीशुदा बेचान इकरारनामा दिनांक 30,/12,/2025 को श्री उस्मान मंसूरी पुत्र श्री अलाद्दीन मंसूरी से खरीद किया है जिसके चैन दस्तावेज मे बयनामा दिनांकित 25,/05 / 1985 (तुर्राब मोहम्मद के द्वारा उस्मान मंसूरी को विक्रय किया गया) गुम हो चुका है जिसकी काफी तलाश करने पर भी नही मिला है जिस संबंध मे श्री पीरू मोहम्मद द्वारा ऑनलाईन गुमशुदगी रिपोर्ट जरिये एलआर नंबर 3101026 / 2026 दिनांक 30,/03,/2026 को दर्ज करवाई जा चुकी है।

पीरू मोहम्मद,
निवासी राजनगर
बिजयनगर मो.-7737553050

आम सूचना

मैं मेरे पक्षकार श्री सुनील कुमार जाला पुत्र श्री सोहनलाल जाला निवासी म.नं. 113, आदर्श नगर, अजमेर मो.नं. 9331010131 के निर्देशानुसार सर्व साधारण को सूचित करता हूं कि दिनांक 19.03.2026 को मेरा पक्षकार अपने आदर्श नगर अजमेर स्थित मकान से अपनी सम्पत्ती प्लाट संख्या-113 आदर्श नगर अजमेर का अपने पिता श्री सोहनलाल जाला के हक में श्री बसन्ती राम पुत्र श्री सूरजमल अग्रवाल द्वारा निष्पादित असल पंजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 01 फरवरी 1960 व आदर्श नगर कोपरेटिव हाउसिंग सोसायटी अजमेर द्वारा श्री बसन्तीराम पुत्र श्री सूरजमल के हक में निष्पादित असल पंजीयत बैनामा दिनांक 16.06.1937 पंजीकृत को लेकर जा रहा था जा रास्ते में कहीं गिर गये है जो काफी प्रयास करने के बावजूद भी नहीं मिलें हैं अतः यदि किसी भी व्यक्ति को मेरे पक्षकार की सम्पत्ति के उक्त असल दस्तावेज मिले हों तो मेरे पक्षकार को उक्त पते पर लौटाने की कृपा करें ।

भवदीय- दिनेश कुमार मेहरा, एडवोकेट,
मो.-9414893246

NAME CHANGE

I, Kumari Rageeni, Daughter of Army No.18002243Y, Hav, Akshay Kumar Singh, Residing at Dhanari, Zamania, Ghazipur, U.P. 232330 have change my name from Rageeni to Kumari Rageeni vide affidavit no. CF 311121 dt 31/03/2026 at court campus Nasirabad

पुण्यतिथि मनाई

मदनगंज-किशनगढ़,(निस)। वीर गुर्जर युवा मंडल की और से कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला की पुण्यतिथि श्रद्धा पूर्वक मनाई गई। बैसला चौक सांवतसर स्थित मूर्ति के समक्ष पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। पूर्व सभापति जगदीप सिंह गुर्जर, युवा मंडल अध्यक्ष जयराम गुर्जर, देव सेना राष्ट्रीय अध्यक्ष धनजी तेडवा, शिक्षक जगमाल गुर्जर व पूर्व अध्यक्ष श्योजीराम चौहान ने कर्नल किरोड़ी के जीवन पर प्रकाश डालकर उनके द्वारा बताए हगये मार्ग पर चलने का आव्हान किया।

भगवान महावीर स्वामी के जन्मदिवस पर भव्य प्रभातफेरी निकाली

अजमेर, (कासं)। वैशाली नगर जैन श्वेताम्बर संस्था द्वारा अहिंसा के अवतार भगवान महावीर स्वामी के 2625 वें जन्मदिवस पर मंगलवार को प्रातः 6:30 बजे भव्य प्रभातफेरी निकाली।

प्रभातफेरी पार्श्वनाथ कॉलोनी स्थित स्थानक भवन से प्रारंभ होकर दिगंबर जैन मंदिर, पद्मावती मार्ग, नवरत्न मार्ग, शांतिपुरा, एलआईसी कॉलोनी, होटल मानसिंह, मुख्य मार्ग, रैंबुल रोड होती हुई आनासागर लिंक रोड पर समाप्त हुई। प्रभातफेरी का जगह जगह भव्य स्वागत किया गया। प्रभातफेरी में श्रावक सफेद वस्त्र एवं श्राविकाएं चूंदड़ी पहनकर भगवान महावीर के सिद्धांतों सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, जीओ और जीने दो के संदेश के साथ जैन धर्म की जयकारे लगाती चल रही थी। पुरुष हाथों में स्लॉगन की तख्तिया लेकर चल रहे थे। प्रभातफेरी में वैशाली संस्था के अध्यक्ष उम्मेदमल चौपड़ा, सचिव रमेश सिंघी सहित मेघराज खींवसरा, मिलपचंद रांका, मोहनलाल, हेमराज कोठारी, सुधीर, गजेन्द्र, प्रदीप, मुकेश सकलेचा, सुरेशमल कुमठ, डॉ. पीसी जैन, राजेश जैन, सुनील सुराना, डॉ. सीपी पोखरणा, प्रकाश भंडारी सहित सैकड़ो महिलाएं, बच्चे शामिल थे।

'जेएलएन अस्पताल के बाहर अवैध पार्किंग से एम्बुलेंस संचालन प्रभावित'

■ बार-बार शिकायतों के बावजूद नहीं थम रही समस्या, सड़क संकरी होने से मरीजों की जान पर बन रही आफत

अजमेर (कासं)। संभाग के सबसे बड़े जवाहर लाल नेहरू अस्पताल के आपातकालीन विभाग के बाहर अव्यवस्थित और अवैध पार्किंग एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। अस्पताल में आने-जाने वाली एम्बुलेंसों को यहां भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे आपातकालीन सेवाएं प्रभावित हो रही हैं।

जेएलएन अस्पताल, अधीक्षक अरविंद खरे ने बताया कि अस्पताल के मुख्य प्रवेश द्वार के बाहर चारपहिया वाहनों और एम्बुलेंसों को बेहतरीब तरीके से खड़ा कर दिया जाता है। इससे सड़क संकरी हो जाती है और कई बार हालात ऐसे बन जाते हैं कि मरीजों को लेकर आ रही एम्बुलेंस बीच रास्ते में ही फंस जाती हैं। समय पर उपचार नहीं मिलने की आशंका के चलते यह स्थिति मरीजों की जान के लिए खतरा बन रही है। अस्पताल प्रशासन ने इस समस्या को लेकर कई बार नगर निगम को अवगत भी कराया है। निगम द्वारा समय-समय पर कार्रवाई कर अवैध रूप से खड़े वाहनों को हटाया भी जाता है, लेकिन कुछ ही समय बाद फिर से वही स्थिति बन जाती है। स्थायी समाधान के अभाव में यह समस्या जस की तस बनी हुई है।

BANASTHALI VIDYAPITH

(Notified as Deemed to be University Under Section 3 of the UGC Act)

University for women: University with a difference

Banasthali Vidyapith, the world's largest fully residential university for women is NAAC 'A++', the second highest ranked women's university in the world having more than 18000 students on its 850-acre campus situated amidst rural setting in Rajasthan, having a distinct educational ideology and offering a variety of programmes from nursery up to doctoral level across a wide spectrum of disciplines to prepare enlightened citizens with strong value-base.

Programmes offered

ENGINEERING & TECHNOLOGY
B.Tech.* (Comp. Sc.& Engg./Comp. Sc.-Artificial Intelligence/Electronics & Comm./ Electronics & Instru./Electrical & Electronics/Mechatronics/ IT/Biotech./Chemical Engg./Electronics Engg.-VLSI Design and Technology)
M.Tech. Integrated* (Comp. Sc./Mechatronics)*
M.Tech. (Artificial Intelligence)
M.Tech. (Comp. Sc./IT)
M.Tech. (Robotics & Automation)
M.Tech. (VLSI Design) | **M.Tech.** (Remote Sensing)
M.Tech. (Biotechnology)
M.Tech. (Chemical Engineering)
Diploma (Electronics & Instru./ Electrical & Electronics/Mechatronics)*

MATHEMATICAL & PHYSICAL SCIENCES
B.Sc./B.Sc. Hons./B.Sc. Hons. with Research$ (Phy./Chem./Maths/Comp.Sc./Elect./Stats/Data Science)
BCA/BCA Hons./BCA Hons. (AI/Data Analytics)$/ **BCA Hons. with Research** (AI/Data Analytics)$
M.Sc. (Computer Science) | **M.Sc.** (Physics)
M.Sc. (Data Science) | **M.Sc.** (Electronics)
M.Sc. (Mathematics/Statistics/Operations Research)
MCA/PGDCA

ARCHITECTURE & PLANNING
B.Arch.+

LAW
B.A./BBA/B.Com. LL.B. (Integrated)
LL.M.* (Constitution Law/Criminal Laws & Forensics)

LIFE SCIENCES
B.Sc./B.Sc. Hons./B.Sc. Hons. with Research$ (Chemistry, Zoology, Botany & Microbiology)
B.Sc./B.Sc. Hons./B.Sc. Hons. with Research$ (Biotechnology) | **B.Pharm.***
M.Pharm. (Pharmaceutical Chemistry, Pharmaceutics, Pharmacology)
M.Sc. (Chemistry) | **M.Sc.** (Microbiology)
M.Sc. (Botany) | **M.Sc.** (Zoology)
M.Sc. (Biotechnology) | **M.Sc.** (Bioinformatics)
M.Sc. (Applied Microbiology & Biotechnology)

EARTH SCIENCES
B.Sc./B.Sc. Hons./B.Sc. Hons. with Research$ (Geology/Geography)
M.Sc. (Geography) | **M.Sc.** (Geology)
M.Sc. (Environmental Science)

MANAGEMENT STUDIES
B.Com./B.Com. Hons./B.Com. Hons. with Research$
BBA/BBA Hons./BBA Hons. with Research$
MBA (Integrated) | **BSW** | **M.Com.**
MBA* (Business Analytics/Entrepreneurship/HR/ Finance/Marketing/Aviation/Public Policy/Banking and Finance Management)

FINE ARTS
M.A. Music (Vocal/Instru.), Dance (Kathak/Bharatnatyam), Dramatic Art (Theatre), Drawing and Painting, **MPA#, BPA#**
B.V.A. Painting#

AVIATION
B.Sc./B.Sc. Hons. (Aviation Science)

DESIGN
B.Des. (Fashion & Lifestyle Design/Communication Design/Industrial Design)
M.A. (Textile Designing) | **M.Des.**

JOURNALISM & MASS COMMUNICATION
B.A./B.A. Hons./B.A. Hons. with Research$ (Journalism and Mass Communication)
M.A. (Journalism and Mass Communication)

HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
B.A./B.A. Hons./B.A. Hons. with Research$ (Hindi, Sanskrit, English, German, French, Sociology, History, Maths, Statistics, Applied Statistics, Political Sc., Public Adm., Economics, Management, Music, Dance, Drama & Theatre Art, Drawing & Painting, Home Science, Textile Designing, Computer Application, Geography, Psychology)
M.A. (Economics, History, Sociology, Political Sc., Psychology, Geography, Mathematics, Statistics, Operations Research, Hindi, English & Sanskrit)
Master of Social Work

EDUCATION
ITEP B.A.B.Ed*/B.Sc.B.Ed* (Secondary/Middle), **B.Ed, M.Ed**

HOME SCIENCE
B.Sc./B.Sc. Hons./B.Sc. Hons. with Research$ (Home Science)
B.Sc./B.Sc. Hons./B.Sc. Hons. with Research$ (Home Science) Food Science & Nutrition
M.Sc. (Home Science) (Human Development/Food Science & Nutrition/Clothing & Textile)

NURSING
B.Sc. Nursing*

*Admission to this course shall be based on all India merit-cum-aptitude test/NCET.
One year PG Programmes available for 4 years Hons./Hons. with Research Graduates.
Foreign/NRI Admissions : A limited number of seats are available for direct admission of Foreign/NRI students in select courses.
Ph.D. : Visit the University website for further details of Ph.D. in all Subjects mentioned above.

$Lateral entry also available
For queries related to lateral entry call: +91-8946925269

Toll Free 1800-270-5855

Admission 2026-27
Scan to explore for detailed information

+JEE-2 & NATA qualified
#Subject to Approved

LAST DATE FOR APPLICATION
30 April, 2026

SCHOOL EDUCATION DIVISION
New admissions shall be made only to classes VI*, IX* & XI Arts/Science(Maths/Bio)/Commerce.
For admission enquiry: +91-9116624101, +91-9352878388
Email: school_admissions@banasthali.in

Enquiries can be made at
• For general enquiry:
+91-9352879844, +91-9352879855, +91-9352879866
• For UG/PG Admissions:
+91-9116624102 (Engineering & Technology)
+91-9116624103 (Mathematical & Physical Sciences)
+91-9116624104 (Life Science, Aviation, Earth Sc.)
+91-9116624105 (Law & Management Studies)
+91-9352879847 (Humanities, Social Sc., Home Sc.)
+91-9352803156 (Design, Architecture, Fine Arts, Education & Nursing)
Email: ug_admissions@banasthali.in; pg_admissions@banasthali.in

How to Apply
For each programme a separate application is required through either:
Option 1 : Online submission of application at the University's website: http://www.banasthali.org or
Option 2 : Send a DD for Pre-application fee of Rs. 1000/- in favour of "Banasthali Vidyapith" Payable at Banasthali/Jaipur to: Secretary-Banasthali Vidyapith, P.O. Banasthali Vidyapith-304022 (Raj.)
Scan to explore

Scholarships
The Vidyapith provides financial support to the needy students in the form of merit-cum-need scholarships. It also encourages meritorious students by awarding them merit scholarships.

BANASTHALI VIDYAPITH
P.O. Banasthali Vidyapith (Raj.) 304022 • Phone : +91-1438228384, +91-1438228990
Mob.: +91-9352879844, +91-9352879855, +91-9352879866 • Email : admissions@banasthali.in
Visit us at http://www.banasthali.org
Connect with us on www.facebook.com/banasthali.org
Connect with us on www.instagram.com/banasthali_vidyapith_official

NAAC 'A++' 3.63
THE World University Rankings 2025
nirf All India Rank
QS University Rankings Asia

नसीराबाद क्षेत्र में मूसलाधार बारिश और ओलावृष्टि से फसलें तबाह

तूफानी हवाओं से कई स्थानों पर पेड़ धराशायी हो गए, कई जगह विद्युत खंभे भी गिर गये

नसीराबाद क्षेत्र में आई तेज आंधी से कई जगह विद्युत पोल गिर गये।

- आंधी-बारिश और ओलों से कई ग्रामीण इलाकों में खेतों में खड़ी फसलें और कटकर पड़ी फसलें पूरी तरह भीग गई और ओलों से खराब हो गई
- कोटा चौराहे पर तेज हवा के झोंकों से एक केबिन की लोहे की चद्दर वाली छत उड़ गई और एक युवक पर जा गिरी

नसीराबाद, (निसं)। नसीराबाद क्षेत्र में मंगलवार दोपहर करीब 2 बजे मौसम ने अचानक रौद्र रूप धारण कर लिया। तेज आंधी, मूसलाधार बारिश और ओलावृष्टि ने पूरे इलाके में जमकर कहर बरपाया। तूफानी हवाओं के चलते कई स्थानों पर पेड़ धराशायी हो गए, वहीं जगह-जगह विद्युत खंभे उखड़कर गिर पड़े, जिससे क्षेत्र में जनजीवन पूरी तरह प्रभावित हो गया।

जानकारी के अनुसार तूफान का सबसे बड़ा असर कोटा चौराहे पर देखने को मिला, जहां तेज हवा के झोंकों से एक दुकान/केबिन की लोहे की चद्दर वाली छत उड़ गई और पास में खड़े एक युवक पर जा गिरी। युवक छत के नीचे दब गया और गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई और अफरा-तफरी का माहौल बन गया। स्थानीय लोगों ने तुरंत राहत कार्य करते हुए युवक को बाहर निकाला और नसीराबाद राजकीय चिकित्सालय पहुंचाया। चिकित्सकों के अनुसार युवक का उपचार जारी है, फिलहाल उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है और जान का खतरा टल गया है। इस हादसे में दुकान को भी भारी नुकसान हुआ है।

उधर आंधी-बारिश और ओलों ने किसानों की मेहनत पर भी पानी फेर दिया। देरांठू, बामणिया बालाजी क्षेत्र, भटियाणी सहित आसपास के ग्रामीण इलाकों में खेतों में खड़ी फसलें और कटकर पड़ी फसलें पूरी तरह भीग गई और ओलों से खराब हो गई। किसानों का कहना है कि इस प्राकृतिक आपदा से उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। इसी दौरान भटियाणी-भींडर मार्ग पर बामणिया बालाजी धाम के पास एक विद्युत खंभा टूटकर नीचे गिर गया, जिससे कई इलाकों में बिजली आपूर्ति ठप हो गई। अचानक आए इस तूफान ने पूरे क्षेत्र में भय और चिंता का माहौल बना दिया। प्रशासन की ओर से लोगों को सतर्क रहने, खुले स्थानों पर नहीं जाने और खराब मौसम के दौरान सुरक्षित स्थानों पर रहने की अपील की गई है।

उदयपुर में तलवार से हमला कर युवक की हत्या, आरोपी फरार

- घटना के दूसरे दिन भी मृतक का पोस्टमार्टम नहीं हुआ
- परिजन मुआवजे एवं आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े

उदयपुर, (निसं)। जिले के पाटिया थाना क्षेत्र खेड़ा घाटी फला गमेती फला गांव रोड़ पर आपसी रंजिश के चलते हमलावर तलवार से हमला कर युवक की हत्या कर फरार हो गए। आक्रोषित ग्रामीणों ने मुआवजा दिलाने एवं आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग पर अड़े हुए हैं। मृतक का शव खेरवाड़ा चिकित्सालय मोर्चरी में पड़ा है।

प्रकरण के अनुसार पाटिया थाना क्षेत्र खेड़ा घाटी फला गमेती फला निवासी निलेश उर्फ पप्पू (35) पुत्र लालजी गरासिया की गांव के ही अनिल, विपिन, जयदीपक, बद्री, हितेश व साथी तलवार से हमला कर हत्या कर फरार हो गए। निलेश अहमदाबाद में बिल्डिंग बनाने वाली कंस्ट्रक्शन कंपनी में मजदूरी करता था, जो चचेरे भाई की शादी में गांव आया था। सोमवार सांय वह गांव में ही शादी समारोह में शामिल होने गया था, जहां आरोपी भी मौजूद थे। रात में वापस घर लौट रहा था। इस दौरान बीच रास्ते मिले आरोपी तलवार से हमला कर फरार हो गए। हमले में घायल निलेश की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पाटिया थानाधिकारी देवेन्द्रसिंह राव मय टीम ने मौके पर पहुंच कर मृतक के शव को खेरवाड़ा चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाया। इधर घटना से आक्रोषित ग्रामीण मुआवजा देने एवं आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग पर अड़ गए। जिससे क्षेत्र में तनाव हो गया। इस पर खेरवाड़ा, पहाड़ा पुलिस थाने से जाब्ता मंगवाकर तैनात किया है। घटना के दूसरे दिन दोनों पक्षों की हुई पंचायत में निर्णय नहीं होने से मौके पर जाब्ता तैनात है। बुधवार को वार्ता होने के बाद पोस्टमार्टम हो पाएगा। प्रारंभिक अनुसंधान में पता चला है कि पांच वर्ष पूर्व निलेश व आरोपियों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। उसकी रंजिश के चलते हत्या करने की जानकारी सामने आई है।

दो बाइकों की टक्कर में एक युवक की मौत

- पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवा परिजनों को सौंपा

डूंगरपुर, (निसं)। जिले के सदर थाना क्षेत्र में नवाघरा रोड पर सड़क हादसे में एक बाइक सवार की मौत हो गई। तेज रफ्तार बाइक ने दूसरी बाइक को टक्कर मार दी थी। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया है।

सदर थाने के हैड कॉन्स्टेबल के अनुसार गरदूना निवासी कमलाशंकर ननोमा ने इस संबंध में दर्ज रिपोर्ट में बताया कि उसका भाई मुकेश ननोमा शिशोद से अपने घर लौट रहा था। नवाघरा स्कूल के पास सामने से आ रही एक तेज रफ्तार बाइक ने मुकेश की बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में मुकेश गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तुरंत शिशोद प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद मुकेश को डूंगरपुर जिला अस्पताल रेफर किया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर पुलिस और परिजन जिला अस्पताल पहुंचे। पुलिस ने शव को मोर्चरी में रखवाया, जहां पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

फतेहपुर में युवक की टॉवर से गिरने से मौत

- युवक कुछ समय से मानसिक रूप से परेशान चल रहा था

फतेहपुर, (निसं)। इलाके के सदर थाना क्षेत्र के शेखीवास गांव में एक युवक की टॉवर से गिरने से मौत हो गई। घटना के बाद गांव में शोक का माहौल है।

सदर थाना प्रभारी सुरेन्द्र देगड़ा ने जानकारी देते हुए बताया कि मृतक युवक पिछले कुछ समय से मानसिक रूप से परेशान चल रहा था। उसका मनोरोग संबंधी उपचार भी जारी था और परिजन के अनुसार वह बीते कई दिनों से दवाइयां ले रहा था। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि युवक किसी कारणवश टॉवर पर चढ़ गया। वहां से गिरने के कारण उसे मौके पर ही गंभीर चोटें आईं। घटना की सूचना मिलते ही उसे तत्काल फतेहपुर के धानुका उप जिला अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल में पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने इस संबंध में मर्ग दर्ज कर लिया है और पूरे घटनाक्रम की जांच शुरू कर दी है। पुलिस द्वारा मामले के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए कारणों का पता लगाया जा रहा है।

अनूपगढ़ में तेज बारिश के साथ ओलावृष्टि, किसान चिंतित

- तेज बारिश और हवाओं के कारण कई जगहों पर फसलें खेतों में गिर गई और जलभराव की स्थिति भी बन गई
- किसानों का कहना है कि अगर मौसम इसी तरह खराब बना रहा तो उन्हें भारी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ सकता है

अनूपगढ़, (निसं)। यहां मौसम ने अचानक करवट बदली। दिनभर की उमस और गर्मी के बाद दोपहर करीब 12:30 बजे आसमान में काले बादल छा गए और कुछ ही देर में तेज बरसात शुरू हो गई। इस बदलाव से जहां लोगों को गर्मी से राहत मिली, वहीं किसानों की चिंताएं बढ़ गई है। चने के आकार के ओले गिरे। गांव 20 एलएम क्षेत्र में बारिश के साथ ओलावृष्टि भी हुई। यहां चने के आकार के ओले गिरने से खेतों में खड़ी फसलों को नुकसान की आशंका जताई जा रही है। इस समय गेहूं, सरसों और चने की फसलें कटाई के करीब है, ऐसे में ओले गिरने से फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों प्रभावित हो सकते हैं।

जानकारी के अनुसार गांव 20 एलएम क्षेत्र में बारिश के साथ चने के आकार के ओले गिरे, जिससे फसलों को नुकसान होने की संभावना है। तेज बारिश और हवाओं के कारण कई जगहों पर फसलें खेतों में गिर गई और जलभराव की स्थिति भी बन गई। किसानों का कहना है कि अगर मौसम इसी तरह खराब बना रहा तो उन्हें भारी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ सकता है। मौसम विभाग के अनुसार, क्षेत्र में पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से यह बदलाव आया है और अगले कुछ समय तक मौसम ऐसा ही बना रह सकता है। प्रशासन ने किसानों को सतर्क रहने और फसलों की सुरक्षा के उपाय अपनाने की सलाह दी है।

हनुमानगढ़ में पश्चिमी विक्षोभ से मौसम बदला

हनुमानगढ़, (निसं)। जिले में पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से मौसम में बदलाव आया है। शहर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक बादल छाए हुए हैं और कई स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश दर्ज की गई है। इससे तापमान में गिरावट आई है, लेकिन किसानों की चिंता बढ़ गई है।

मौसम विभाग के अनुसार, पश्चिमी विक्षोभ का असर बुधवार तक बना रहेगा। पूर्वानुमान रिपोर्ट में बादल छाए रहने के साथ हल्की बारिश या बूंदाबांदी की संभावना जताई गई है। इसके अलावा 3 अप्रैल को गरज-चमक के साथ फिर से बारिश के आसार हैं, जबकि अन्य दिनों में आंशिक बादल छाए रहने की उम्मीद है। वहीं अधिकतम तापमान लगभग 31 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 19-20 डिग्री सेल्सियस के आसपास दर्ज किया गया। दिनभर बादल छाए रहने के कारण धूप कम रही और तेज हवाओं के चलते ठंडक महसूस की गई। रबी फसलों की कटाई के बीच मौसम के इस बदलाव ने किसानों की चिंता बढ़ा दी है। जिले में गेहूं की फसल कटाई के लिए तैयार खड़ी है, वहीं सरसों की कटाई पहले से ही जारी है। कई किसानों ने सरसों की फसल काटकर खेतों में ढेर लगा रखे हैं। किसानों का कहना है कि यदि बारिश का सिलसिला जारी रहता है तो फसलों को भारी नुकसान हो सकता है। कटकर खेतों में पड़ी सरसों भीगने से खराब होने का खतरा है, जबकि तेज हवाओं के कारण खड़ी गेहूं की फसल गिरने की आशंका है।

14 साल से फरार इनामी आरोपी को पकड़ा

डूंगरपुर, (निसं)। धंबोला थाना पुलिस ने 14 साल से फरार एक इनामी आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी विनोदसिंह राठौड़ को उदयपुर में पकड़ा गया, जहां वह अपनी पहचान छिपाकर रह रहा था।

धंबोला थानाधिकारी ने बताया कि विनोदसिंह राठौड़ जो धरियावाद, प्रतापगढ़ का निवासी है, उदयपुर के पंचवटी क्षेत्र में एक सहकारी उपभोक्ता भंडार में काम कर रहा था। पुलिस ने ग्राहक बनकर उसे गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार यह मामला वर्ष-2014 का है। पीड़िता ने अपने पति और ससुराल पक्ष के खिलाफ दहेज मांगने और मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया था। शिकायत में बताया कि विवाह के बाद से ही ससुराल पक्ष द्वारा दहेज की मांग को लेकर पीड़िता को लगातार परेशान किया जाता था। उसे कई बार घर से भी निकाल दिया गया था।

आकाशीय बिजली गिरने से एक ही परिवार के तीन लोग झुलसे

घायलों को घडसाना के सरकारी अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद बीकानेर रेफर किया

- आकाशीय बिजली का करंट विद्युत तारों से होते हुए लगभग 500 मीटर की दूरी पर बनी सात ढाणियों में फैल गया था

अनूपगढ़, (निसं)। श्रीगंगानगर में अनूपगढ़ के गांव 20 एलएम में मंगलवार को आकाशीय बिजली गिरने से एक ही परिवार के तीन लोग झुलस गए। इनमें डेढ वर्षीय सन्नी, ढाई वर्षीय इशांत और उनकी 15 वर्षीय मौसी लक्ष्मी शामिल हैं। तीनों घायलों को घडसाना के सरकारी अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद बीकानेर हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है।

विद्युत पोल पर गिरी थी बिजली

जानकारी के अनुसार गांव 20 एलएम के पास खेत में खड़े एक विद्युत पोल पर आकाशीय बिजली गिरी। इसके बाद आकाशीय बिजली का करंट विद्युत तारों से होते हुए लगभग 500 मीटर की दूरी पर बनी सात ढाणियों में फैल गया। जिस ढाणी में यह हादसा हुआ, वहां बच्चे अपनी मौसी के साथ आंगन में कमरे के दरवाजे के पास खेल रहे थे। लोहे के दरवाजे में करंट आने से तीनों झुलस गए। घायल बच्चों के चाचा मक्खन राम ने बताया कि उनके बड़े भाई सुरेंद्र ईंट-भट्ठे पर मजदूरी करते हैं। घटना के समय सुरेंद्र काम पर गए हुए थे। घर पर उनके दो बेटे सन्नी और इशांत, चार वर्षीय बेटी संध्या, उनकी मौसी लक्ष्मी और सुरेंद्र की पत्नी मौजूद थी, जो हादसे का शिकार हो गई।

गंगापुर सिटी में हल्की बूंदाबांदी हुई

- चूरू जिले में ओले गिरने से खेतों में खड़ी फसलों को काफी नुकसान हुआ है, जिससे किसानों को निराशा हाथ लगा

गंगापुर सिटी, (निसं)। पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मौसम में अचानक बदलाव आया है। सोमवार शाम को हल्की बूंदाबांदी हुई, जिसके बाद मंगलवार सुबह भी आसमान में बादल छाए रहे। इस बदलाव से तापमान में गिरावट दर्ज की गई है, जिससे किसानों की चिंता बढ़ गई है।

जानकारी के अनुसार सोमवार शाम करीब 5.30 बजे से बादल छाने शुरू हुए और लगभग 6.30 बजे हल्की बूंदाबांदी हुई। मंगलवार सुबह कुछ देर बाद मौसम साफ हो गया, लेकिन हवा में ठंडक बनी रही। इस बारिश से आमजन को गर्मी से थोड़ी राहत मिली है। क्षेत्र में गेहूं की फसल पक चुकी है और कई स्थानों पर कटाई जारी है। वहीं, सरसों और चने की कटी हुई फसलें खेतों में पड़ी है। सोमवार शाम की बूंदाबांदी से ये कटी फसलें भीग गईं, जिससे उनके खराब होने की आशंका बढ़ गई है। किसानों का कहना है कि यदि आने वाले दिनों में और बारिश या तेज आंधी आती है, तो फसलों को भारी नुकसान हो सकता है। खेतों में खड़ी सौंफ की फसल के लिए भी यह मौसम अनुकूल नहीं माना जा रहा है, क्योंकि नमी बढ़ने से उसकी गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, यदि मौसम पूरी तरह साफ नहीं होता और बारिश के साथ तेज हवाएं चलती है, तो किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। भीगने से गेहूं सहित अन्य फसलों के दानों की चमक फीकी पड़ सकती है, जिससे मंडियों में उचित दाम मिलने में परेशानी आ सकती है। फिलहाल किसान मौसम पर लगातार नजर बनाए हुए हैं और जल्द साफ मौसम की उम्मीद कर रहे हैं।

चूरू में गिरे बेर के आकार के ओले

चूरू, (निसं)। जिला मुख्यालय के निकटवर्ती कस्बे रतननगर व ग्राम ढ़ाणी लाल सिंह पुरा सहित आसपास के कई गांवों में मंगलवार दोपहर बाद लगभग पांच मिनट तक ओले गिरे। तेज बारिश के बाद आए अंधड़ के साथ बेर के आकार के ओले गिरे। ओले गिरने से एक बारगी वाहनों के पहिए थम गए। ओले गिरने से खेतों में खड़ी फसलों को काफी नुकसान हुआ है, जिससे किसानों को निराशा हाथ लगी।

दोहरे हत्याकांड के दो आरोपी गिरफ्तार, बाइक जब्त

- मामले में पूर्व में सात आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं तथा विधी से संघर्षरत तीन बाल अपचारी को डिटेन किया गया था

उदयपुर, (निसं)। बाघपुरा थाना पुलिस ने दोहरे हत्याकांड मामले में फरार दो आरोपियों को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से वारदात में प्रयुक्त बाइक जब्त की है। वहीं पुलिस ने पूर्व में कुछ आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था।

प्रकरण के अनुसार 14 मार्च को पीड़ित आशीष पुत्र माधु निवासी चौखड़ी बाघपुरा ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी कि 13 मार्च को मुझे मेरी पत्नी अनीता के घर सैलाणा जाना था। मैं व मेरे भुआ के लड़के भैरूलाल व दोस्त सुखलाल उर्फ सुरेश तीनों बाइक पर सेलाणा के लिए निकले। रात में सेलाणा घाटी फला स्कूल के समीत सामने से आए 6-7 बाइक पर 10-12 व्यक्ति जिनमें हरीश, हिमांशु, लक्ष्मण, पंकु उर्फ प्रकाश, मनीष, करण, जितु उर्फ जितेन्द्र, प्रभूलाल व अन्य व्यक्ति शराब के नशे में थे, जिन्होंने रोक कर साइड में चलने की बात को लेकर एजरात किया, जिससे विवाद होने पर मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान प्रभु ने अपने हाथ में रखी बीयर की बोतल फोड़कर भैरूलाल के पेट में मार दी तथा मुझ व सुखलाल उर्फ सुरेश पर तलवार से हमला कर फरार हो गए। बचाव में आए सुमित पर भी आरोपी हमला कर फरार हो गए। सूचना मिलने पर आई पुलिस की गाड़ी ने सभी को चिकित्सालय पहुंचाया। जहां भैरूलाल की मौत हो गई। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृता दुहन के निर्देश पर बाघपुरा थानाधिकारी वेलाराम के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए दिनेश पुत्र धन्ना निवासी पालिया खेड़ा बाघपुरा, पुष्कर उर्फ टक्कर पुत्र मांगीलाल निवासी सेलाण निचलाफला बाघपुरा को गिरफ्तार किया। इस मामले में पूर्व में सात आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं तथा विधी से संघर्षरत तीन बाल अपचारी डिटेन हो चुके हैं।

पिस्टल सहित युवक गिरफ्तार

- आरोपी से पुलिस हथियार के संबंध में पूछताछ कर रही है

जोधपुर, (कासं)। शहर की लूणी पुलिस ने फींच गांव में एक संदिग्ध युवक को पकड़ उसके पास से देशी पिस्टल मय मैंगजीन को बरामद किया। आरोपी के खिलाफ ऑर्म्स एक्ट में केस बनाया गया। उससे अब हथियार के संबंध में पूछताछ जारी है। लूणी थाने हैड कांस्टेबल गणपतलाल सायंकालीन गश्त पर थे। तब फींच में संदिग्ध युवक नजर आने पर उसकी तलाशी ली गई। युवक के पास में देशी पिस्टल और मैंगजीन मिली। इस पर युवक आथुणी की ढाणी जोलियाली झंवर निवासी राकेश पुत्र थानाराम को गिरफ्तार कर लिया गया। वहीं भगत की कोठी पुलिस थाने के एसआई गिरधारीलाल ने पीली टंकी भगत की कोठी क्षेत्र में एक स्थान पर रेड देकर अवैध रूप से चल रहे हुक्काबार को पकड़ा। संचालक खेतसागर जेग्रनिया निवासी कैलाश के खिलाफ केस दर्ज किया गया।

गांजा तस्करी मामले में एक गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। अवैध गांजा तस्करी मामले में एक वर्ष से फरार आरोपी को सायरा थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

जिला पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृता दुहन के निर्देश पर चलाए जा रहे तलाशी अभियान के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोपालस्वरूप मेवाड़ा, पुलिस उप अधीक्षक गोपाल चंदेल के सुपरविजन में सायरा थानाधिकारी कानाराम के नतृत्व में गठित दल ने गोगुन्दा थोन के प्रकरण में अवैध गांजा तस्करी मामले में फरार आरोपी गोपाल पुत्र अमरा निवासी नाईयों का गुडा गोगुन्दा को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि डेढ वर्ष पूर्व जोगीवड़ कोटडा से अवैध गांजा लेकर गोगुन्दा जा रहा था। पुलिस के आने की सूचना मिलने पर एनएच 27 डोली होटल से आगे एक निर्माणाधीन इमारत के पास झाड़ियों में 7.656 किलोग्राम गांजा छिपा दिया था। इस पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया था।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक (विज्ञान, वाणिज्य ,कला वर्ग व वरिष्ठ उपाध्याय) परीक्षा 2026 की उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिकाओं की स्केन फोटो प्रति ऑनलाईन प्राप्त करने हेतु परीक्षार्थियों के सूचनार्थ

उच्च माध्यमिक (विज्ञान, वाणिज्य ,कला वर्ग व वरिष्ठ उपाध्याय) परीक्षा 2026 का परिणाम दिनांक 31.03.2026 को घोषित किया गया है। संवीक्षा एवं उत्तर-पुस्तिका की स्केन फोटो प्रति प्राप्त करने हेतु बिना विलम्ब शुल्क दिनांक 07.04.2026 एवं विलम्ब शुल्क सहित दिनांक 10.04.2026 तक ई-मित्र पर अथवा स्वंय के स्तर पर ऑनलाईन आवेदन कर सकते है। विस्तृत जानकारी, नियम, निर्देश, शर्ते व आवेदन पत्र प्रारुप/प्रक्रिया आदि बोर्ड वेबसाईट **www.rajeduboard.rajasthan.gov.in** पर एवं दिनांक 31.03.2026 को अपलोड की गई विज्ञप्ति में देखे।

सचिव

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा-2026 की उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा एवं उत्तर पुस्तिकाओं की स्कैन प्रति ऑनलाईन प्राप्त करने हेतु व परीक्षार्थियों के सूचनार्थ

उच्च माध्यमिक परीक्षा-2026 में प्रविष्ठ हुए सभी परीक्षार्थी, परीक्षा परिणाम घोषणा तिथि से 07 दिवस में एवं उसके पश्चात् आगामी 03 दिवस में विलम्ब शुल्क से उत्तर पुस्तिका की संवीक्षा कराने एवं संवीक्षा उपरान्त स्कैन प्रति प्राप्त करने हेतु बोर्ड वेबसाईट **www.rajeduboard.rajasthan.gov.in** पर **SCRUTINY-2026** लिंक पर नियत तिथि तक (स्वप्रमाणित आई.डी. अपलोड कर) ई- मित्र अथवा अभ्यर्थी स्वंय के स्तर से बोर्ड वेबसाईट पर सीधे ऑनलाईन आवेदन कर सकते हैं। सीधे आवेदन करने पर शुल्क नेट बैंकिंग/डेबिट/क्रेडिट कार्ड से तथा ई-मित्र से आवेदन करने पर शुल्क (सेवा शुल्क सहित) ई-मित्र पर जमा कराना होगा। विस्तृत जानकारी बोर्ड वेबसाईट से ली जा सकती है। **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा अधिनियम 1957 के तहत बने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा विनियम 1957 के अध्याय 16 नियम (13) (5) के प्रावधान अनुसार संवीक्षा में उत्तर-पुस्तिकाओं के पुनःजांच (Re-Examination) करना समाविष्ट नहीं है।** संवीक्षा के अंतर्गत उत्तर पुस्तिका में प्रदत्त अंकों के योग में भिन्नता, अन्दर-बाहर (केजिंग) में भिन्नता, योग में त्रुटि, किसी प्रश्न में अंक नहीं दिये गये हों, उत्तर पुस्तिका/अंकतालिका में प्रदत्त अंकों में भिन्नता आदि त्रुटियों का निवारण करने की दृष्टि से की जाती है। अन्तिम तिथि तक प्राप्त सभी आवेदनों को कमबद्ध/पंजीकरण कर SMS द्वारा परीक्षार्थी के प्रार्थना-पत्र में अंकित मोबाईल नं. पर पंजीकरण संख्या एवं आवेदित विषयों की सूचना अन्तिम दिनांक के पश्चात् दी जावेगी। संवीक्षा की नियत प्रकिया पूर्ण कर प्रतिदिन निस्तारित प्रकरणों का परिणाम/आवेदित विषय की उत्तर-पुस्तिका वेबसाईट पर दिये लिंक पर अपलोड कर आवेदित मोबाईल नं. पर SMS द्वारा 'Password' उपलब्ध करवाया जावेगा। **परीक्षार्थी अपनी उत्तर-पुस्तिका ऑनलाईन देखकर डाउनलोड/प्रिन्ट कर सकेगें। ऑनलाईन आवेदन पत्र में परीक्षार्थी अपना स्वयं का सही मोबाईल नम्बर व ई-मेल अंकित करें। मोबाईल नं. व ई-मेल गलत अंकित करने पर परीक्षार्थी स्वयं जिम्मेदार रहेगा। एक मोबाईल नम्बर व ई-मेल को एक बार ही प्रयुक्त किया जा सकेगा। ई-मित्र कियोस्क धारक का मोबाईल नम्बर/ ई-मेल दर्ज करना अनुचित एवं नियम विरूद्ध माना जावेगा।** सभी विषयों में संवीक्षा परिणाम का संदेश प्राप्त होने की तिथि से निर्धारित 05 दिवस की अवधि में उ0पु0 का अवलोकन कर यदि कोई आपत्ति हो तो निकटतम ई-मित्र द्वारा अथवा सीधे आवेदन-पत्र भरकर/प्रमाण संलग्न कर निर्धारित शुल्क रू. 100/- प्रति विषय के साथ में ऑनलाईन आपत्ति दर्ज कर सकते हैं। ऑफलाईन आवेदन स्वीकार्य नहीं होगें।

नोटः 1. विस्तृत जानकारी, नियम, निर्देश, शर्तें आवेदन पत्र प्रारूप/प्रक्रिया आदि बोर्ड वेबसाईट पर उपलब्ध है। 2. समस्त परीक्षाओं के परिणाम घोषणा दिवस से उक्त निर्धारित समयावधि में आवेदन किया जा सकता है। 3. निर्धारित तिथि के बाद व डाक से प्राप्त आवेदन-पत्र व आपत्ति स्वीकार्य नहीं होंगी। 4. किसी भी प्रकार की जानकारी/आवेदक अपने संवीक्षा की वर्तमान **STATUS** की जानकारी बोर्ड वेबसाईट पर **'SCRUTINY-2026'** लिंक पर प्राप्त की जा सकती है। 5. एक परीक्षार्थी को आवेदन हेतु एक ही अवसर देय होगा। अतः एक बार ही आवेदन में वांछित सभी विषय (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक) अंकित करें। 6. संवीक्षा/आपत्ति में अंकों में कमी अथवा वृद्धि के उपरान्त परिणाम/अंकों में संशोधन होगा तदनुसार परिणाम/संशोधित अंक प्रभावी होगे एवं उसी अनुरुप संशोधित अंकतालिका जारी की जायेगी। 7. संवीक्षा उपरान्त आवेदित विषय/विषयों में अंक परिवर्तन होने अथवा नहीं होने की किसी भी स्थिति में संवीक्षा प्रक्रिया शुल्क लौटाया नहीं जायेगा।

सचिव

अंतिम संस्कार के दौरान मधुमक्खियों का हमला, 50 से अधिक लोग घायल

तीन लोगों की स्थिति गंभीर होने से प्राथमिक उपचार के बाद बानसूर रेफर किया

- कई ग्रामीणों ने पास के खेतों में छिपकर तो कुछ ने दौड़कर नजदीकी घरों में शरण लेकर खुद को बचाया

अलवर, (निसं)। अलवर जिले के बानसूर उपखंड स्थित रामपुर गांव में मंगलवार को एक बुजुर्ग के अंतिम संस्कार के दौरान अचानक हजारों मधुमक्खियों ने लोगों पर हमला कर दिया। इस हमले में करीब 50 से अधिक लोग घायल हो गए, जिससे शमशान घाट पर अफरा-तफरी और चीख-पुकार मच गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार रामपुर गांव में ग्रामीण रीति-रिवाजों के साथ अंतिम संस्कार की प्रक्रिया चल रही थी। बड़ी संख्या में ग्रामीण और रिश्तेदार दिवंगत को अंतिम विदाई देने के लिए शमशान घाट पर एकत्र हुए थे। इसी दौरान, पास के एक पेड़ पर लगे मधुमक्खियों के बड़े छत्ते में अज्ञात कारणों से हलचल हुई और देखते ही देखते हजारों मधुमक्खियों का झुंड लोगों पर टूट पड़ा। जैसे ही मधुमक्खियों ने हमला किया, वहां मौजूद बुजुर्ग, युवा और बच्चे अपनी जान बचाने के लिए भागने लगे। इस दौरान लोग धुएं और कपड़ों का सहारा लेने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन मधुमक्खियों के झुंड ने उन्हें संभलने का मौका नहीं दिया। कई ग्रामीणों ने पास के खेतों में छिपकर तो कुछ ने दौड़कर नजदीकी घरों में शरण लेकर खुद को बचाया।

घटना की सूचना मिलते ही गांव में हड़कंप मच गया। ग्रामीणों ने तत्परता दिखाते हुए निजी वाहनों और एंबुलेंस की मदद से घायलों को तुरंत रामपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। सीएचसी में तैनात चिकित्सकों और नर्सिंग स्टाफ ने घायलों का उपचार शुरू किया। अधिकांश लोगों के चेहरे, हाथ और सिर पर मधुमक्खियों के डंक के निशान थे। घायलों में से 3 लोगों की स्थिति गंभीर होने के कारण उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद तुरंत बानसूर उप जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। चिकित्सा अधिकारियों के अनुसार वर्तमान में सभी घायलों की स्थिति स्थिर है और डॉक्टरों की टीम लगातार उनकी निगरानी कर रही है।

हादसे की जानकारी मिलते ही स्थानीय प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। अस्पताल में घायलों के परिजनों की भारी भीड़ जमा हो गई। अंतिम संस्कार जैसी शांत और शोकमय घड़ी में इस तरह की घटना ने पूरे गांव को झकझोर कर रख दिया है। फिलहाल सभी घायलों को बेहतर इलाज मुहैया कराया जा रहा है। इस घटना के बाद से रामपुर और आसपास के क्षेत्र में दहशत का माहौल है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि सार्वजनिक स्थानों और शमशान घाटों के आसपास लगे खतरनाक छत्तों को सुरक्षित रूप से हटवाया जाए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन से "लोकल टू ग्लोबल" हो रहे स्थानीय उत्पाद

"एक जिला एक उत्पादन नीति" से राजस्थान के उत्पाद विश्व पटल पर बना रहे अपनी विशिष्ट पहचान

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार "एक जिला एक उत्पाद नीति-2024" के माध्यम से राजस्थान के प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान को वैश्विक स्तर पर लाने का प्रयास कर रही है। इस नीति के तहत राज्य के प्रत्येक जिले में उत्पाद का चयन किया गया है, जिससे स्थानीय संसाधनों और कौशल का बेहतर उपयोग हो सके। साथ ही, प्रत्येक जिले की विशिष्ट पहचान को संरक्षित रखते हुए प्रमुख उत्पादों को प्रोत्साहित किया जाएं। इस नीति के माध्यम से गांवों में उद्यिमता को बढ़ावा मिल रहा है तथा उद्यिमयों को तकनीकी सहयोग, वित्तीय सहायता

और बाजार तक बेहतर पहुंच उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे उन्हें आगे बढ़ने के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं। नीति के अंतर्गत उद्योगों को मार्जिन मनी अनुदान, एडवांस टेक्नोलोजी और सॉफ्टवेयर खरीदने, क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेने

■ उद्यिमता को मिल रहा बढ़ावा, गांवों में रोजगार के नए अवसर : भजनलाल शर्मा

पर पुनर्भरण सहायता प्राप्त होगी।

राज्य सरकार द्वारा उद्यिमयों को सशक्त बनाने के लिए व्यापक वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है। इसी क्रम में इस नीति के तहत नए लघु एवं सूक्ष्म ओडीओपी उद्यम स्थापित करने के लिए परियोजना लागत का अधिकतम 25 प्रतिशत (अधिकतम 25 लाख रुपये) तक मार्जिन मनी सब्सिडी देय है। साथ ही, सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों के तकनीकी उन्नयन के लिए नवीनतम तकनीक एवं सॉफ्टवेयर के अधिग्रहण पर 50 प्रतिशत तक (अधिकतम 5 लाख रुपये) की वित्तीय सहायता का प्रावधान है।

एक जिला-एक उत्पाद नीति में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता प्रमाणपत्रों और बौद्धिक संपदा अधिकारों पर किए गए खर्चों के लिए 3 लाख रुपये तक 75 प्रतिशत पुनर्भरण का प्रावधान है। साथ ही, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर शामिल होने के लिए दो साल तक प्रति वर्ष 1 लाख रुपये तक 75 प्रतिशत पुनर्भरण भी देय है। टेक्नोलॉजिकल अपग्रेडेशन को बढ़ावा देने के लिए मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय संस्थानों से एडवांस्ड टेक्नोलॉजी या सॉफ्टवेयर खरीद पर 5 लाख रुपये तक 50 प्रतिशत सब्सिडी मुहैया कराई जाती है।

इस नीति के तहत उद्यिमयों को कैटलॉगिंग सेवाओं और ई-कॉमर्स वेबसाइटों के डवलपमेंट के लिए 60 प्रतिशत और अधिकतम 75 हजार तक सहायता देकर डिजिटल मार्केट के विस्तार में सहयोग दिया जा रहा है। जिससे उत्पादों की ब्रांडिंग हो सके, साथ ही, बाजार तक बहुत सुनिश्चित हो। वित्तीय प्रोत्साहन, टेक्नोलॉजिकल सपोर्ट और मार्केट विस्तार जैसे पहलों के माध्यम से यह नीति जिला स्तर के उद्योगों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहुंचाने के लिए कार्य कर रही है।

देवनानी ने केन्द्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह और ज्योतिरादित्य सिंधिया से भेंट की

तारागढ़ किला और वरुण सागर को आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए केंद्रीय सहायता दिलाने का आग्रह

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने मंगलवार को नई दिल्ली में केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत से मुलाकात की।

जयपुर (कासं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने अपने नई दिल्ली प्रवास में मंगलवार को केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और केन्द्रीय संचार मन्त्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से भेंट की और अजमेर के पर्यटन विकास कार्यों और कतिपय अन्य विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के साथ भेंट में विधानसभाध्यक्ष देवनानी ने अजमेर के ऐतिहासिक तारागढ़ किला और वरुण सागर को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने के सम्बन्ध में चर्चा की और इसके लिए यथोचित केन्द्रीय सहयोग प्रदान कराने का आग्रह किया ।

देवनानी ने बताया कि सम्राट पृथ्वीराज चौहान से जुड़े ऐतिहासिक तारागढ़ किला के विकास के लिए राजस्थान सरकार ने भी अपने बजट में वित्तीय प्रावधान की घोषणा की है। ऐतिहासिक तारागढ़ किला को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की इस महत्वाकांक्षी योजना को पूरा करने के लिए केन्द्रीय सहायता की महती आवश्यकता है। इसी प्रकार अजमेर के वरुणसागर जिसका पूर्व में नाम फाय सागर था, को भी पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण बनाने के लिए कार्य किया जा रहा है तथा यहाँ शीघ्र वरुण देवता की अष्ट धातु की एक मूर्ति भी स्थापित की जायेगी। देवनानी ने बताया कि अजमेर में अंग्रेज़ी और औपनिवेशिक काल की गुलामी के प्रतीक कई नामों को बदला गया है। इसी क्रम में फाय सागर का नाम भी परिवर्तित कर जल के देवता वरुण सागर के नाम पर रखा गया है । उन्होंने बताया कि वरुण सागर को एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाने के प्रयास किए जा रहें है ।

■ अजमेर में डाकघर और बीएसएनएल से सटी सड़क सम्बन्धी विषय पर कार्यवाही कराने का अनुरोध

केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने विधानसभाध्यक्ष देवनानी का आश्वस्त किया कि ऐतिहासिक तारागढ़ क़िला और वरुण सागर सहित अजमेर के अन्य पर्यटन स्थलों के विकास का विस्तृत प्रोजेक्ट बनवा कर केन्द्र सरकार से समुचित केन्द्रीय सहायता दिलाने का पूरा प्रयास किया जाएगा ।विधानसभाध्यक्ष देवनानी ने केन्द्रीय संचार मन्त्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से अजमेर में बीएसएनएल और डॉक घर कार्यालय के पास की सड़क को चौडी करने सम्बन्धी विषय पर चर्चा की तथा बताया कि अजमेर में जाम की समस्या को दूर करने तथा सुचारू यातायात व्यवस्था सुनिश्चित कराने के लिए इन कार्यालय के पास की सड़क को चौडी करना आवश्यक है । जनहित में इन कार्यालयों की भूमि की आवश्यकता है। क्योंकि नए एलिवेटेड रोड और आगरा फोर्ट गेट के पास प्राय: दुर्घटनाए होती है । उन्होंने सिन्धिया से इस लम्बित विषय का शीघ्र निराकरण करने के लिए सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश जारी करने का अनुरोध किया। केन्द्रीय संचार मन्त्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने विधानसभाध्यक्ष देवनानी को आश्वस्त किया कि वे इस सम्बन्ध में शीघ्र ही अपेक्षित कार्यवाही सुनिश्चित करायेंगे। इस अवसर पर विधानसभाध्यक्ष देवनानी ने दोनों केन्द्रीय मन्त्रियों को विधानसभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित संसदीय संस्कृति का उत्कर्ष-नवाचारों के 2 वर्ष और विधान सभा की दैनंदिनी के साथ ही अपनी स्वलिखित पुस्तक सनातन संस्कृति की अटल दृष्टि पुस्तक भेंट की।

डीओआईटी के विशेष सचिव और राजस्थान हैल्थ इंश्योरेंस के सीईओ के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट

जयपुर । जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने आदेश की पालना नहीं करने पर डीओआईटी के विशेष सचिव व आयुक्त हिमांशु गुप्ता व राजस्थान हेल्थ इंश्योरेंस के सीईओ हरजीराम अटल के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी कर 16 अप्रैल को तलब किया है।

आयोग ने पुलिस कमिश्नरेट को कहा है कि वे वारंट की तामील कराए। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीणा ने यह आदेश सोनिका राघव के अवमानना प्रार्थना पत्र पर दिया।

परिवादी की ओर से अधिवक्ता ओमेन्द्र सिंह ने बताया कि उपभोक्ता आयोग ने 28 अगस्त 2024 को आदेश जारी कर परिवादी के चिरंजीवी योजना के लिए ऑनलाइन 850 रुपए कटने के बावजूद उसका रजिस्ट्रेशन नहीं होने के सेवादोष मामले में विपक्षीगण पर 36 हजार रुपए का हर्जाना लगाया था। इसके बावजूद विपक्षी अफसरों ने उपभोक्ता आयोग के आदेश का पालन नहीं किया। जिसे परिवादिया ने अवमानना प्रार्थना पत्र के जरिए चुनौती देते हुए आदेश की पालना का आग्रह किया। जिस पर आयोग ने अफसरों के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं।

गौरतलब है कि परिवादी ने साल 2021 में चिरंजीवी योजना के लिए ऑनलाइन 850 रुपए ट्रांसफर किए थे, लेकिन योजना में उसका रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ। उसने दोबारा ट्रांजेक्शन किया तो रजिस्ट्रेशन हो गया, लेकिन उसे पहली बार में काटे गए 850 रुपए 7 दिन की अवधि में ट्रांसफर नहीं किए गए। इसे उपभोक्ता आयोग में चुनौती देने के दौरान मार्च 2022 में 850 रुपए उसे लौटा दिए गए। उपभोक्ता आयोग ने विपक्षीगण के रकम लौटाने में देरी होने को सेवादोष करार देते हुए 36 हजार रुपए का हर्जाना लगाया, लेकिन इस आदेश की पालना नहीं की गई।

दुपहिया वाहन चोर गिरफ्तार

जयपुर। श्यामनगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले एक शातिर दुपहिया वाहन चोर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की मोटरसाइकिल भी बरामद की है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित नशा करने का आदि है और नशा पूर्ति के लिए दुपहिया वाहन चुराता है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

विदेश जाने पर रोक, बेटी के नाम 10 लाख रुपए की एफडीआर बनाने के आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने वैवाहिक विवाद से जुडे मामले में महिला के सास-ससुर और देवर को अग्रिम जमानत का लाभ देते हुए कहा है कि वे बिना अनुमति विदेश नहीं जाएंगे।

इसके साथ ही अदालत ने बेटी के नाम दस लाख रुपए की एफडीआर बनाने का आदेश देते हुए पक्षकारों को समझौते के लिए मध्यस्थ के समक्ष जाने को कहा है। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश सास-ससुर व देवर की अग्रिम जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।सुनवाई के दौरान ससुराल पक्ष ने अदालत को आश्वस्त किया कि वे पीडिता और उसकी बेटी के भरण पोषण के लिए हर माह 30 हजार रुपए अदा करेंगे।

इस पर अदालत ने कहा कि हर माह की 2 तारीख को पीडिता के बैंक खाते में यह राशि जमा कराई जाए। गौरतलब है कि पीडिता ने खैरथल-तिजारा के महिला थाने में शिकायत दी थी। जिसमें कहा की उसकी शादी जनवरी, 2022 को हुई थी और उसके दो साल की बेटी है। शादी के कुछ साल बाद ही उसका पति उसे छोडकर अमेरिका चला गया। पीडिता ने आरोप लगाया कि वहां उसने दूसरी शादी कर ली और वापस भारत लौटने से इनकार कर दिया। पीडिता ने आरोप लगाया की ससुराल पक्ष अब अपनी संपत्ति बेचकर विदेश भागने की साजिश रच रहे हैं। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने तीनों को अग्रिम जमानत का सशर्त लाभ देते हुए बेटी के पक्ष में एफडीआर बनाने के आदेश दिए हैं।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पर 11 हजार रुपए हर्जाना लगाया

जयपुर (कासं)। जिला उपभोक्ता आयोग क्रम-3 ने पीएम आवास योजना के तहत लिए होम लोन की सब्सिडी के लिए दस्तावेज देरी से भेजने के चलते लाभ से वंचित रहने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने विपक्षी सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पर 11 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। वहीं सब्सिडी राशि 2.67 लाख रुपए परिवाद पेश करने की तिथि से 9 फीसदी ब्याज सहित अदा करने को कहा है। आयोग अध्यक्ष देवेन्द्र मोहन माथुर और सदस्य पवन कुमार ने यह आदेश बिंदु चौधरी व अन्य की ओर से दायर परिवाद पर सुनवाई करते हुए दिए।परिवाद में

■ पीएम आवास योजना की सब्सिडी के लिए दस्तावेज देरी से भेजने पर जिला उपभोक्ता आयोग ने कार्रवाई की

अधिवक्ता जितेन्द्र कुमार शर्मा ने आयोग को बताया कि परिवादी ने विपक्षी बैंक से करीब पांच साल पहले होम लोन लिया था और पीएम आवास योजना के तहत मिलने वाली सब्सिडी के लिए आवेदन किया था। विपक्षी ने परिवादी को आश्वस्त किया था कि उनकी ओर से सब्सिडी राशि 2.67 लाख रुपए दिलाने के लिए समस्त जरूरी कार्रवाई की जाएगी। परिवाद में कहा गया कि सब्सिडी के लिए बैंक के पोर्टल पर फाइल अप्रूव कर अपलोड की गई थी, लेकिन बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय ने करीब पांच माह बाद 30 मार्च, 2022 को इसे फाइनल अप्रूव किया। इसके अगले दिन ही 31 मार्च को सब्सिडी स्कीम बंद हो गई। जिसके चलते परिवादी को सब्सिडी का लाभ नहीं मिला। परिवाद में कहा गया कि विपक्षी की देरी के कारण उसे सब्सिडी से वंचित होना पडा। ऐसे में उसे मुआवजा और सब्सिडी दिलाई जाए।

युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या की

जयपुर । रामनगरिया थाना क्षेत्र में एक युवक ने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि पत्नी के लगातार दूरी बनाने से परेशान होकर युवक ने अपनी शादी की सालगिरह के अगले दिन यह कदम उठाया। पुलिस को मौके से सुसाइड नोट और मोबाइल में सुसाइड वीडियो भी मिला है।

पुलिस के अनुसार दौसा के बसवा निवासी शाहबाज खान (27) ने 28 फरवरी को जगतपुरा स्थित सीबीआई फाटक के पास ट्रेन के आगे छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। वह रेवाड़ी-मानसेर में एक निजी कंपनी में कार्यरत था। 27 फरवरी 2023 को उसकी शादी दौसा निवासी कशिश (25) से हुई थी। दंपती की दो वर्षीय बेटी भी है।

परिजनों के अनुसार, शादी के बाद से ही पत्नी कशिश अक्सर विवाद कर पीहर चली जाती थी और वापस आने से इनकार करती थी। आरोप है कि वह अपनी मर्जी से घूमने-फिरने जाती और पैसों की मांग करती थी, जिसे शाहबाज पूरा करता रहा। मृतक के भाई शाहिद खान ने रिपोर्ट में बताया कि दिसंबर 2025 में साले की शादी में शाहबाज से करीब डेढ़ लाख रुपए खर्च करवाए गए। इसके बाद भी ससुराल पक्ष द्वारा उसके साथ मारपीट की गई। पत्नी के कहने पर शाहबाज ने रेवाड़ी की नौकरी छोड़ दी और फरवरी 2026 में जयपुर के भांकरोटा क्षेत्र के जयसिंहपुरा में किराए

■ सुसाइड नोट व वीडियो के आधार पर पत्नी व ससुराल पक्ष पर मामला दर्ज

का मकान लेकर नई नौकरी शुरू की, लेकिन इसके बावजूद पत्नी साथ नहीं आई। 27 फरवरी 2026 को शादी की तीसरी सालगिरह पर भी पत्नी ने कॉल और मैसेज का जवाब नहीं दिया। परेशान होकर शाहबाज ने उसे लगातार मैसेज कर बात करने की गुहार लगाई। अगले दिन 28 फरवरी की सुबह वह बाइक लेकर घर से निकला और जगतपुरा रेलवे स्टेशन की पार्किंग में बाइक खड़ी कर सीबीआई फाटक के पास ट्रेन के आगे कूद गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

कमरे की तलाशी में सुसाइड नोट मिला, जिसमें उसने लिखा- मेरी जिंदगी के कुछ पल मेरी बेटी फातिका को बता देना। मोबाइल में पत्नी को भेजे गए कई संदेश और रोते हुए बनाया गया वीडियो भी मिला है, जिसमें वह ससुराल पक्ष पर प्रताड़ना के आरोप लगाता दिख रहा है। पुलिस ने मृतक के भाई की रिपोर्ट पर पत्नी कशिश, सास तसलीम, साले बिलाल, शाहदाब उर्फ राहुल और जिसान के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

डॉक्टर के घर से 50 लाख रु. चुराने वाले शातिर नौकर-नौकरानी गिरफ्तार

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 33 लाख रुपए नकद बरामद किए

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । सांगानेर सदर पुलिस ने रिंग रोड परियोजना क्षेत्र स्थित एक डॉक्टर के घर हुई 50 लाख रुपए की चोरी की वारदात का खुलासा करते हुए घर के ही नौकर और नौकरानी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 33 लाख रुपए नकद बरामद किए हैं। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त (दक्षिण) राजर्षि राज ने बताया कि 26 मार्च 2026 को परिवादी डॉ. प्रभाकर सेठी (78) निवासी खेड़ी गोपालपुरा ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि 22 फरवरी को उन्होंने अपनी पोती की ट्यूशन फीस के लिए 50 लाख रुपए नकद घर के किचन में सुरक्षित स्थान पर छिपाकर रखे थे।

इसके बाद 24 फरवरी को घर में चोरी का प्रयास हुआ। जबकि 25 फरवरी को सीसीटीवी कैमरों की सर्विसिंग हुई। इसी दौरान घर के कर्मचारी सुमित खेतान और सीमा सैनी को कैमरों की पूरी जानकारी हो गई। गत 19 मार्च की रात संदिग्ध

सांगानेर सदर पुलिस ने रिंग रोड परियोजना क्षेत्र स्थित एक डॉक्टर के घर हुई 50 लाख रुपए की चोरी की वारदात का खुलासा करते हुए घर के ही नौकर और नौकरानी को गिरफ्तार किया।

परिस्थितियों में घर के पालतू कुत्ते की मौत हो गई। इसके बाद जब किचन में रखी रकम की जांच की गई तो पूरी नकदी गायब मिली।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और संदिग्ध नौकर सुमित खेतान एवं नौकरानी सीमा सैनी से पूछताछ की। पूछताछ में वारदात स्वीकार करने के बाद सुमित खेतान (38) और सीमा सैनी (34) को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने आरोपियों से 33 लाख रुपए नकद बरामद कर लिए हैं। शेष राशि की बरामदगी के प्रयास जारी हैं।

जांच में सामने आया कि जब परिवादी रकम छिपा रहे थे। तब सुमित

■ डॉ. प्रभाकर सेठी ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उन्होंने पोती की ट्यूशन फीस के लिए 50 लाख रुपए नकद किचन में सुरक्षित स्थान पर छिपाकर थे, जिसे चुराया गया

ने चोरी-छिपे यह देख लिया था। बाद में उसने सीसीटीवी फुटेज देखकर पूरी जानकारी जुटाई और किचन के कैमरे का वायर हटा दिया।

इसके बाद महिला कर्मचारी सीमा सैनी को भी योजना में शामिल कर दोनों ने मिलकर नकदी चुरा ली और सामान्य तरीके से घर में काम करते रहे ताकि किसी को शक न हो। पुलिस टीम का गठन अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त के निर्देशन में किया गया था। जिसमें सांगानेर सदर थाना पुलिस की टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

करतारपुरा में रेलवे की अवैध लॉन्ड्री के खिलाफ स्थानीय लोगों का आक्रोश फूटा

जयपुर (कासं)। उत्तर पश्चिम रेलवे ने जयपुर नगर निगम के करतारपुरा क्षेत्र, वार्ड सं. 144 में रेलवे लाइन के किनारे व सरकारी स्कूल के सामने रिहायशी कॉलोनी में अवैध बूट लॉन्ड्री की फैक्ट्रियां लगा रखी हैं, जिनसे स्थानीय जनता विशेषकर वृद्धों, महिलाओं एवं बच्चों को स्वास्थ्य एवं श्वास संबंधी काफी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

रिहायशी इलाके में रेलवे की जमीन पर अवैध रूप से बगैर भू-रूपान्तरण कराये बूट लॉन्ड्री की फैक्ट्रियां लगा रखी हैं। ये लॉन्ड्री रिहायशी इलाके में होने पर भी नियमविरुद्ध प्रतिदिन निरन्तर 24 घंटे चलती हैं। इसकी चिमनी से आसपास की कॉलोनियों में रोजाना काफी जहरीला धुआं, मशीनों से रसायनयुक्त पानी और वायु व ध्वनि प्रदूषण फैलता है। इससे स्थानीय निवासी अत्यधिक परेशान है। इस बूट लॉन्ड्री के बिल्कुल सामने महज 15 मीटर की दूरी पर ही राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय करतारपुरा स्थित है, जिसमें पढ़ने वाले बच्चे रोजाना प्रदूषित वायु एवं फैक्ट्री के शोर से काफी परेशान हैं एवं बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। बताया जा रहा है कि लॉन्ड्री में अवैध रूप से बॉयलर भी लगा रखा है जो कि नियमानुसार आवासीय क्षेत्र में नहीं लग सकता है। अब नई 2 यूनिटों में भी अवैध रूप से 2 बॉयलर स्थापित किये गये हैं। लॉन्ड्री की फैक्ट्रियों में नियमानुसार वाटर ट्रीटमेन्ट प्लांट का प्रावधान आवश्यक है, लेकिन इस लॉन्ड्री में शुरुआत से ही केवल ढांचा बना हुआ है इसको संचालित नहीं किया जा रहा है। ट्रीटमेंट प्लांट सुचारू नहीं होने से रसायनयुक्त गन्दा पानी करतारपुरा नाले (द्रव्यवती नदी की सहायक) में डालकर जल प्रदूषण भी किया जा रहा है। लॉन्ड्री की नई 2 यूनिटों में तो वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का ढांचा भी नहीं बनाया गया है, इसके बावजूद फैक्ट्री एवं बॉयलर विभाग इनको बॉयलर लगाने के लिए अनापत्ति दे रहा है।

जयपुर के मास्टर प्लान में अभी भी इस लॉन्ड्री की भूमि को रिहायशी ही दिखाया जा रहा है। लेकिन फिर भी जयपुर विद्युत वितरण निगम द्वारा फैक्ट्रियों के लिए अवैध रूप से नियमों के परे जाकर मिलीभगत से अवैध लॉन्ड्री को व्यवसायिक विद्युत कनेक्शन दिए गए है। राजस्थान राज्य प्रदूषण मंडल को कई वर्षों से लॉन्ड्री की फैक्ट्रियों के प्रदूषण से परेशान स्थानीय निवासी शिकायत कर रहे हैं लेकिन उनके द्वारा भी महज कागजी खानापूर्ति करके कोई उचित कार्यवाही नहीं की जा रही है। उस फैक्ट्री के कारण दुर्गापुरा से बाईस गोदाम जाने वाली मुख्य सड़क पर आए दिन जाम लगते रहते हैं।

फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूर रात के समय झगड़ा फसाद करके शोर, अराजकता का माहौल बनाए रखते हैं जिससे स्थानीय निवासियों में तनाव बना रहता है। इस अवैध लॉन्ड्री से परेशान स्थानीय निवासी कई वर्षों से केन्द्र सरकार, रेलवे, प्रदूषण बोर्ड, मुख्यमंत्री कार्यालय और राज्य सरकार को शिकायत कर रहे हैं, परन्तु अभी तक किसी के द्वारा भी कार्यवाही नहीं की गई।

15वें वित्त आयोग से बीते चार माह में राजस्थान को 2700 करोड़ रुपये मिले

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए विभिन्न केंद्र प्रवर्तित योजनाओं के तहत प्रदेश को अधिक से अधिक राशि जारी किए जाने के लिए विशेष प्रयास किए। जिसके परिणाम स्वरूप केंद्र सरकार ने 15वें वित्त आयोग, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन एवं पीएम अभीम (प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर मिशन) के तहत रिकॉर्ड राशि राज्य को जारी की गई है। 15वें वित्त आयोग के तहत राजस्थान को विगत 5 वर्ष में करीब 4300 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है, जिसमें से लगभग 2700 करोड़ की राशि विगत 4 माह में मुख्यमंत्री के सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप जारी हुई है।

जे.डी.ए. में पदोन्नत हुए अतिरिक्त मुख्य अभियंताओं मिली नई पोस्टिंग

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण में पदोन्नत हुए एडिशनल चीफ इंजीनियर्स (अतिरिक्त मुख्य अभियंता) को उनके नए पदभार के साथ पोस्टिंग दी गई है। इनके कार्यभार में भी बदलाव किया गया है। पदोन्नत होने के बाद जेडीए में 11 एडिशनल चीफ इंजीनियर्स हो गए हैं। आदेश के अनुसार मोहन लाल मीणा को जोन 21 व 22, राजीव आवास योजना (बीएसयूपी-अफोर्डेबल), इंजीनियरिंग शाखाओं से समन्वय, एपेक्स एलीवेटेड प्रोजेक्ट, तकनीकी सहायक निदेशक इंजीनियरिंग प्रथम का जिम्मा सौंपा गया है। हरीशंकर मीणा को जोन 15 व 16 लोकायुक्त, एमपी, एमएलए फंड, रिंग रोड उत्तर का चार्ज दिया गया है। संजय पूनिया को जोन 11 व 12, एमएस-पीडब्लूसी, बिजली, सिविल लाइन आरओबी की जिम्मेदारी दी गई है। राम प्रसाद रैगर को जोन 10 व 13 विधानसभा ओफसी यूटिलिटी, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, तकनीकी सहायक डायरेक्टर थर्ड का जिम्मा सौंपा गया है। इसके साथ ही नए पदोन्नत अतिरिक्त मुख्य अभियंता मोहित चौधरी को जोन ए-बी, ट्रेफिक कंट्रोल बोर्ड, रिद्धी-सिद्धी एलीवेटेड रोड का काम सौंपा गया है। विवेक शर्मा को जोन 17, 18, 19 पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप, मुख्यालय, पीएमआईएस, सोडाला प्रोजेक्ट फाइनालिजेशन की जिम्मेदारी दी गई है। राजेन्द्र शर्मा को जोन 9 व 14, सालिगरामपुरा आरओबी, इंडूनी फाटक प्रोजेक्ट का चार्ज दिया गया है। योगेश स्वरूप माथुर को जोन 7 पीआरएन, सीएमआईएस, बजट घोषणा, जनसुनवाई केन्द्र सांगानेर व द्रव्यवती प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी दी गई है। महेश गोयल को जोन सी-8, सांगानेर एलीवेटेड रोड,तकनीकी सहायक डायरेक्टर इंजीनियरिंग थर्ड का काम सौंपा गया है।

वरिष्ठ नागरिकों की ट्रेन रवाना

जयपुर (कासं)। देवस्थान विभाग की वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना-2025-26 के तहत मंगलवार को जयपुर के दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से रामेश्वरम-मदुरई के लिए विशेष ट्रेन को देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने बताया कि बजट घोषणा-2025-26 की यह अंतिम ट्रेन थी। इसमें जयपुर, कोटा व भरतपुर संभाग के कुल 990 वरिष्ठजन रामेश्वरम-मदुरई के लिए रवाना हुए हैं। दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन से 400 यात्री, जबकि सवाईमाधोपुर से 120 व कोटा रेलवे स्टेशन से 470 यात्री सवार हुए हैं। यह ट्रेन दो अप्रेल को रामेश्वरम पहुंचेगी। ट्रेन का ठहराव रामेश्वरम में एक दिन का होगा। यहां पर सभी श्रद्धालुओं को हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण चार धाम में से एक व देश के मुख्य रामनाथ स्वामी मंदिर व ज्योर्तिलिंग व मणी दर्शन करवाए जाएंगे।

मुकेश मीणा चौथी बार प्रेस क्लब के अध्यक्ष निर्वाचित

जयपुर । पिंकसिटी प्रेस क्लब प्रबन्ध कार्यकारिणी 2026-27 के लिए मुकेश मीणा अध्यक्ष और राजकुमार शर्मा "जकड़ी" महासचिव निर्वाचित हुए है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनिल शेखावत ने बताया कि अध्यक्ष पद पर मुकेश मीणा को 369, रोहित कुमार सोनी को 317, रूपेश टिंकर को 194 और अभय जोशी को 127 मत मिले है। महासचिव पद पर राजकुमार शर्मा जकडी को 430, रामेन्द्र सोलंकी को 392, परमेश्वर प्रसाद शर्मा को 112 एवं अभय सिंह को 42 मत मिले है।

उपाध्यक्ष के दो पदों पर डॉ. मोनिका शर्मा और पुष्पेन्द्र सिंह राजावत निर्वाचित घोषित किए गए है। इस पद

पर डॉ. मोनिका शर्मा को 416 और पुष्पेंद्र सिंह राजावत को 399 मत मिले है। उन्होंने बताया कि कोषाध्यक्ष पद पर नमोनारायण अवस्थी ने 447 मत प्राप्त कर सफलता हासिल की है। इस पद पर अनिल त्रिवेदी को 365, और शालिनी श्रीवास्तव को 166 मत मिले है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी शेखावत ने बताया कि कार्यकारिणी के दस पदों पर अनिता शर्मा आदि।

12वीं के विज्ञान, कला और वरिष्ठ उपाध्याय के परिणामों में छात्राओं ने बाजी मारी

उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग की परीक्षा का परिणाम 97.52 प्रतिशत रहा

अजमेर/उदयपुर, (निसं)। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा सीनियर सेकेण्डरी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तथा वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा 2026 का परिणाम मंगलवार को शिक्षा मंत्री मदन दिलावर द्वारा उदयपुर से ऑनलाइन माध्यम से जारी किया गया। शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने उदयपुर कलैक्ट्रेट परिसर स्थित डीओआईटी सभागार से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से वर्चुअली जुड़ते हुए परीक्षा परिणामों की घोषणा की। कक्षा 12 के सभी संकायों तथा वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा का समेकित परीक्षा परिणाम 96.45 प्रतिशत रहा। इसके साथ ही आजादी के बाद पहली बार ऐसा अवसर रहा जब माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परिणाम मार्च माह में जारी हुए।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने उदयपुर से 12वीं के परीक्षा परिणाम जारी किए।

शिक्षा मंत्री दिलावर मंगलवार सुबह ट्रेन से उदयपुर पहुंचे थे। सर्किट हाउस में कुछ देर रूकने के बाद 9.35 बजे कलैक्ट्रेट स्थित सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के वीडियो कांफ्रेन्सिंग सभागार में पहुंचे। यहां जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया। दिलावर वीसी के माध्यम से अजमेर स्थित माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कार्यालय के मुख्यालय से जुड़े। प्रातः दस बजे शिक्षा मंत्री दिलावर के निर्देशन में कम्प्यूटर का बटन दबाकर परीक्षा परिणाम जारी किया। इस दौरान उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, सलूम्बर विधायक शांतादेवी सहित अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर बोर्ड प्रशासक एवं संभागीय आयुक्त शक्ति सिंह राठौड़ तथा बोर्ड सचिव गजेन्द्र सिंह राठौड़ भी बोर्ड कार्यालय से वर्चुअली जुड़े।

शिक्षा मंत्री दिलावर ने बताया कि उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग की परीक्षा में कुल 28068 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए थे, जिसमें से 285299 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग की परीक्षा का परिणाम 97.52 प्रतिशत रहा। इसमें छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 97.02 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 98.34 रहा। विज्ञान वर्ग में 178051 छात्रों में से 146644 छात्र और 107248 छात्राओं में से 98636 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है। वाणिज्य वर्ग की परीक्षा में 30798 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिसमें से 30580 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए वाणिज्य वर्ग का परिणाम 93.64 प्रतिशत रहा। इसमें छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 94.04 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 92.82 रहा। वाणिज्य वर्ग में 20666 छात्रों में से 13976 छात्र और 9914 छात्राओं में से 8096 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हैं। इसी प्रकार कला वर्ग की परीक्षा में कुल 591023 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए थे, इसमें से 583201 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। कला वर्ग का परिणाम 97.54 प्रतिशत रहा। इसमें से छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 96.68 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 98.29 रहा। वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा में कुल 4114 परीक्षार्थी पंजीकृत है जिसमें से 4067 परीक्षार्थी परीक्षा में प्रविष्ट हुए। वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा का परिणाम 97.20 प्रतिशत रहा। छात्रों का उत्तीर्णता प्रतिशत 96.46 तथा छात्राओं का उत्तीर्णता प्रतिशत 97.77 रहा। वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा में 1781 छात्रों में से 832 छात्र और 2286 छात्राओं में से 1328 छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई है।

मंत्री दिलावर ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में इस बार से 1 अप्रैल से सत्रांरभ करने की योजना बनाई थी, जिसे तय समयानुसार पूर्ण कर रहे हैं। इस बार से सत्र 1 अप्रैल से किया जा रहा है। इससे विद्यार्थियों हेतु कार्यदिवसों की संख्या में वृद्धि होगी। गत सत्र में कार्यदिवसों की संख्या 235 थी जो अब बढ़ कर 244 हो जाएगी। शिक्षा मंत्री ने कहा कि पिछली बार से गणित विषय की री-चेकिंग व्यवस्था प्रारंभ की थी, इससे पूर्व केवल री-टोटलिंग की व्यवस्था थी। इस बार से दो अन्य विषयों विज्ञान व अंग्रेजी में भी री-चेकिंग व्यवस्था प्रारंभ कर दी है। दिलावर ने कहा कि आगामी सत्र से विद्यार्थियों को वर्ष में दो बार बोर्ड परीक्षा देने का अवसर प्रदान किया जाएगा। इससे विद्यार्थियों का मानसिक तनाव कम होगा और सुधार का मौका मिलेगा। इसके अलावा हर बच्चे तक किताबें समय पर पहुंचना सुनिश्चित किया गया है।

सीकर में मिट्टी की सुरंग ढहने से तीन दोस्तों की मौत

खेलने के लिए बनाई गई थी मिट्टी की सुरंग

सीकर, (निसं)। सीकर में खेलने के लिए बनाई गई मिट्टी की सुरंग ढहने से तीन दोस्तों की मौत हो गई। वहीं, चौथे दोस्त की जान बच गई, जिसके चिल्लाने पर लोगों को घटना बारे में पता चला। हादसा नेछवा थाना इलाके में सोमवार को गनेड़ी गांव में हुआ।

पुलिस के मुताबिक होलश मेघवाल (10) पुत्र नानूराम मेघवाल, गौतम सैनी (14) पुत्र रतनलाल सैनी, दीपेश नायक (12) पुत्र भंवरलाल नायक और कृष्ण खेत में मिट्टी के 3 से 4 फीट ऊंचे टीले के नीचे बनाई सुरंग में खेल रहे थे। कृष्ण सुरंग बाहर की ओर था। बाकी तीनों दोस्त अंदर चले गए। इस दौरान अचानक मिट्टी ढह गई। होलश, गौतम और दीपक मिट्टी के नीचे दब गए। कृष्ण के भी पैर मिट्टी में दबे थे। फिर भी उसने मिट्टी में दबे अपने दोस्तों को निकालने की कोशिश की। बात नहीं बनी तो चिल्लाने लगा, ऐसे में गांव के लोग वहां पर आ गए।

सूचना पर नेछवा पुलिस भी मौके पर पहुंची। मिट्टी हटाकर तीनों को निकाला गया। तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। होलाश के पिता नानूराम की 1 साल पहले मौत हो चुकी है। परिवार की आर्थिक स्थिति भी ज्यादा ठीक नहीं है। दीपेश के पिता ने भी करीब डेढ़ से 2 साल पहले सुसाइड कर लिया था। दीपेश और होलाश सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। नेछवा पुलिस का कहना है कि खेलने के दौरान यह हादसा हुआ। तीनों के शव का पोस्टमॉर्टम के बाद घरवालों को सौंप दिए।

जोधपुर में अवैध रिफिलिंग पर कार्रवाई

जोधपुर, (कासं)। महामंदिर के इमरतिया बेरा क्षेत्र में अवैध रूप से व्यवसायिक और घरेलू गैस की टंकियों का भंडारण और रिफिलिंग करने की सूचना पर रसद विभाग के निरीक्षक ने दबिश देकर आरोपी के खिलाफ ईसी एक्ट में केस दर्ज कराया है।

महामंदिर पुलिस ने बताया कि प्रवर्तन निरीक्षक (पी) राजकरण बारहठ ने इमरिता बेरा महामंदिर क्षेत्र में घरेलू और व्यवसायिक गैस सिलेण्डरों की अवैध रूप से भंडारण करने की सूचना पर दबिश देकर मौके से रिफिलिंग के उपकरण और घरेलू तथा व्यवसायिक सिलेण्डर जब्त किए हैं।

कैलादेवी मेले का समापन आज

- अब तक 40 लाख श्रद्धालु दर्शन करने के लिये पहुंचे

करौली, (निसं)। कैलादेवी जी का चैत्र नवरात्रा मेला जैसे-जैसे समापन की ओर बढ़ रहा है, वैसे-वैसे ही मां कैलादेवी के दर्शनों के लिए श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा है। मेले के शुभारंभ के 16वें दिन मंगलवार को करीब तीन लाख श्रद्धालुओं ने मां कैलादेवी के दर्शन लाभ लेकर मनौती मांगी, जिनकी संख्या मेले के 16 दिन तक करीब 40 लाख श्रद्धालु दर्शन लाभ ले चुके हैं।

कैलादेवी जी का चैत्र नवरात्रा लख्खी मेला 16 मार्च से शुरू हुआ है, जिसका समापन 1 अप्रैल पूर्णिमा के अवसर पर समापन होगा लेकिन श्रद्धा के उमड़ते सैलाब को देखते हुए कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट के सोल ट्रस्टी कृष्ण चंद्रपाल ने केला देवी मंदिर ट्रस्ट के अधिकारियों को मेले की पूर्णिमा समापन के बाद 5 दिन तक और व्यवस्थाएं सुचारू रूप से जारी रखने के निर्देश दिए। कैला देवी मंदिर ट्रस्ट के विशेष अधिकारी किशनपाल सिंह, वरिष्ठ अधिकारी विवेक द्विवेदी, लीगल एडवाइजर कंट्रोल रूम प्रभारी संतोष सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि कैलादेवीजी के चैत्र नवरात्रा मेले का वैसे तो आज बुधवार को पूर्णिमा के अवसर पर समापन होना है लेकिन श्रद्धालुओं की मां के प्रति आस्था को देखते हुए लगातार मां के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ रही है। उन्होंने बताया कि मेले के समापन की पूर्व संध्या तक करीब 40 लाख श्रद्धालु दर्शन लाभ ले चुके हैं।

अवैध शराब के साथ छह गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। कमिश्नरेट पुलिस ने अलग-अलग स्थानों पर अवैध रूप से शराब रखने और बेचने वालों की धरपकड़ करते हुए आधा दर्जन लोगों को पकड़ा।

बोरानाड़ा थाने के एएसआई हरसहाय ने बोरानाडा से नारनाडी सर्विस रोड पर अवैध रूप से शराब बेच रहे भींयाराम को गिरफ्तार कर बेचने को रखे 48 पव्वे देशी शराब के जब्त किये। लूणी थाने के एएसआई ओमसिंह ने धुंधाड़ा में अवैध रूप से शराब बेच रहे सांवलदान को गिरफ्तार कर बेचने को रखी 30 पव्वे देशी शराब के जब्त किए। वहीं करवड़ थाने के हैड कांस्टेबल मोहनलाल ने गंगाणी गांव में अवैध रूप से शराब बेच रहे मुकेश को गिरफ्तार कर बेचने को रखे 29 पव्वे देशी शराब के जब्त किए। वहीं मंडोर थाने के एएसआई जगदीशचन्द्र ने 8 मील मंडोर क्षेत्र में अवैध रूप से शराब बेच रहे अल्ताफ को गिरफ्तार किया। विवेक विहार थाने के हैड कांस्टेबल मुरारीलाल ने एम सेक्टर विवेक विहार क्षेत्र में अवैध रूप से शराब बेच रहे बलविन्दर सिंह को गिरफ्तार किया।

फर्जी दुल्हन बनकर ठगने वाले गिरोह को यूपी से पकड़ा

चौमूं पुलिस ने पति-पत्नी सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया

- आरोपियों से पूछताछ जारी, अन्य वारदातों के खुलासे की संभावना जताई है

जयपुर। चौमूं पुलिस ने शादी का झांसा देकर लाखों रुपए की ठगी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए पति-पत्नी सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी उत्तर प्रदेश के मथुरा से पकड़े गए हैं और पिछले चार माह से फरार चल रहे थे। पुलिस उपायुक्त (पश्चिम) के निर्देश पर सहायक पुलिस आयुक्त उषा यादव और थानाधिकारी हरबेंद्र सिंह के नेतृत्व में गठित टीम ने कार्रवाई को अंजाम दिया।

थानाधिकारी हरबेंद्र सिंह ने बताया कि परिवादी सुरेश जाट ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। शिकायत के अनुसार, आरोपियों ने परिचितों के माध्यम से शादी का प्रस्ताव देकर विश्वास जीता। भरतपुर और मथुरा में लड़की दिखाकर जल्दबाजी में शादी तय की गई और अलग-अलग बहानों से करीब 5 लाख रुपए ठग लिए गए।

आरोपियों ने पीड़ित से दुल्हन के कपड़े, जेवर और अन्य सामान भी दिलवाया। होटल में शादी की रस्म पूरी करने के बाद सामाजिक दबाव बनाकर अतिरिक्त रकम भी वसूली गई। बाद में महिला दुल्हन गहने पहनकर वॉशरूम जाने का बहाना बनाकर फरार हो गई।जांच में सामने आया कि दुल्हन और उसका साथी पहले से ही पति-पत्नी हैं और यह गिरोह पूर्व में भी इसी तरह की वारदातें कर चुका है। पुलिस ने तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर मथुरा में दबिश देकर आरोपी टीटू सिंह (28) निवासी पचावर महावन, राधा (35) पत्नी टीटू सिंह और देवेन्द्र सिंह (52) निवासी डीग, भरतपुर को गिरफ्तार किया। आरोपियों से पूछताछ जारी है और अन्य वारदातों के खुलासे की संभावना जताई जा रही है। कार्रवाई में उपनिरीक्षक अशोक कुमार, हैड कांस्टेबल जितेंद्र, कांस्टेबल मूलचंद, राकेश और महिला कांस्टेबल सुमन की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सायबर ठगी की शिकायत दर्ज

जोधपुर, (कासं)। शहर के केरू क्षेत्र में रहने वाले एक व्यक्ति के साथ में गत साल दिसम्बर में 13.28 लाख का फ्रॉड हो गया। उसने ऑनलाइन शिकायत दी थी। बाद में पता लगा कि उसके द्वारा ऑनलाइन एक स्कीम में पैसा लगाया गया था। सायबर फ्रॉड के शिकार की ऑनलाइन शिकायत पर एटीएस जयपुर की तरफ से संबंधित थाना राजीव गांधी नगर में रिपोर्ट भेजी गई। इस पर पुलिस ने जीरो नंबर की एफआईआर पर अब जांच आरंभ की है। थानाधिकारी रविंद्रपाल सिंह ने बताया कि केरू निवासी झूमरराम चौधरी के साथ गत साल दिसम्बर को यह फ्रॉड हुआ था। उसने किसी स्कीम के झांसे में आकर ऑनलाइन रकम को जमा करवाया था।

स्मैक तस्करी का भंडाफोड़, घर से स्मैक और नकदी बरामद

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे 'ऑपरेशन एंटी वेनम' के तहत रेनवाल थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए स्मैक तस्करी के नेटवर्क पर बड़ी चोट की है। पुलिस ने एक घर पर दबिश देकर 6.86 ग्राम अवैध स्मैक और 6 लाख 42 हजार रुपए बरामद किए हैं।

पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद मीणा ने बताया कि जयपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक राहुल प्रकाश के निर्देश पर 15 से 31 मार्च तक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में 30 मार्च को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रजनीश पूनियां और वृत्ताधिकारी शिवरतन गोदारा के सुपरविजन में रेनवाल थानाधिकारी नरेश कंवर के नेतृत्व में टीम गठित कर कार्रवाई की गई। टीम ने झालरा निवासी राधेश्याम उर्फ राजू मीणा के घर पर दबिश दी। कार्रवाई के दौरान आरोपी घर पर नहीं मिला, लेकिन उसकी पत्नी संतोष देवी उर्फ कविता मौजूद थी। उसकी मौजूदगी में तलाशी लेने पर एक कमरे में डबल बेड के बॉक्स से नीले रंग की प्लास्टिक थैली बरामद हुई। थैली की जांच में एक पारदर्शी पाउच में मटमैले रंग का पाउडर मिला, जो जांच में स्मैक पाया गया। इसका वजन 6.86 ग्राम निकला। साथ ही उसी थैली से 6,42,100 रुपए नकद भी बरामद हुए, जिसे प्रारंभिक तौर पर स्मैक की बिक्री से जुड़ा माना जा रहा है। पूछताछ में आरोपी की पत्नी ने बताया कि यह सामान उसका पति लाता था और उसे इसकी जानकारी नहीं थी। पुलिस ने स्मैक और नकदी को जब्त कर आरोपी राधेश्याम उर्फ राजू मीणा के खिलाफ एनडीपीएस में मामला दर्ज किया है। फिलहाल आरोपी फरार है और उसकी तलाश में लगातार दबिश दी जा रही है।

निवाई में बरसात के साथ ओले गिरे

निवाई, (निसं)। मौसम का मिजाज मंगलवार को भी बदला-बदला सा रहा। सुबह से ही आकाश में बादल छाए रहे जिससे सूर्य व बादलों के बीच आंख मिचोली का खेल चलता रहा। दोपहर बाद अचानक तेज बारिश हुई। विगत दो दिनों से पश्चिमी विक्षोभ के चलते मौसम में भारी परिवर्तन चल रहा है। मंगलवार शाम को भी बारिश हुई। शहर के कुछ क्षेत्र में बरसात के साथ चने के आकार के ओले गिरे।

इसी प्रकार गांव पलेई में भी बेर के आकार के ओले गिरे है। बारिश से खेतों में काटकर रखी हुई फसलें गीली हो गई। इसकी वजह से किसानों को नुकसान हुआ है। मौसम के बदलाव व बारिश के होने से सामान्य तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई है। ठंडी हवा के चलने से गर्मी के मौसम में भी ठंड महसूस हो रही है। दिन के तापमान के साथ ही रात के तापमान में भी गिरावट चल रही है। मंगलवार को सुबह से शाम तक आकाश में बादल छाए रहे। दोपहर में हवा के साथ हल्की बूंदाबांदी भी हुई। दोपहर बाद अचनाक तेज बारिश हुई। किसान दशरथसिंह पलेई, रामजीलाल करीरिया, तुलसीराम चौधरी, गिर्राज खटाणा, सीताराम माहुर व नाथूलाल कसाना सहित अन्य किसानों ने बताया कि बेमौसम बरसात से सिवाय नुकसान के कुछ नहीं है। कटी हुई फसलों के गीले हो जाने से दाना कमजोर होने की संभावना हो गई है। जिससे भाव भी कम मिलेंगे।

खेत पर बने मकान में लगी आग : रामगंजमंडी उपखंड क्षेत्र के पीपाखेड़ी गांव में खेत पर बने एक मकान में अचानक आग लग गई।

जानकारी के अनुसार आग बिजली की स्प्रिंग (तार) में खराबी के कारण लगी बताई जा रही है। आग लगने से खेत में रखा चारा और पाइप जलकर पूरी तरह खाक हो गए। इस घटना में करीब 20 हजार रुपये का नुकसान हुआ है। ग्रामीणों की मदद से किसी तरह आग पर काबू पाया गया।

स्मैक सहित दो जनों को पकड़ा, बाइक जब्त

- आरोपियों के विरूद्ध एनडीपीएस एक्ट में मामला दर्ज किया

छबड़ा, (निसं)। पुलिस ने मादक पदार्थ स्मैक के खिलाफ कार्यवाही करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 21.55 ग्राम स्मैक व मोटरसाइकिल को जब्त किया।

सीआई राजेश खटाना के अनुसार विशेष अभियान ऑपरेशन नशा विनाश के तहत की जा नाकाबंदी के तहत जाब्ता कडैयावन कच्चा रास्ता छबड़ा कवाई मुख्य रोड खोपर गांव पहुंचा। यहां आने-जाने वाले वाहनों को चैक कर रहे थे कि एक बाइक छबड़ा की तरफ से आ रही थी, जिस पर दो व्यक्ति बैठे थे। जिन्हें रोकना चाहा लेकिन उक्त बाइक चालक ने पुलिस वाहन व जाब्ते को देखकर अपने बाइक को तेज गति से कडैयावन कच्चे रास्ते की तरफ ले जाने लगा, जिस पर संदेह होने पर पीछा कर डिटेन किया तो चालक से नाम पता पूछा तो बाइक चालक ने घबराई हुई स्थिति में अपना नाम राकेश मीणा (26) पुत्र मूलचन्द निवासी वार्ड नम्बर दो छीपाबड़ौद व पीछे बैठे व्यक्ति ने अपना नाम व पता भगवान सिंह मीणा पुत्र मूलचन्द निवासी कडैया थाना हरनावदाशाहजी का होना बताया। जिनसे कारण पूछा तो कोई संतोषप्रद जबाब नहीं दिया। डिटेनशुदा भगवानसिंह मीणा की तलाशी लेने पर जैब में अवैध मादक पदार्थ स्मैक मिली। आरोपी के कब्जे से मिली 21.55 स्मैक व एक बाइक को जप्त किया जाकर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। स्मैक के क्रय-विक्रय के बारे में पूछा तो बताया कि यह स्मैक सुरेन्द्र मीणा निवासी प्रेमपुरिया छीपाबडौद से खरीदना बताया तथा रामचरण प्रजापति निवासी खोपर को बेचान करने की बात कही। इस पर आरोपियों के विरूद्ध एनडीपीएस एक्ट में मामला दर्ज किया गया है।

प्रदेश में ग्रीन मोबिलिटी को "पीएम ई-ड्राइव योजना" नई ऊंचाई देगी : ऊर्जा मंत्री

- 'जयपुर में 112, अजमेर में 49 और उदयपुर में 39 चार्जिंग स्टेशनों के साथ-साथ प्रदेश के मुख्य राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्गो पर 34 स्टेशन स्थापित किए जाएंगे'

कोटा, (निसं)। ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने "प्रधानमंत्री ई-ड्राइव" योजना के तहत प्रदेश में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार के लिए केन्द्र सरकार द्वारा 81.12 करोड़ रुपये की स्वीकृति दिए जाने का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन विकसित राजस्थान के संकल्प को सिद्ध करने की दिशा में यह एक क्रांतिकारी कदम है। इस बजट से राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम द्वारा प्रदेश के 262 चिहिंत स्थानों पर 591 पब्लिक चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। जिससे राज्य में क्लीन एनर्जी के प्रति आमजन का भरोसा बढ़ेगा।

ऊर्जा मंत्री नागर ने विशेष रूप से कोटा संभाग के संदर्भ में हर्ष व्यक्त करते हुए बताया कि औद्योगिक और शैक्षणिक हब के रूप में अपनी पहचान रखने वाले कोटा में 28 नए चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि कोटा को भविष्य के स्मार्ट और प्रदूषण मुक्त शहर के रूप में विकसित करना हमारी प्राथमिकता है। इन स्टेशनों की स्थापना से शहर के भीतर इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर और फोर-व्हीलर चालकों को सुलभ चार्जिंग की सुविधा मिलेगी। जिससे स्थानीय परिवहन सुगम होगा और कोचिंग विद्यार्थियों और पर्यटकों को भी पर्यावरण अनुकूल यातायात के विकल्प मिलेंगे। योजना की जानकारी देते हुए ऊर्जा मंत्री ने बताया कि यह विस्तार केवल शहरों तक सीमित नहीं है। जयपुर में 112, अजमेर में 49 और उदयपुर में 39 चार्जिंग स्टेशनों के साथ-साथ प्रदेश के मुख्य राष्ट्रीय एवं राज्य राजमार्गों पर 34 स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। मंत्री नागर ने स्पष्ट किया कि इन स्टेशनों के लिए सरकारी विभागों की भूमि का उपयोग किया जाएगा। जिससे परियोजना का क्रियान्वयन त्वरित गति से हो सकेगा। राजमार्गों पर चार्जिंग नेटवर्क मजबूत होने से अंतरराज्यीय और लंबी दूरी की यात्रा करने वाले ईवी उपभोक्ताओं का बैटरी खत्म होने का डर समाप्त होगा। ऊर्जा मंत्री नागर ने कहा कि पीएम इलेक्ट्रिक ड्राइव रिवॉल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एन्हांसमेंट (पीएम ई-ड्राइव) योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य में कार्बन उत्सर्जन को न्यूनतम करना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम इस पूरी परियोजना की प्रभावी मॉनिटरिंग करेगा ताकि गुणवत्तापूर्ण और आधुनिक तकनीक वाले चार्जिंग पॉइंट स्थापित हों। ऊर्जा मंत्री ने विश्वास जताया कि इस पहल से राजस्थान न केवल ग्रीन एनर्जी के उत्पादन में बल्कि हरित परिवहन के उपयोग में भी देश का अग्रणी राज्य बनेगा। जिससे आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ हवा और प्रदूषण मुक्त वातावरण मिल सकेगा।

मोर पर श्वानों का हमला

निवाई, (निसं)। मंगलवार की सुबह रास्ते में विचरण कर रहे राष्ट्रीय पक्षी मोर पर कुत्तों के झुंड ने हमला कर दिया। मोर की चीख पुकार सुनकर भागीरथ सैनी, धर्मराज कजोटिया व सोहन माली ने कुत्तों से मोर को बचा लिया।

कोटा : जेकेलॉन अस्पताल परिसर में वाहन पार्किं शुल्क को लेकर विवाद

मरीज के परिजन व स्टैण्ड कर्मचारियों के बीच झगड़ा हो गया था

- विवाद इतना बढ़ गया कि मारपीट की नौबत आ गई, झगड़े में दोनों तरफ के लोगों को चोट आई है

कोटा, (निसं)। नयापुरा थाना क्षेत्र स्थित जेकेलॉन अस्पताल परिसर में संचालित वाहन स्टेंड पर मरीज के परिजन व स्टैण्ड संचालक कर्मचारी के बीच पर्ची शुल्क काटने को लेकर विवाद का मामला सामने आया है, इसमें मरीज के साथ आए परिजनों और पार्किंग स्टाफ के बीच झगड़ा हो गया। पार्किंग शुल्क को लेकर शुरू हुए इस झगड़े में हाथापाई तक नौबत आ गई। झगड़े के दौरान पत्थरबाजी का भी मामला सामने आ रहा है। पूरा घटनाक्रम सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हुआ है। मामले की सूचना मिलते ही अस्पताल के उप अधीक्षक भी मौके पर पहुंचे और इसकी सूचना पुलिस को दी गई, सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची।

जानकारी के अनुसार बूंदी जिले से एक कार में कुछ जने मरीज को लेकर अस्पताल आए थे और जब वह कार को लेकर निकलने लगे तो वाहन स्टैण्ड पर कार्यरत कर्मचारी ने उनको पार्किंग शुल्क कटवाने के लिए कहा था, जिसको लेकर विवाद हो गया और विवाद इतना बढ़ गया कि मारपीट की नौबत आ गई। झगड़े में दोनों तरफ के लोगों को चोट आई।

जेकेलॉन अस्पताल उप अधीक्षक डॉ. अमित जोशी ने बताया कि जेकेलॉन अस्पताल स्टैण्ड पर हंगामे की सूचना मिलने पर मौके पर गये। अस्पताल उप अधीक्षक ने बताया कि कुछ जने कार से आये थे और पार्किंग शुल्क को लेकर दोनों तरफ से झगड़ा हो गया, जिसमें मरीज के परिजनों को भी चोट आई और स्टैण्ड पर कार्यरत कर्मचारियों को भी चोट आई है। मौके पर पहुंचकर इसकी सूचना पुलिस को दी गई। उप अधीक्षक ने कहा कि पुलिस जांच के बाद हमारी कमेटी बनाई जाएगी, अगर पार्किंग कर्मियों की गलती हुई तो कठोर कार्यवाही की जायेगी।

नयापुरा थाने के सब इंस्पेक्ट दीपेन्द्र शर्मा ने बताया कि जेकेलॉन अस्पताल में वाहन पार्किंग शुल्क को लेकर मरीज के परिजनों व स्टैण्ड पर कार्यरत कर्मचारी के बीच विवाद हो गया था। दोनों तरफ से लोगों ने एक दूसरे के साथ मारपीट की शिकायत दी है, दोनों तरफ से शिकायत लेकर मामला दर्ज किया गया है, सीसीटीवी फुटैज के आधार पर मामले की जांच की जा रही है।

पड़ौसी के कूलर में आये करंट से मासूम की दर्दनाक मौत

खेलते-खेलते पड़ौसी के घर के गेट पर पहुंचा था बालक

जोधपुर, (कासं)। शहर के निकटवर्ती बनाड़ स्थित खोखरियां, सांसियों की ढाणी में दस साल के मासूम की करंट लगने से मौत हो गई। वह खेलते हुए पड़ौसी के घर के गेट पर पहुंचा और वहां लगे कूलर की चपेट में आने से करंट लग गया। घटना के समय बारिश भी हो रखी थी। बच्चें की मां ने पड़ौसी परिवार को नामजद कर केस दर्ज कराया है।

बनाड़ पुलिस ने बताया कि खोखरियां, सांसियों की ढाणी में रहने वाला दस वर्षीय रेहान पुत्र पवन सांसी सोमवार की सुबह खेलते हुए पड़ौसी के मकान तक आ गया, जहां गेट पर एक कूलर लगा हुआ था। इस दौरान वह कूलर के नजदीक आ गया और उसे करंट लग गया। हादसे में उसकी मौत हो गई। मृतक रेहान की मां सुमन ने अपने पड़ौसी सोनाराम आदि के खिलाफ केस दर्ज कराया है। गेट पर कूलर लगाने से हादसे में उसके बच्चे की जान गई है। बनाड़ पुलिस ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम करवाने के बाद परिजन को सुपुर्द किया गया है। इसमें अठिाम जांच की जा रही है। वक्त घटना क्षेत्र में बारिश भी हो रखी थी।

खाईवाली करते दो गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। शहर के एयरपोर्ट पुलिस थाना क्षेत्र शिकारगढ़ में रात के समय एक दुकान में गुब्बा खेलने की सूचना पर पहुंची पुलिस को विरोध झेलना पड़ा। गुब्बेड़ी ने एक पुलिसकर्मी की कलाई को दांतों से काट लिया, जिससे वह लहूलुहान हो गया। मौके से दो जनों को गिरफ्तार किए जाने के साथ गुब्बा की पर्चियां और खाली व लिखित डायरियां आदि जब्त की गई। आरोपी संगठित गिरोह बनाकर गुब्बा खाईवाली कर लोगों को नुकसान पहुंचा रहे थे। एक का दस गुना पर गुब्बा खेला जा रहा था।

एयरपोर्ट थाना पुलिस ने बताया कि 30 मार्च की रात हैड कांस्टेबल रामखिलाड़ी, कांस्टेबल अजय एवं वाहन चालक कांस्टेबल राकेश आदि शिकारगढ़ में कन्हैया नगर, एसबीआई बैंक के पास एक दुकान में गुब्बा खेलने की जानकारी पर वहां पहुंचे। तब पुलिस को देखकर दो तीन लोग फरार हो गए। फरार हुए व्यक्तियों की पहचान दिलीप, मोहन एवं संजय प्रजापत के रूप में की गई। फिर पुलिस ने मौके से सुभाष विश्नोई एवं सोहनलाल को पकड़ा। घटना के समय एसबीआई बैंक के पास स्थित जगदम्बा वाइंस शॉप के पास वाली दुकान के अन्दर लाइट जलती नजर आई तथा दुकान का शटर बाहर से नीचे किया था। उसके किसी प्रकार का लॉक नहीं लगा था।

जो 4 मेहमान होटल आए थे वे लंबे समय से उनके दोस्त और फैमिली मेंबर हैं। शाहीन शाह अफरीदी ने ही उनसे रिक्वेस्ट किया था कि उनके दोस्तों को अंदर लाने में मदद करें।

- सिकंदर रजा

पाक खिलाड़ी, होटल की सुरक्षा के आरोप को लेकर बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी मोहम्मद शमी

टीम इंडिया से बाहर चल रहे मोहम्मद शमी ने अपने रिटायरमेंट को लेकर एक बड़ा बयान दिया है। उन्होंने अपने संन्यास पर कहा कि, जब मैं थक जाऊंगा, मैं उस दिन खेल छोड़ दूंगा। लेकिन अभी मैं रिटायरमेंट के बारे में सोच भी नहीं रहा हूं, क्योंकि ऐसी सोच आपको पीछे खींचती है। अगर ये विचार आपके मन में आता है तो इसका मतलब है कि आप बोर हो गए हैं और मैंने ये पहले भी कहा है जिस दिन मैं सुबह उठूंगा और ये तय करूंगा कि मैं बोर हो गया हूं, उसी दिन मैं क्रिकेट छोड़ दूंगा। तो हां, जिस दिन मुझे आलस आएगा या मैं बोर हो जाउंगी, मैं क्रिकेट छोड़ दूंगा।

"भारत ने अक्टूबर 2024 में बांग्लादेश के खिलाफ 297/6 का स्कोर बनाया, जो टी-20 इतिहास में किसी भी फुल मेंबर टीम का सर्वोच्च स्कोर है।

पंजाब ने गुजरात को 3 विकेट से हराया

// डेब्यू मैच में कूपर कोनोली की फिफ्टी //

मुल्लापुर, 31 मार्च। आईपीएल 2026 के चौथे मुकाबले में न्यू चंडीगढ़ में खेले गए मैच में पंजाब किंग्स ने गुजरात टाइटंस को 3 विकेट से हरा दिया है। पहले बल्लेबाजी करते हुए जीटी ने 20 ओवर में 163 रनों का लक्ष्य दिया था, जिसे पंजाब किंग्स ने कूपर कोनोली की दमदार पारी की मदद से 19.1 ओवर में हासिल कर लिया।

मुल्लापुर न्यू चंडीगढ़ के यादवेंद्र सिंह अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में मंगलवार को खेले गए मुकाबले में पंजाब किंग्स के कप्तान श्रेयस अय्यर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी गुजरात टाइटंस की टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और साई सुदर्शन 11 गेंदों में 13 रन बनाकर मार्को यान्सेन का शिकार हो गए। इसके बाद शुभमन गिल और जोस बटलर ने परिस्थिति को संभालने की कोशिश की। हालांकि, युजवेंद्र चहल ने गिल को ज्यादा देर मैदान पर नहीं टिकने दिया और वे 27 गेंदों में 39 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। जोस बटलर को भी चहल ने ज्यादा देर नहीं टिकने दिया और वे भी 33 गेंदों में 38 रन बनाकर आउट हुए। बटलर से पहले ग्लेन फिलिप्स को विजय कुमार वैशाक ने पवलियन भेजा। वैशाक ने शानदार गेदंबाज करते हुए वाशिंगटन सुंदर और शाहरूख खान को क्रमशः 18 और 4 रनों के निजी स्कोर पर पवेलेयिन भेजा। पंजाब किंग्स की ओर से चहल ने दो, वैशक ने 3 और मार्को यान्सेन ने एक विकेट हासिल किया।

दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपर जांयट्स के बीच कांटे की टक्कर

लखनऊ, 31 मार्च। आईपीएल 2026 के पांचवें मुकाबले में बुधवार को दिल्ली कैपिटल्स की भिड़ंत लखनऊ सुपर जायंट्स के साथ होगी। दोनों टीमों के बीच ये मुकाबला लखनऊ के भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में खेला जाना है। लखनऊ और दिल्ली के बीच इस लीग में कांटे की टक्कर देखने को मिलती है।आईपीएल में अब तक इन दोनों टीमों के बीच कुल 7 मुकाबले खेले गए हैं। इनमें से 4 मुकाबले दिल्ली ने जीते हैं, जबकि 3 मुकाबलों में लखनऊ को जीत मिली हुई है। आईपीएल 2025 में इन दोनों टीमों के बीच कुल 2 मुकाबले खेले गए थे और दोनों ही बार दिल्ली कैपिटल्स विजयी रही थी। दिल्ली अपने इस दबदबे को इस सीजन भी कायम रखने के इरादे से मैदान पर उतरेगी।

दिल्ली की टीम इस सीजन काफी संतुलित नजर आ रही है। टॉप ऑर्डर में टीम के पास केएल राहुल का अनुभव मौजूद है। राहुल का प्रदर्शन पिछले सीजन कमाल का रहा था और उन्होंने 13 मैचों में 149 के स्ट्राइक रेट से 539 रन बनाए थे। राहुल के जोड़ीदार के तौर पर पृथ्वी शॉ को मौका मिल सकता है। अभिषेक पोरेल ने भी आईपीएल 2025 में अपनी बल्लेबाजी से खासा प्रभावित किया था। पोरेल ने 13 मैचों में 146 के स्ट्राइक रेट से 301 रन बनाए थे। करुण नायर, ट्रिस्टन स्टब्स और डेविड मिलर से भी इस सीजन टीम को दमदार प्रदर्शन की उम्मीद होगी। मिलर के आने से टीम का मध्यक्रम और ज्यादा संतुलित दिख रहा है। समीर रिजवी और आशुतोष शर्मा फिनिशर की भूमिका निभाते नजर आएंगे। वहीं, लखनऊ सुपर जायंट्स का टॉप ऑर्डर काफी दमदार दिख रहा है। मिचेल मार्श और एडेन मार्करम से इस सीजन भी टीम को बेहतरीन प्रदर्शन की उम्मीद होगी। वहीं, निकोलस पूरन अकेले दम पर किसी भी मैच का रुख पलट सकते हैं। हालांकि, कप्तान ऋषभ पंत की फॉर्म लखनऊ टीम के लिहाज से काफी अहम होगी। हालांकि, लखनऊ का मिडिल ऑर्डर कमजोर दिख रहा है।

जयपुर क्रिकेट एकेडमी ने सुराना एकेडमी को हराया, सिद्धि शर्मा ने चार विकेट लिये

जयपुर, 31 मार्च। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित तथा एल वी फार्मा द्वारा प्रायोजित महिला ए डिवीजन लीग में आज खेले गए मैच में जयपुर क्रिकेट एकेडमी ने सुराना एकेडमी को 8 विकेट से हराया। सुराना एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए आरजू विश्नोई के 15 रन, कृति उपाध्याय के 10 रन, भूमिका जांगिड़ के 14 रन, आकृति यादव के 12 रन से 29 ओवर में 94 रन बनाकर आउट हो गई। जयपुर क्रिकेट एकेडमी के लिए सिद्धि शर्मा ने 11 पर 4, प्रिया सामोता ने 22 पर 3, मैना सियोल व वेदिका सिंह ने एक - एक विकेट लिए। जवाबी पारी में जयपुर क्रिकेट एकेडमी ने शिवानी चौधरी के 32 रन, सीमा जाट के 42 रन नाबाद से 19.5 ओवर में 2 विकेट पर 95 रन बनाकर मैच जीत लिया। सुराना एकेडमी के लिए भूमिका जांगिड़ व आरजू विश्नोई ने एक - एक विकेट लिया।

स्टेट लेवल यूथ कंप अंडर-17 नैना एकेडमी ने केएमआर एकेडमी को हराया

जयपुर, 31 मार्च। राजस्थान यूथ क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय यूथ कप अंडर -17 क्रिकेट प्रतियोगिता में आज खेले गए मैच में नैना एकेडमी ने के एम आर एकेडमी को 5 विकेट से हराया। नैना ग्राउंड पर के एम आर एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए माधव गोपाल के 40 रन, अमन चौधरी के 46 रन, जीतू के 48 रन, हर्ष पांडे के 19 रन, वीर के 14 रन व कृष्ण के 12 रनो से 35 ओवर में 8 विकेट 195 रन बनाए नैना एकेडमी के लिए आरव चौधरी ने 34 पर 2, आशीष शर्मा ने 38 पर 2, ऋषभ, आशीष प्रजापत व कल्पेश शर्मा ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में नैना एकेडमी की टीम को बारिश से बाधित मैच में वी जे डी नियम से 22 ओवर में 137 रनो का लक्ष्य मिला जो 19.5 ओवर में 5 विकेट पर प्राप्त कर लिया नैना एकेडमी के लिए मानव रोधा ने 38 रन, रोहित चार्नेल ने 38 रन, निश्चल शर्मा ने 16 रन व उर्मित सिंह ने नाबाद 15 रन बनाए। के एम आर एकेडमी के लिए कृष्णा, जीतू व अमन चौधरी ने एक - एक विकेट लिया।

पंच गौरव योजना के तहत चौगान स्टेडियम में हुआ कबड्डी शिविर का आयोजन

जयपुर, 31 मार्च। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशों की अनुपालना में जयपुर के चौगान स्टेडियम में पंच गौरव - एक जिला, एक खेल योजना के तहत कबड्डी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को ट्रैक सूट एवं स्पोर्ट्स शूज प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। समारोह में यह भी उल्लेख किया गया कि चौगान स्टेडियम से अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के कबड्डी खिलाड़ी निकलकर देश-प्रदेश का नाम रोशन कर चुके हैं। यह कबड्डी प्रशिक्षण शिविर 22 मार्च से 31 मार्च तक आयोजित किया गया, जिसमें खिलाड़ियों के लिए आवास, भोजन एवं प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की गई। शिविर में कुल 22 बालक एवं 22 बालिका खिलाड़ियों ने भाग लिया। बालक वर्ग को कोच श्री फूलचंद गुर्जर द्वारा प्रशिक्षण दिया गया, जबकि बालिका वर्ग में महिला कोच आशा चौधरी ने प्रशिक्षण प्रदान किया। जिला खेल अधिकारी मान सिंह निर्वाण ने बताया कि पंच गौरव - एक जिला, एक खेल राज्य सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले में चयनित खेल को बढ़ावा देकर स्थानीय प्रतिभाओं को निखारना एवं उन्हें बेहतर मंच उपलब्ध कराना है।

भारतीय वुशू टीम ने रचा इतिहास

जयपुर 31 मार्च। अंतर्राष्ट्रीय वुशु संघ के तत्वावधान में दिनांक 23 से 31 मार्च 2026 तक तिआनजिन, चीन में आयोजित 10वीं विश्व जूनियर वुशु प्रतियोगिता में भारतीय वुशु टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3 स्वर्ण, 2 रजत और 4 कांस्य पदकों सहित कुल 9 पदक जीतकर इतिहास रच दिया। हीरानंद कटारिया, उपाध्यक्ष, भारतीय वूशू संघ एवं सचिव, राजस्थान वूशू संघ, ने स्वर्ण पदक विजेताओं में थोंगाम उपेन्द्रो (45 किग्रा जूनियर बालक), नोंगमैथेम (52 किग्रा जूनियर बालक) तथा लोइतोंगबाम विक्टर (52 किग्रा यूथ बालक), रजत पदक मे युगराज (48 किग्रा यूथ), कोंथौजाम देविकरानी देवी (ताईची इवेंट), कांस्य पदक विजेताओं में गौतम मनकास (48 किग्रा जूनियर), अनु (48 किग्रा यूथ), राजकुमारी लांचेनबी चानू (चांगक्वान गर्ल्स) तथा कोंथौजाम देविकरानी देवी (ताईजिक्वान) को बधाई दी।

राजस्थान के कुशाग्र बीसीसीआई अंडर-19 हाई परफॉरमेंस कैंप हेतु बेंगलुरू जायेंगे

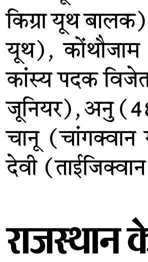

जयपुर 31 मार्च। बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 19 क्रिकेट प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करने वाले राजस्थान के युवा प्रतिभावान खिलाडी कुशाग्र ओझा को बीसीसीआई की आल इंडिया जूनियर चयन कमेटी ने बंगलुरु में बीसीसीआई द्वारा आयोजित होने वाले अंडर हाई परफॉरमेंस प्रशिक्षण शिविर हेतु चयनित किया गया है। कुशाग्र ओझा बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस में आगामी दिनांक 11 मई से दिनांक 9 जून तक आयोजित होने वाले अंडर 19 हाई परफॉरमेंस कैम्प में भाग लेंगे।

बीसीसीआई के समर्थन में उतरे, पारम्परिक केंद्र ही नहीं हर जगह खेले जायें टेस्ट : गांगुली

नई दिल्ली, 31 मार्च। भारत के पूर्व कप्तान और बंगाल क्रिकेट संघ के अध्यक्ष सौरव गांगुली चाहते हैं कि ईडन गार्डंस पर ज्यादा से ज्यादा टेस्ट हों लेकिन उन्हें यह देखकर भी खुशी होती है कि पारंपरिक प्रारूप के मैच गुवाहाटी और रांची जैसे केंद्रों पर खेले जा रहे हैं। बीसीसीआई ने पिछले सप्ताह भारतीय क्रिकेट टीम के 2026-27 के घरेलू सत्र का ऐलान करते हुए आस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के टेस्ट कोलकाता और मुंबई जैसे पारंपरिक केंद्रों पर नहीं कराने का फैसला किया है। ये मैच 21 जनवरी से 25 फरवरी तक नागपुर, चेन्नई, गुवाहाटी, रांची और अहमदाबाद में खेले जायेंगे। गांगुली ने स्पोटर्सस्टार की किताब 'मिरेकल एट ईडन' के विमोचन से इतर कहा ,'' ईडन गार्डंस पर बड़े टेस्ट मैच होते देखना हमेशा अच्छा लगता है। कैब के अध्यक्ष और पूर्व खिलाड़ी होने के नाते मैं चाहता हूं कि यहां टेस्ट मैच हो लेकिन हमने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट की मेजबानी की थी। इसके बाद टी20 विश्व कप के मैच हुए और अब आईपीएल के मैच भी यहां हो रहे हैं।'' उन्होंने कहा ,'' हम सभी चाहते हैं कि ईडन पर ज्यादा मैच हो लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि दूसरे मैदानों पर भी मैच होने चाहिये।'' गुवाहाटी नवंबर 2025 में ही टेस्ट केंद्र बना और वहां एक साल के भीतर दूसरा टेस्ट होने जा रहा हैं। वहीं अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम पर पिछले साल अक्टूबर में ही टेस्ट हुआ था। वानखेड़े स्टेडियम पर आखिरी टेस्ट नवंबर 2024 में खेला गया था। बीसीसीआई के कैलेंडर के अनुसार कोलकाता (तीन जनवरी , 2027) और मुंबई (नौ जनवरी, 2027) में जिम्बाब्वे के खिलाफ वनडे होंगे जबकि दिल्ली में इस साल 13 दिसंबर को श्रीलंका के खिलाफ वनडे खेला जायेगा। पहली बार इस मसले पर बोलते हुए बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष ने कहा ,'' पूरे भारत में अच्छे स्टेडियम है। चेन्नई , गुवाहाटी और रांची में टेस्ट होते देखकर अच्छा लगता है।वहां सुविधायें काफी अच्छी है।'' वहीं भारत के पूर्व स्पिनर वेंकटपति राजू ने कहा ,'' हमारे समय में कोलकाता, कानपुर, चेन्नई , दिल्ली और मुंबई में ही टेस्ट होते थे। उसका अपना आकर्षण था और मुझे लगता है कि फिर ऐसा ही होना चाहिये।'' गांगुली ने इस मौके पर यह भी कहा कि ईडन गार्डंस पर 2001 की टीम के मिलने की योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहा ,'' हम ईडन पर यह समारोह करेंगे। इस महीने की शुरूआत में होना था लेकिन सचिन तेंदुलकर के बेटे की शादी के कारण देर हो गई।

मरियम नवाज को महारानी कहना पड़ा महंगा, नसीम शाह पर पीसीबी ने ठोका 2 करोड़ रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली, 31 मार्च। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने सोमवार को तेज गेंदबाज नसीम शाह पर विवादित सोशल मीडिया पोस्ट के लिए दो करोड़ पाकिस्तानी रुपये (72,000 डॉलर) का भारी जुर्माना लगाया लेकिन अब इस पोस्ट को हटा दिया गया है। इस पोस्ट में क्षेत्रीय संकट के दौरान पाकिस्तान सुपर लीग के उद्घाटन मैच में पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज की मौजूदगी की आलोचना की गई थी। 2026 पीएसएल के पहले मैच के दौरान किए गए इस पोस्ट में गद्दाफी स्टेडियम में मरियम को दिए गए 'महारानी' जैसे शाही स्वागत पर व्यंग्य किया गया था। मरियम पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की बेटी और मौजूदा प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की भतीजी हैं। मरियम के संदर्भ में नसीम ने पोस्ट किया था, ''उन्हें लॉर्ड्स की महारानी की तरह व्यवहार क्यों किया जा रहा है? '' यह घटना तब हुई जब पीसीबी ने खाड़ी युद्ध के मद्देनजर ईंधन बचाने और सरकारी खर्च में कटौती के उपायों का पालन करने के लिए लाहौर और कराची में पीएसएल मैचों में प्रशंसकों के आने पर प्रतिबंध लगा दिया था। पीसीबी ने घोषणा की कि उसकी अनुशासन समिति ने नसीम को अपने केंद्रीय अनुबंध की शर्तों का उल्लंघन करने और सोशल मीडिया दिशानिर्देशों का पालन नहीं करने का दोषी पाया है। मरियम के पीएसएल के उद्घाटन मैच में मुख्य अतिथि के तौर पर गद्दाफी स्टेडियम पहुंचने के तुरंत बाद नसीम को 27 मार्च को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। ट्वीट को तुरंत हटा दिया गया था और यह दावा किया गया था कि अकाउंट हैक हो गया था लेकिन पीसीबी ने इस स्पष्टीकरण को स्वीकार नहीं किया। बोर्ड ने कहा कि नसीम ने कारण बताओ नोटिस का जवाब दिया था और अपने व्यवहार के लिए बिना शर्त माफी भी मांगी थी, लेकिन अनुशासन समिति ने उन्हें अनुशासनहीनता का दोषी पाया।

चेस कैंडिडेट्स में प्रज्ञानानंदा ने ड्रॉ खेला

नई दिल्ली, 31 मार्च। साइप्रस के पाफोस में चल रहे कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में भारत के ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा ने दूसर राउंड में चीन के वेई यी के खिलाफ ड्रॉ खेला। दूसरे राउंड में सभी मुकाबले ड्रॉ रहे। विमेंस में दिव्या देशमुख ने वैशाली रमेशबाबू से ड्रॉ खेला। दो राउंड के बाद फैबियानो कारुआना, आर प्रज्ञानानंदा और जावोखिर सिंदारोव 1.5 अंक के साथ संयुक्त बढ़त पर हैं। पहले राउंड में जीत के बाद प्रज्ञानानंदा ने दूसरे दिन भी अच्छा खेल दिखाया और काले मोहरों से वेई यी पर दबाव बनाया। हालांकि वेई यी ने अंत में शानदार वापसी कर मुकाबला बराबरी पर खत्म किया। प्रज्ञानानंदा के पास अतिरिक्त प्यादा था, लेकिन सफेद मोहरों की मजबूत स्थिति के कारण 46 चाल में ड्रॉ हुआ।

अंडर-16 स्टेट लेवल भारती कंवर मेमोरियल वनडे क्रिकेट लीग अमरनाथ के शतक व तवीश शर्मा के ऑलराउंड खेल से जीती मोहन क्रिकेट अकादमी व तारीक क्रिकेट अकादमी

जयपुर, 31 मार्च। चंबल स्पोर्ट्स द्वारा आयोजित अंडर 16 स्टेट लेवल भारती कंवर मेमोरियल वनडे क्रिकेट लीग का दिन का पहला मुकाबला नेशनल क्रिकेट ग्राउंड पर खेला गया। जिसमें तारीक क्रिकेट अकादमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 44.2 ओवर में 261 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें तवीश शर्मा ने 93 रन व रयान खान ने नाबाद 39 रन व उदित ने 36 रनों की पारी खेली।

जय भारती क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में प्रियांशु माली ने 5 विकेट व सचिन मीणा ने तीन विकेट लीए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी जय भारती क्रिकेट एकेडमी 36.2 ओवर में 187 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें प्रियांशु माली ने 48 रन व योजित सैनी ने 24 रनों का योगदान दिया। तारीक क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में मोहन सैनी ने तीन विकेट व विनय शर्मा, चेतन मीना, तवीश शर्मा ने दो-दो विकेट लिए। तारीक क्रिकेट अकादमी ने 74 रन से मुकाबला जीता। दिन का एक अन्य मैच नारायणा क्रिकेट ग्राउंड पर जयपुरिया क्रिकेट अकादमी व मोहन क्रिकेट अकादमी के मध्य खेला गया। जिसमें मोहन क्रिकेट अकादमी पहले बल्लेबाजी करते हुए 46.5 ओवर में 234 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें अमरनाथ ने 134 रन व अली चौधरी ने 27 रनों की पारी खेली। जयपुरिया क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में दिव्यांश ने तीन विकेट और साहिल डुकिया व लक्ष्यराज पारीक ने दो-दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी जयपुरिया क्रिकेट अकादमी 41.1 ओवर में 109 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें रचित पटेल ने 31 रन व पुलकित ने 30 रनों का योगदान दिया। मोहन क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में नायफ राशिद ने तीन विकेट और मनीष हरितवाल व रवि कश्यप ने दो-दो विकेट लिए। मोहन क्रिकेट अकादमी ने 125 रन से मुकाबला जीता।

वैभव सूर्यवंशी ने दिग्गजों का तोड़ा रिकॉर्ड 300 की स्ट्राइक रेट वाले खास क्लब में की एंट्री

नई दिल्ली, 31 मार्च। आईपीएल 2026 के तीसरे मैच में राजस्थान रॉयल्स के युवा 15 साल के ओपनर बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ कमाल की पारी खेली और अर्धशतक लगाते हुए अपनी टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। इस मुकाबले में राजस्थान को 8 विकेट से जीत मिली और वैभव ने 17 गेंदों पर 52 रन की पारी खेली।वैभव ने अपनी अर्धशतकीय पारी के दौरान 5 बेहतरीन छक्के और 4 चौके भी जड़े साथ ही साथ उनका स्ट्राइक रेट 305.88 का रहा।

वैभव ने अपनी इस पारी के दम पर दो बेहतरीन रिकॉर्ड अपने नाम किए जिसमें उन्होंने सुरेश रैना, रोहित शर्मा, अजिंक्य रहाणे समेत 8 भारतीय बल्लेबाजों का रिकॉर्ड एक साथ तोड़ा साथ ही साथ इस लीग में 300 की स्ट्राइक रेट से 50 प्लस की पारी खेलने वाले बैटर्स की लिस्ट में भी एंट्री मारी।आईपीएल में ये दूसरा मौका था जबकि वैभव ने किसी मैच में पावरप्ले से अंदर ही 50 प्लस की पारी खेली।

इसके साथ ही उन्होंने एक साथ सनी सोहल, सुरेश रैना, अजिंक्य रहाणे, प्रभसिमरन सिंह, नितिश राणा, प्रियांश आर्या, करुण नायर और रोहित शर्मा का रिकॉर्ड तोड़ दिया। इन सभी भारतीय बल्लेबाजों ने इस लीग में पावरप्ले के अंदर एक-एक बार 50 प्लस की पारी खेलने का कमाल किया था। वैभव ने सीएसके के खिलाफ जो 52 रन की पारी खेली इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 305.88 का रहा। इसके बाद वो आईपीएल में 300 की ज्यादा की स्ट्राइक रेट के साथ 50 प्लस की पारी खेलने वाले ओवरऑल 10वें बल्लेबाज बने साथ ही साथ ऐसा करने वाले चौथे भारतीय बल्लेबाज बने।

राजस्थान यूनाइटेड एफसी चौथे घरेलू मुकाबले में चानमारी एफसी से भिड़ने के लिए तैयार

जयपुर, 31 मार्च। राजस्थान यूनाइटेड एफसी इंडियन फुटबॉल लीग के अपने चौथे घरेलू मुकाबले में चानमारी एफसी का सामना करेगी। यह मैच 1 अप्रैल 2026 को विद्याधर नगर स्टेडियम में खेला जाएगा, जिसकी शुरुआत शाम 4:00 बजे (आईएसटी) होगी। जैसे-जैसे सीजन एक महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश कर रहा है, राजस्थान यूनाइटेड एफसी अपने घरेलू मैदान के लाभ का पूरा उपयोग करते हुए महत्वपूर्ण अंक हासिल करने का लक्ष्य रखेगी। केवल दो घरेलू मैच शेष रहने के कारण, यह मुकाबला टीम के लिए अपनी स्थिति मजबूत करने और लीग तालिका में शीर्ष स्थान की ओर बढ़ने का एक अहम अवसर है।

मिजोरम के आइजोल से आने वाली चानमारी एफसी अपनी ऊर्जावान और अनुशासित खेल शैली के लिए जानी जाती है और उनसे कड़ी टक्कर की उम्मीद है। राजस्थान यूनाइटेड एफसी संयम बनाए रखते हुए, खेल पर नियंत्रण स्थापित करने और महत्वपूर्ण मौकों का फायदा उठाने का प्रयास करेगी। इस मैच में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री बाबूलाल खराड़ी तथा क्रीड़ा भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री प्रसाद महांकर उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक एवं संरक्षक रामप्रसाद भी मौजूद रहेंगे। इसके साथ ही विशेष अतिथियों में कुसुम यादव, मेयर, जयपुर हेरिटेज नगर निगम, प्रमोद शर्मा, उद्योगपति एवं समाजसेवी, तथा अजय यादव, उपाध्यक्ष, भाजपा जयपुर शहर शामिल होंगे।

चौथे घरेलू मुकाबले से पहले चेयरमैन के.के. टाक ने कहा: अपने चौथे घरेलू मैच में प्रवेश करते हुए, हमारे लिए अपने समर्थकों के सामने उपलब्ध अवसरों का पूरा लाभ उठाना बेहद महत्वपूर्ण है। टीम ने कड़ी मेहनत की है और मुझे उनके प्रदर्शन पर पूरा विश्वास है। हम अपने प्रशंसकों, राजस्थान यूनाइटेड अल्ट्राज़ से उम्मीद करते हैं कि वे बड़ी संख्या में आकर इस महत्वपूर्ण समय में हमारा समर्थन करेंगे।

राजस्थान के लोकेंद्र सिंह, मान सिंह, अश्लेश पंवार व वीरभद्र सिंह भारतीय हैंडबॉल टीम में

ओपन सेंट्रल एशियन हैंडबॉल चैम्पियनशिप ताशकंद में

जयपुर, 31 मार्च। ताशकंद (उज़्बेकिस्तान) में 31 मार्च से 5 अप्रैल तक आयोजित हो रही पाँचवी ओपन सेंट्रल एशियन हैंडबॉल चैंपियनशिप मैं भाग लेने वाली भारतीय पुरुष टीम में राजस्थान के लोकेंद्र सिंह राठौड़, मान सिंह शेखावत, अश्लेश पंवार व वीरभद्र सिंह का चयन हुआ है। इस चैंपियनशिप में भाग लेने के लिये भारतीय पुरुष हैंडबॉल टीम मंगलवार सुबह ताशकंद पहुँच गई। राजस्थान राज्य हैंडबॉल संघ के मानद सचिव यश प्रताप सिंह ने बताया कि भारतीय टीम में चयनित दौसा के लोकेंद्र सिंह राठौड़ लेफ्ट विंग की पोजीशन पर खेलते है, जयपुर मान सिंह शेखावत राइट बैक पर जबकि जयपुर के ही अश्लेश पंवार राइट विंग की पोजीशन पर, वहीं बांसवाड़ा के वीरभद्र सिंह सेंटर बैक पर खेलते है।

अब राजस्थान के 24 जिलों में किसानों को दिन में बिजली- भजनलाल

मुख्यमंत्री ने सोमवार रात पोस्ट कर के इस उपलब्धि की औपचारिक घोषणा की

जयपुर, 31 मार्च। प्रदेश के 22 जिलों के बाद, अब दौसा एवं करौली जिले में भी कृषि उपभोक्ताओं को खेती के लिए दिन के दो ब्लॉक में बिजली सुलभ होने लगी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार रात अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल 'एक्स' पर पोस्ट करके यह बड़ी घोषणा की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री शर्मा ने प्रदेश के सभी जिलों में किसानों को दिन में बिजली देने का महत्वाकांक्षी संकल्प लिया है। इस क्रम में वर्ष 2024-25 के परिवर्तित बजट में यह कार्य चरणबद्ध रूप से वर्ष 2027 तक पूर्ण करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। फिलहाल प्रदेश के 22 जिलों में कृषि उपभोक्ताओं को दिन के दो ब्लॉक में विद्युत आपूर्ति की जा रही है। अब जयपुर विद्युत वितरण निगम के दौसा एवं करौली जिले भी इससे जुड़ने जा रहे हैं।

फिलहाल जयपुर डिस्कॉम के 7 जिलों, धौलपुर, बूंदी, कोटा, झालावाड़, जयपुर, डीग एवं भरतपुर, के किसानों को सिंचाई के लिए दिन के दो ब्लॉक में बिजली उपलब्ध हो रही है।

इसी तरह अजमेर डिस्कॉम के 12 जिलों-अजमेर, ब्यावर, भीलवाड़ा, डीडवाना-कुचामन, उदयपुर, सलूम्बर, राजसमंद, बांसवाड़ा, झुन्झुनू, सीकर, चित्तौड़गढ़ एवं डूंगरपुर तथा जोधपुर डिस्कॉम के 3 जिलों, जालौर, सिरोही एवं पाली में भी कृषकों को दिन के दो ब्लॉक में बिजली की आपूर्ति की जा रही है।

विगत समय में जयपुर डिस्कॉम ने दौसा एवं करौली जिलों में विद्युत तंत्र को मजबूत करने पर विशेष ध्यान दिया है। दौसा जिले में 33 केवी के 18 तथा करौली जिले में 33 केवी के 6 नए ग्रिड सब स्टेशन स्थापित किए गए हैं। इसके साथ ही, दौसा में 33 केवी के 47 सब स्टेशनों पर ट्रांसफार्मरों में 128.95 एमवीए की क्षमता वृद्धि की गई है। वहीं, करौली में 33 केवी के 15 सब स्टेशनों पर 49.45 एमवीए की क्षमता बढ़ाई गई है। दोनों जिलों में पीएम कुसुम योजना के कम्पोनेंट-ए एवं कम्पोनेंट-सी में 32 मेगावाट क्षमता के 17 सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं। इसका लाभ दौसा जिले में 52,460 तथा करौली जिले में 35,341 कृषि उपभोक्ताओं को दिन में बिजली आपूर्ति के रूप में मिलेगा तथा कड़ाके की सर्दी एवं बारिश में रात्रि के समय सिंचाई करने की मजबूरी नहीं रहेगी।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य के सभी जिलों में किसानों को दिन में बिजली देने का महत्वाकांक्षी संकल्प अपनी सरकार के पहले बजट में लिया था तथा वर्ष 2027 तक इस लक्ष्य को पूरा करने का समय निर्धारित किया था।**
- **सरकार का मानना है कि दिन में बिजली की आपूर्ति किसान को कड़ाके की सर्दी व बारिश में रात को सिंचाई कार्य करने की मजबूरी नहीं रहेगी तथा जंगली जानवरों का खतरा भी नहीं रहेगा।**

आज से टोल पर नकद भुगतान बंद केवल डिजिटल पेमेंट होगा

नई दिल्ली, 31 मार्च। देशभर में सड़क इस्तेमाल करने वाले लोग एक अप्रैल से टोल चार्ज नकद नहीं दे पाएंगे, क्योंकि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) पूरी तरह से डिजिटल पेमेंट सिस्टम अपनाने जा रहा है। हाईवे यात्रा को आधुनिक बनाने की दिशा में बड़े कदम के तौर पर एनएचएआई देशभर के टोल प्लाजा पर नकद भुगतान पर पूरी तरह से रोक लगा देगा।

एक अप्रैल से यात्रियों को टोल चार्ज सिर्फ फास्टैग या यूपीआई जैसे डिजिटल तरीकों से ही देना होगा। इस कदम का मकसद नेशनल हाईवे और एक्सप्रेसवे पर टोल कलेक्शन को अधिक कुशल बनाना और ज्यादा पारदर्शिता लाना है।

- **हाईवे यात्रा की आधुनिक बनाने के लिए एनएचएआई ने यह नया पारदर्शी कदम उठाया**

अधिकारियों का मानना है कि पूरी तरह से डिजिटल सिस्टम से गाड़ियां टोल प्लाजा से अधिक तेजी से निकल पाएंगी, जिससे लंबी लाइनें नहीं लगेंगी और यात्रा का समय बचेगा। टोल बूथ पर तेजी से प्रोसेसिंग होने से ईंधन की खपत कम होने और प्रदूषण में भी कमी आने की संभावना है।

इस बदलाव से कुछ यात्रियों को परेशानी हो सकती है, खासकर उन लोगों को जो डिजिटल पेमेंट के लिए तैयार नहीं हैं।

जयपुर में गैस की कालाबाजारी पर एक्शन, 118 सिलैंडर व उपकरण जब्त

जिला रसद अधिकारी के तीन विशेष दलों ने शहर में सघन निरीक्षण व कार्यवाही की

- **खो नागोरियान में नारायण सिटी, जेएनयू अस्पताल के पास, आगरा रोड, गौरव जनरल भंडार व बिंदायका में घरेलू व व्यवसायिक गैस सिलैंडर, रिफिलिंग मोटर आदि उपकरण पकड़े गये।**

जयपुर, 31 मार्च। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुसार तथा राजस्थान सरकार के मुख्य सचिव एवं खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के निर्देशों की अनुपालना में, जयपुर शहर में घरेलू एवं व्यावसायिक एलपीजी गैस सिलेंडरों की पर्याप्त उपलब्धता एवं निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अवैध रिफिलिंग, भण्डारण एवं कालाबाजारी के विरुद्ध सख्त अभियान चलाया जा रहा है।

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशन में जिला रसद अधिकारी प्रियव्रत सिंह चारण द्वारा 03 विशेष प्रवर्तन दलों का गठन कर शहर में सघन निरीक्षण एवं कार्रवाही की गई। इन दलों में प्रवर्तन अधिकारियों एवं निरीक्षकों को शामिल करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ दबिश देकर अवैध गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाया गया।

कार्रवाहियों के दौरान, कुल 118 घरेलू एवं व्यावसायिक गैस सिलेंडर, 3 इलेक्ट्रॉनिक कांटे, 2 उपकरण , 3 रिफिलिंग मोटर, 1 रेगुलेटर एवं 1 पिकअप वाहन जब्त किए गए हैं। अवैध गतिविधियों में संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध संबंधित पुलिस थानों में एफआईआर दर्ज करवाने की कार्रवाई हो रही हैं।

उल्लेखनीय है कि जिला रसद अधिकारी जयपुर प्रथम द्वारा जयपुर शहर में कार्यवाही हेतु तीन विशेष प्रवर्तन दलों का गठन किया गया। दल "ए" में कविता शर्मा प्रवर्तन अधिकारी व सुनिता चौधरी प्रवर्तन निरीक्षक विशेष प्रवर्तन दल "बी" में पूजा शर्मा प्रवर्तन अधिकारी व विजयलक्ष्मी शर्मा प्रवर्तन निरीक्षक एवं विशेष प्रवर्तन दल "सी" में निर्मला चौधरी प्रवर्तन अधिकारी व प्रिया गंगवानी प्रवर्तन निरीक्षक द्वारा जांच की गई।

पुलिस थाना खो-नागोरियान क्षेत्र में नारायण सिटी, जेएनयू हॉस्पिटल के पास संयुक्त कार्रवाई के दौरान, अवैध रिफिलिंग की पुष्टि होने पर 74 घरेलू एवं व्यावसायिक गैस सिलेंडर, 1 इलेक्ट्रॉनिक कांटा, 3 रिफिलिंग मोटर तथा 1 पिकअप वाहन जब्त किया गया। इसी प्रकार, आगरा रोड स्थित गौरव बर्तन भंडार एवं जग्गा की ढाणी में दबिश के दौरान 22 गैस सिलेंडर एवं एक उपकरण जब्त किए गए। भांकरोटा क्षेत्र में कार्रवाई के दौरान 8 गैस सिलेंडर, 1 कांटा एवं एक उपकरण जब्त किया गया, वहीं बिन्दायका क्षेत्र में की गई कार्रवाई में 14 गैस सिलेंडर, 1 कांटा तथा 1 रेगुलेटर रबर पाइप सहित जब्त किया गया।

उल्लेखनीय है कि जयपुर शहर में अवैध गैस रिफिलिंग एवं कालाबाजारी पर प्रभावी नियंत्रण हेतु जिला प्रशासन द्वारा संचालित 'ऑपरेशन प्रवर्तन - सतर्क नागरिक, सुरक्षित शहर' अभियान लगातार जारी है। जिला प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि किसी भी संदिग्ध गैस रिफिलिंग, भण्डारण अथवा कालाबाजारी से संबंधित सूचना तत्काल विभाग को दें, ताकि समय रहते कठोर कार्रवाई कर आमजन की सुविधा सुनिश्चित की जा सके।

बार-बार पश्चिम एशिया में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा है, अब "नाटो की पुनर्समीक्षा की जरूरत है, क्योंकि कुछ सदस्य देशों ने स्पष्ट रूप से अपने एयरबेस का उपयोग करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया है।"

इस बीच, ईरान ने सऊदी अरब में अमेरिकी सेना के एक कॉन्फ्रेंस स्थल के पास स्थित एक लक्ष्य पर बमबारी की, जहाँ लगभग 200 वरिष्ठ और मध्यम स्तर के अधिकारी पश्चिम एशिया में अपने अभियानों पर चर्चा कर रहे थे। बड़ी संख्या में अधिकारियों के हताहत होने की आशंका है, हालांकि अमेरिकी सेना की ओर से अभी तक इस हमले की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है।

ईरान ने दिन के दौरान, कुवैत के एक बड़े तेल टैंकर को भी निशाना बनाया, जिससे आग लग गई और वैश्विक बाजार के लिए तेल परिवहन बाधित हो गया। इन दोनों हमलों को एक बार फिर अत्यंत सटीक माना जा रहा है, जिससे बाहरी स्रोतों से खुफिया जानकारी मिलने की आशंका भी जताई जा रही है।

होर्मुज़ जलडमरूमध्य (स्ट्रेट) के लगातार बंद रहने और तेल एवं ऊर्जा सुविधाओं पर बढ़ते हमलों ने तेल की वैश्विक कीमतों को और बढ़ा दिया है। नवीनतम तेल बाजार रिपोर्ट के अनुसार, ब्रेंट कच्चे तेल की कीमत लगभग 110 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बनी हुई है।

अमेरिका में गैस की कीमतें बढ़कर 4 डॉलर प्रति गैलन तक पहुँच गई हैं, जो उपभोक्ताओं के लिए बड़ा झटका हैं और ट्रंप प्रशासन पर राजनीतिक दबाव भी बढ़ा रही हैं।

अमेरिकन रक्षा मुख्यालय पेंटागन में हुई एक ब्रीफिंग के दौरान, युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने कड़े शब्दों में कहा कि अमेरिका को पूरी जानकारी है कि रूस और चीन कहाँ, क्या कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि अमेरिका इन चुनौतियों का सीधे सामना कर रहा है और अपनी रणनीति के अनुसार उनसे निपट रहा है।

उन्होंने यह भी बताया कि अमेरिका रूस और चीन की गतिविधियों पर करीबी नज़र रखे हुए है। ट्रंप ने ईरान के मुद्दे से निपटने में फ्रांस की गैर-सहयोगी भूमिका की भी आलोचना की।

अब अमेरिकी सैन्य नेतृत्व यह स्वीकार करने लगा है कि ईरान को कहीं और से सूचना मिल रही है, जिससे उसके हमले अधिक सटीक और प्रभावी हो रहे हैं। अमेरिका ईरान से बातचीत करने और समझौता करने की अपील कर रहा है, लेकिन ईरान की ओर से अभी तक कोई खास प्रतिक्रिया नहीं मिली है।

सूरत के एक मकान में विस्फोट, पांच की मौत

सूरत, 31 मार्च। गुजरात के सूरत के लिंबायत क्षेत्र में मीठी खाड़ी के पास स्थित एक मकान में केमिकल में विस्फोट होने से भीषण आग लगने से 5 लोगों की मौत हो गई। इस घटना से पूरे इलाके में शोक और दहशत का माहौल है। बताया गया एक घर में साड़ियों का काम होता था, जिसके चलते वहां ज्वलनशील केमिकल रखा गया था।

- **मकान में साड़ियों का काम होता था व ज्वलनशील केमिकल रखा था, जिसमें ब्लास्ट से आग लगी।**

वकीलों को हटाना जेडीए ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नवंबर 2025 को जेडीए ने प्रताप सिंह को बिना कारण बताए हटा दिया। वरिष्ठ अधिवक्ता कमलाकर शर्मा ने अदालत में 11 नवंबर 2025 को जोनल कमिश्नर द्वारा जारी रिपोर्ट पेश की, जिसमें याचिकाकर्ता समेत कुछ अन्य वकीलों के कार्य को संतुष्टिपूर्ण बताया था।

अदालत ने दूसरी याचिका, जिसे अपने फैसले में उद्धृत किया, वह राम सिंह द्वारा दायर की गई थी। उन्हें वर्ष 2021 में, यानी पिछली गहलोत सरकार के कार्यकाल में जेडीए से हटाया गया था। रामसिंह की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता आर.एन.माथुर और उनके सहायक अधिवक्ता साहिल शर्मा पैरवी के लिए उपस्थित हुए थे। उन्होंने बताया कि याचिकाकर्ता राम सिंह के पास वर्ष 2012 में जेडीए द्वारा जारी अनुभव प्रमाण पत्र हैं, जिसमें उनके कार्य को संतुष्टिपूर्ण बताया गया था। आर.एन.माथुर ने अदालत को बताया कि, उनके मुवक्किल राम सिंह को भी जेडीए प्रशासन ने हटाने का कोई कारण नहीं बताया, परंतु उन्हें तत्कालीन यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल के आदेश पर हटाया गया था। राम सिंह को हटाने के तरीके से स्पष्ट होता है कि यह फैसला उन वकीलों को खुश करने के लिए था, जो तत्कालीन सरकार के करीबी थे और मंत्री की जान-पहचान के थे।

जेडीए की ओर से इस मामले में कहा गया कि सहायक अधिवक्ताओं की नियुक्ति अनुबंध के आधार पर की गई थी, यह जेडीए के कार्मिक नहीं थे। ऐसे में इन अधिवक्ताओं के पास कोई अधिकार नहीं है कि वे अपनी सेवाएं जारी रखने का अधिकार प्राप्त कर सकें। इस पर अदालत ने कहा कि अधिवक्ता न्यायिक प्रणाली में बहुत अहम भूमिका निभाते हैं, एक वकील को नौकर की भांति नहीं समझा जा सकता, उन्हें पद से हटाने अथवा लगाने के लिए एक ठोस वजह व कारण होना चाहिए। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि जेडीए ने इन अधिवक्ताओं को हटाते समय ऐसा कोई कारण या वजह नहीं बताई, जिससे उनकी कार्यशैली पर असंतोष जाहिर हो। इस मामले में अब यह देखना है कि अधिवक्ताओं को हटाने का कोई कारण था या जेडीए अधिकारियों ने अपनी मनमानी की थी। अदालत ने आगे कहा कि जेडीए की खुद की गाइडलाइन कहती कि अगर जोनल कमिश्नर अधिवक्ता से असंतुष्ट है तो उसे हटा सकता है, परंतु जेडीए की ओर से इस संबंध में कोई दस्तावेज अथवा तथ्य प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।

ईरान 1 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के समय के अनुसार यह रात 10:30 बजे का समय होगा। ईरान ने कहा है कि हर हमले के बदले इन कंपनियों की यूनिट्स को तबाह किया जाएगा। इसके साथ ही कर्मचारियों को तुरंत अपने कार्यस्थलों से हटने की चेतावनी भी दी गई है। ईरान ने 15 बड़ी अमेरिकी कंपनियों की सूची जारी की है। इसमें माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, एपल, इंटेल, आईबीएम, टेस्ला और बोइंग जैसी बड़ी कंपनियां शामिल हैं। इसके अलावा डेल, एचपी, सिस्को, ओरेकल और जेपी मॉर्गन जैसी कंपनियों के नाम भी सामने आए हैं। इससे साफ है कि ईरान अब सिर्फ सैन्य ठिकानों तक सीमित नहीं रहना चाहता।

छत्तीसगढ़ में 25 ईनामी नक्सलियों ने समर्पण किया

बीजापुर, 31 मार्च। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलवाद के खात्मे की तय समय सीमा के अंतिम दिन, आज मंगलवार को बस्तर आईजी सुन्दरराज पी., सीआरपीएफ के डीआईजी बी.एस. नेगी, बीजापुर के पुलिस अधीक्षक डॉ. जितेन्द्र कुमार यादव सहित, कई वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष 25 इनामी नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इन पर 1.47 करोड़ का इनाम घोषित था। इन नक्सलियों ने एलएमजी, एके-47, एसएलआर, इंसास सहित, कुल 93 घातक हथियारों के साथ आत्मसमर्पण किया है। पहली बार नक्सलियों के पास से 2.90 करोड़ रुपये नकद और लगभग 7.2 किलोग्राम सोना बरामद किया गया है। बरामद सोने की कीमत करीब 11.16 करोड़ रुपये आंकी गई है। इनके पास मिले हथियारों में 4 एके-47 और 9 एसएलआर राइफलें जैसे आधुनिक हथियार भी शामिल हैं।

- **इनके पास से 93 घातक हथियार, 7.2 किलो सोना, व 2.90 करोड़ रु. नकद बरामद हुए।**

ईरान के इस्फहान शहर पर अमेरिका ने भारी हमला किया

तेहरान/कुवैत सिटी/ बेरूत/ बगदाद, 31 मार्च। अमेरिका और इज़रायल ने ईरान के ऐतिहासिक शहर इस्फहान पर जबरदस्त हमला किया है। इस शहर की आबादी लगभग 23 लाख है। यहां बदर मिलिट्री एयरबेस भी मौजूद है। जोरदार धमाकों और आग की लपटों से आज सुबह तक आसमान में दहशत रोशन रही। हिजबुल्लाह ने भी इज़रायली सेना पर हमलों का दावा किया है।

अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, प्रत्यक्षदर्शियों ने इस्फहान में हमले के कई वीडियो तैयार किए हैं। इस्फहान ईरान का तीसरा सबसे बड़ा और सांस्कृतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण शहरों में से एक है। यह ईरान का प्रमुख औद्योगिक केंद्र है। यहां कपड़ा और इस्पात की मिलें हैं। यहां ईरान का महत्वपूर्ण परमाणु केंद्र (नतंज) और सैन्य मिसाइल बनाने के कारखाने भी हैं। इसके कारण यह अकसर चर्चा में रहता है। इस बीच हिजबुल्लाह ने दावा किया है कि उसके लड़ाकों ने उत्तरी इजराइल की मिसगाव अम बस्ती में एक सैन्य चौकी को निशाना बनाया और दक्षिणी लेबनान के अल-क़ंतारा और तैबेह कस्बों के बीच सड़क पर मौजूद एक इजराइली मर्कवा टैंक पर गाइडेड मिसाइल से हमला किया। हमले में टैंक जल गया।

- **यह शहर एतिहासिक पृष्टभूमि तथा औद्योगिक इकाइयों के कारण विख्यात है**

बीजू का अपमान "उडिया ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। राज्य के विधि मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि पार्टी सांसद द्वारा व्यक्त विचार "पूरी तरह उनके व्यक्तिगत विचार" हैं और सरकार के रुख को नहीं दर्शाते। उन्होंने कहा, "ऐसी टिप्पणियाँ बहुत ही अनुचित हैं और किसी भी परिस्थिति में अपेक्षित नहीं हैं। इनसे न केवल मुख्यमंत्री मांझी, बल्कि हम सभी को गहरी पीड़ा हुई है।"

इस मामले में राज्य भाजपा की रक्षात्मक स्थिति समझ में आती है, क्योंकि लोगों के मन में बीजू पटनायक के प्रति गहरा सम्मान है। बीजद नेता और पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, जो आमतौर पर संयमित भाषा के लिए जाने जाते हैं, ने असामान्य रूप से कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि एक स्वतंत्रता सेनानी और सम्मानित नेता के खिलाफ ऐसे "बेतुके और पूरी तरह झूठे" बयान देने वाले दुबे को मानसिक चिकित्सक से परामर्श लेने की जरुरत है।

भाजपा के भीतर भी प्रतिक्रियाएँ कम नहीं रहीं। पार्टी नेता और हाल ही में राज्यसभा के लिए निर्वाचित दिलीप रे ने 'एक्स' पर लिखा: "बीजू बाबू का जीवन साहस, त्याग, दूरदृष्टि और अडिग देशभक्ति का प्रमाण था। वे केवल ओडिशा के एक महान नेता ही नहीं थे, बल्कि उन दुर्लभ राष्ट्रिनर्माताओं में से एक थे, जिनके जीवन और कार्य ने भारत के राजनीतिक और रणनीतिक इतिहास पर अमिट छाप छोड़ी। उनके इस असाधारण योगदान को हल्की और सनसनीखेज राजनीतिक टिप्पणियों तक ले आना न केवल अनुचित है, बल्कि अत्यधिक असम्मानजनक भी है।"

बीजद ने सोमवार को राज्यसभा में वॉकआउट किया। एक दिन पहले, पार्टी के राज्यसभा सांसद सस्मित पात्रा ने सूचना प्रौद्योगिकी और संचार से सम्बंधित संसदीय स्थायी समिति की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया, जिसके अध्यक्ष दुबे हैं।

दुबे के ही पार्टी सहयोगी बैजयंत पांडा ने, बिना नाम लिए, कहा कि पटनायक की देशभक्ति पर सवाल उठाना "अकल्पनीय और पूरी तरह बेतुका एवं हास्यास्पद" है।

ओडिशा के जानकारों का कहना है कि दुबे की टिप्पणियाँ राज्य में "अंजैया क्षण" जैसी स्थिति पैदा कर सकती हैं। ज्ञातव्य है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री टी. एन. अंजैया का सार्वजनिक अपमान किया था। इसके बाद हुए विधानसभा चुनावों में, एन. टी. रामाराव की तेलुगु देशम पार्टी ने तेलुगु गौरव के मुद्दे पर भारी जीत हासिल की थी।

'केरल में हर साल दो गैस सिलेंडर मुफ्त देगी भाजपा'

तिरुवनंतपुरम, 31 मार्च। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने केरल विधानसभा चुनाव को लेकर अपना घोषणा पत्र मंगलवार को जारी कर दिया। "यही बदलाव है, यही विकसित केरल है" थीम पर आधारित इस घोषणापत्र में राज्य के समग्र विकास का रोडमैप पेश किया गया है, जिसमें बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स, सामाजिक कल्याण योजनाओं और प्रशासनिक सुधारों पर विशेष जोर दिया गया है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने तिरुवनंतपुरम स्थित श्री मूलम क्लब में आयोजित कार्यक्रम के दौरान यह घोषणा पत्र जारी किया। इस मौके पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर, टीवी-20 पार्टी के मुख्य समन्वयक साबू जैकब, बीडीजेएस के प्रदेश अध्यक्ष तुषार वेल्लापल्ली और तिरुवनंतपुरम के मेयर वीवी राजेश सहित, अन्य प्रमुख नेता उपस्थित रहे।

- **भाजपा ने केरल विधानसभा चुनाव घोषणा पत्र में वादा किया**

भाजपा ने घोषणापत्र में आम जनता, खासकर गरीब और मध्यम वर्ग को ध्यान में रखते हुए कई कल्याणकारी घोषणाएं प्रस्तुत की हैं। इनमें गरीब परिवारों को हर साल दो मुफ्त एलपीजी सिलेंडर, प्रत्येक घर को हर महीने 20,000 लीटर मुफ्त पेयजल, सामाजिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाकर 3,000 रुपये प्रति माह करना प्रमुख हैं। इन योजनाओं के जरिए पार्टी ने सीधे तौर पर आम मतदाताओं को साधने की कोशिश की है।

'अमेरिका व्यर्थ ही ऐसे ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निशाना वॉशिंगटन को बनाया है। उनका यह दावा, कि संयुक्त राज्य अमेरिका ऐसे युद्ध का समर्थन कर रहा है, "जिसे वह जीत नहीं सकता", अमेरिकी विदेश नीति की रणनीतिक सुसंगतता पर उनके गहरे संदेह को दर्शाता है। वे ईराक से लेकर अफगानिस्तान तक, एक पैटर्न देखते हैं, अत्यधिक विस्तार (ओवररीच) का, जहाँ विशाल संसाधन खर्च किए जाते हैं, लेकिन स्थायी राजनीतिक परिणाम नहीं मिलते। उनके अनुसार, पश्चिम एशिया में भी यही तर्क लागू हो रहा है: बिना विश्वसनीय अंतिम रणनीति के लगातार बढ़ता हुआ युद्ध।

उनकी टिप्पणियों का अधिक विवादास्पद, और राजनीतिक रूप से विस्फोटक हिस्सा उस कथित घटना से जुड़ा है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के बीच एक उच्चस्तरीय कूटनीतिक बातचीत में एलन मस्क की मौजूदगी का दावा किया गया। हालांकि भारत के विदेश मंत्रालय ने इसे आधिकारिक तौर पर खारिज किया है, पर सैक्स इस प्रकरण, चाहे वास्तविक हो या अनुमानित, का उपयोग अमेरिका में संवैधानिक व्यवस्था के पतन के बड़े मुद्दे को रेखांकित करने के लिए करते हैं।

यहाँ उनकी आलोचना विदेश नीति से हटकर राजनीतिक अर्थव्यवस्था की ओर मुड़ जाती है। सैक्स का तर्क है कि राज्य संचालन के मामलों में तकनीकी अरबपतियों का बढ़ता प्रभाव सार्वजनिक सत्ता और निजी शक्ति के बीच की रेखाओं को धुंधला कर रहा है। जब अपार आर्थिक ताकत रखने वाले, निर्वाचित न हुए व्यक्ति औपचारिक या अनौपचारिक रूप से कूटनीतिक प्रक्रियाओं में शामिल दिखाई देते हैं, तो यह जवाबदेही और लोकतांत्रिक वैधता के मूलभूत प्रश्न उठाता है। उनका कथन कि, "सरकार को खरीद लिया गया है" जानबूझकर बोला गया भड़काऊ कथन है, साथ ही यह एक व्यापक बहस को दर्शाता है कि केन्द्रित संपत्ति अब नीतिगत परिणामों को इस तरह प्रभावित कर रही है, जो संस्थागत नियंत्रण और संतुलन को दरकिनार कर देता है।

समग्र रूप से, सैक्स की टिप्पणियाँ एक ऐसी विश्वदृष्टि को दर्शाती हैं, जिसमें आज के संघर्ष अलग-थलग घटनाएँ नहीं, बल्कि गहरे संरचनात्मक संकटों के लक्षण हैं, शासन, वैश्विक व्यवस्था और आर्थिक असमानता के संकट। इस दृष्टिकोण में, पश्चिम एशिया का संघर्ष क्षेत्रीय या वैचारिक विवादों से अधिक तेजी से बदलती दुनिया को संभालने में बड़ी शक्तियों की विफलता को उजागर करता है।

भारत के पर्यवेक्षकों के लिए, सैक्स की टिप्पणियाँ दोहरे अर्थ रखती हैं। एक ओर, वे आपस में जुड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था में दूरस्थ संघर्षों में उलझने के जोखिम को रेखांकित करती हैं। दूसरी ओर, वे शक्ति के बदलते स्वरूप को उजागर करती हैं तो जहाँ राज्य, बाज़ार और तकनीकी अभिजात वर्ग तेजी से अप्रत्याशित तरीकों से एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं।

चाहे कोई उनके निष्कर्षों से सहमत हो या नहीं, लेकिन सैक्स एक असहज प्रश्न को सामने रख रहे हैं: ऐसी दुनिया में, जहाँ युद्धों के स्पष्ट विजेता नहीं होते और शासन स्वयं विवादित प्रतीत होता है कि आखिरकार सत्ता किसके हाथ में है?

नालंदा : शीतला ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एसपी भारत सोनी के अनुसार, अत्यधिक गर्मी और भारी भीड़ इस हादसे की मुख्य वजह रही। उन्होंने बताया कि ठंडे पानी में स्नान के बाद जब महिलाएं मंदिर परिसर में प्रवेश कर रही थीं, तभी दम घुटने और पानी की कमी के कारण कई महिलाएं बेहोश होकर गिरने लगीं। इससे अफरा-तफरी मच गई और भीड़ बेकाबू हो गई, जिसके चलते यह दुखद घटना घटी।

इस बीच केंद्र और राज्य सरकार ने पीड़ितों के परिवारों को अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पीएम राहत कोष (पीएमएनआरएफ)से मृतकों के परिवारों को 2 लाख और घायलों को 50 हजार रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है, जबकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मृतकों के आश्रितों को आपदा प्रबंधन विभाग से 04-04 लाख रुपये एवं मुख्यमंत्री राहत कोष से (सीएमडीआरएफ) 02-02 लाख रुपये (कुल 06 लाख रुपये) अनुग्रह अनुदान देने का निर्देश दिया है।

पूर्व टेनिस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हुए इसे ऐतिहासिक पल बताया। उन्होंने कहा कि अब अंतर्राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी भाजपा के मंच से देश की सेवा करेंगे। रिजिजू ने कहा कि देशभर में लिएंडर पेस का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री सुकांता मजूमदार ने टेनिस स्टार के भाजपा में शामिल होने पर खुशी जताई है। उन्होंने कहा कि लिएंडर पेस 19वीं सदी के प्रसिद्ध बंगाली कवि और नाटककार माइकल मधुसूदन दत्त के प्रत्यक्ष वंशज हैं।

पाँच साल के अंतराल के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वर्ष 2024 और 2025 में ब्रिक्स और एससीओ शिखर सम्मेलनों के इतर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हुई बैठकों के बाद संबंधों में सामान्यीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई थी।

शंघाई स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास के आउन्सलेट जनरल प्रतीक माथुर ने मंगलवार को प्रतिनिधिमंडल और पूर्वी चीन की प्रमुख कंपनियों तथा वित्तीय संस्थानों के बीच एक बिज़नेस राउंड टेबल बैठक की मेजबानी की, जिसका उद्देश्य भारतीय व्यवसायों के साथ सहयोग के अवसर तलाशना था।

प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए माथुर ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है और यहाँ विश्व की सबसे युवा आबादी में से एक है, जो अंतरराष्ट्रीय साझेदारी और निवेश के लिए अपार अवसर प्रदान करती है।

अपने संबोधन में माथुर ने भारत में उभरते क्षेत्रों, जैसे नई और नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी), कनेक्टिविटी और इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास, तथा सूचना प्रौद्योगिकी, में बढ़ती संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ये क्षेत्र वैश्विक कंपनियों के साथ सतत विकास हेतु सहयोग के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पीएचडीसीसीआई प्रतिनिधिमंडल की इस यात्रा का उद्देश्य विशेष रूप से शंघाई, जो चीन का वाणिज्यिक केन्द्र है, और तेजी से विकसित हो रहे झेजियांग तथा जियांग्सू प्रांतों में भारतीय व्यवसाय और उद्योग जगत के बीच मजबूत संबंध स्थापित करना है।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि औद्योगिक चर्चाओं के अलावा, इस यात्रा का ध्यान प्रौद्योगिकी साझेदारी को बढ़ावा देने और बिज़नेस-टू-बिज़नेस (बी2बी) बैठकों को प्रोत्साहित करने पर भी केन्द्रित है। इन पहलों का उद्देश्य भारत की घरेलू क्षमताओं और नवाचार को सुदृढ़ करना है, साथ ही 2047 तक विकसित भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य को आगे बढ़ाना भी है।

विज्ञप्ति के अनुसार, इस राउंड टेबल में चीनी पक्ष से भी उच्चस्तरीय भागीदारी देखने को मिली, जिसमें एचएसबीसी और वूशी टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन जैसी प्रमुख कंपनियाँ और वित्तीय संस्थान शामिल थे। उनकी भागीदारी में उभरते उद्योगों और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों के साथ सहयोग बढ़ाने की काफी रुचि दिखाई दी।

चर्चाओं के वैश्विक दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए यूरोपीय व्यापारिक समूहों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया और प्रस्तावित "इंडिया-यूरोपयन यूनियन फ्री ट्रेड एग्रीमेन्ट" से उत्पन्न हो रहे अवसरों पर अपने विचार साझा किए।

प्रतिभागियों ने लचीली और टिकाऊ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण के महत्व पर जोर दिया, जिसमें भारतीय व्यवसायों और निवेश की केन्द्रीय भूमिका हो सकती है।

प्रतिनिधिमंडल की यात्रा से संबंधित एक पुस्तिका के अनुसार, इसका उद्देश्य प्रौद्योगिकी साझेदारी की संभावनाओं की खोज करना, स्वच्छ ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ना, और चीन के आरई (नवीकरणीय ऊर्जा) तथा ईवी (इलेक्ट्रिक वाहन) क्षेत्रों में नवाचार का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना है।

प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया, प्रतिनिधिमंडल के उद्देश्यों में व्यापार, निवेश और साझेदारी के अवसरों की पहचान करना, बी2बी सहयोग को बढ़ावा देना, नवाचार और औद्योगिक पार्कों का दौरा करना, चीन की स्वच्छ गतिशीलता और बैटरी नवाचारों से सीखना, तथा नवीकरणीय ऊर्जा और आपूर्ति श्रृंखलाओं का अध्ययन करना शामिल है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा मैसर्स अरावली प्रिन्टर्स, राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर (राजस्थान) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 65015/96, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34 फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908